अध्याय — तीन

भूमि उपयोग का प्रतिहार :

(अ) सामान्य क्षेत्र के सन्दर्भ में :

क्षेत्र वर्गीकरण (वन, कृषि, गैरकृषि एवं अन्य)

1. वन क्षेत्र
2. अग्रण्त कृषि क्षेत्र (गैर कृषि क्षेत्र)
3. अन्य अकृषि क्षेत्र
4. कृषि योग्य फसल (बेसकार) भूमि
5. परती भूमि
6. गिराफसल क्षेत्र
7. दी-पसली क्षेत्र

(ब) अनुरूपित जाति एवं जनजाति क्षेत्र के सन्दर्भ में :

क्षेत्र वर्गीकरण (वन, कृषि, गैरकृषि एवं अन्य)

1. वन क्षेत्र
2. अग्रण्त कृषि क्षेत्र (गैरकृषि क्षेत्र)
3. अन्य अकृषि योग्य
4. कृषि योग्य फसल (बेसकार) भूमि
5. परती भूमि
6. गिराफसल क्षेत्र
7. दी-पसली क्षेत्र

(त) वहावरीकरण — ओधोगिक एवं आवासीय भूमि उपयोग वाले प्रज्ञातियाँ.
भूमि उपयोग का प्रतिलेख

भूमि प्रदेश का आविष्कार बहुत क्षेत्र निरंतर राजनीतिक निर्माण पूलक निलें के रूप में वर्ष 1973 में किया गया। इस क्षेत्र की 84 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामिण क्षेत्रों में निवास करती है। आविष्कार बहुत निरंतर राजनीतिक वर्ष 1973 के पूर्व तुरंत परिसर का प्रतिलेख, आयोग परिसर के क्षेत्र में उपयोगिता रहा। विशेषता आविष्कार क्षेत्र होने के कारण अपेक्षा प्रणाली नहीं कर सका। प्रणाली के अभाव में भूमि उपयोग का प्रतिलेख, राजनीतिक, फसल चक्र क्षेत्रों में देखने को मिलता है। आयोग पृथ्वी प्रतिलेख के आकार में परिसर की प्रजातियों नमूना नहीं है। यह बात इस तथ्य से सम्बन्ध है कि राजनीतिक रूप में स्वतंत्रता के पूर्ब 5 नागरिक क्षेत्र निर्मित हुए थे, जिनको राजनीतिक, विकास, कल्याण, खेती और खुदाईकार के नाम से जाना जाता है।

1. राजनीतिक के बाद प्रवास बार वर्ष 1991 की जनगणना में गण्रूढ़, एंडरसन, अन्य चारों को नगर घोषित किया गया।

2. इसमें यह रूप होता है कि शहरी विकास के क्षेत्र में यह निर्माण पछाड़ रहा है।

3. साथ ही यह क्षेत्र ग्रामीण बहुत होने के साथ-साथ एक फसली प्रतिलेख बार निलें रहा है।

4. विश्वसनीय विकास के परिसर के कारणों का संस्थापित होता है।

किसी भी क्षेत्र के विकास के रूप एवं अर्थकाल की रिश्तेदारी को निर्माण करने के लिए भूमि क्षेत्र की उपयोगिता एवं उनका विभिन्न उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

इसके सन्दर्भ में यह ध्यान रखना जरूरी है कि वर्तमान से कृषि उपयोग या गर्ह कृषि उपयोग की भूमि की क्षेत्र स्थिति है और भविष्य में बृहद होने की क्षण सम्मानित हैं, ताकि उनका और अपने महत्वपूर्ण रूप से उपयोग कर विकास को उत्तेजित कर सके।

1- गोपेन्द्र ओफ इंडिया, मॉडल दुर्गा ग्राम संस्थापन 1972, पृष्ठ 351 से 353.
2- उग्रा सांस्कृतिक पुस्तका, कार्यक्रम राजनीतिक ग्राम 1992, पृष्ठ 12.
3- संगठन एसएसडी - "लेखन ब्रूटलाइजेशन इन दिएमटूक्स ओफ ब्रिटेन", 1976, वित्ताल परिसर एक्सो भुवनेश्वर राज., इंदिरापुर, पृष्ठ 58.
सूचना नं. 3-4  
राजनांदगढ़ जिले के अन्तर्गत भूमि उपयोग की स्थिति  
वर्ष 1973-74 एवं 1992-93

![Graph showing land use distribution in Rajnandgaon district between 1973-74 and 1992-93.]

संकेत

Series 1 Series 2  
वर्ष 1973-74 वर्ष 1992-93

A = वन क्षेत्र  
B = अग्राता कृष्ण क्षेत्र  
C = अन्य अग्राता क्षेत्र  
D = परती भूमि क्षेत्र  
E = मिराकुल क्षेत्र  
F = दो खड़ी क्षेत्र
रखते हुए राजनंदगंगा निले में भूमि उपयोग प्रतिभुत्क्रम की सियात्का का महत्वपूर्ण किया गया है,
ताकि वर्तमान भूमि में उपयोग प्रौद्योगिकी के साथ-साथ भारी प्रौद्योगिकी की जानकारी प्राप्त की जा सके और भविष्य का मान के साथ-साथ भारी उपलब्धि भू-भाग मिलकर के साथ समानजन्स्थ कामयाब किया जा सके। यदि भारी परिवर्तनों को ध्यान में नहीं रखा जाये तो भविष्य में उत्पन्न गांव का समायोजन करना सम्भव नहीं होगा।

भूमि उपयोग प्रतिभुत्क्रम में हुए परिवर्तन की प्रौद्योगिकी

आपसी नहीं है कि अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग में विविधता पायी जाती है। यदां
प्रौद्योगिकी विभिन्नताओं जैसे वर्ष की मात्रा में प्रभाव, बिजली के प्रकार में प्रभाव तथा हिस्टोर्ज
ि के अलग-अलग साधन व तरीके, भूमि उपयोग पर गहरा प्रभाव डालते हैं। भूमि संशोधन उपयोग
की मात्रा और उसमें परिवर्तन का स्वरूप, वास्तव में विभिन्न तरीकों के आपसी विभिन्नताओं
के अन्तर्वेशन पर आधारित है। वापसी भूमि उपयोग की प्रक्रिया विभिन्नतामें प्रौद्योगिकी विभिन्नताओं
से सम्बन्धित है तथापि मानव और आर्थिक तत्त्व भी भूमि उपयोग एवं उसमें होने वाले परिवर्तन
सामाजिक, आर्थिक विभिन्नताओं का प्रतिफल है।

भूमि उपयोग परिवर्तन मुख्य रुप से जनसंख्या तथा तकनीकी परिवर्तनों के कारण
होता है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग की परिवर्तनशीलता निर्भर बहुती जनसंख्या का सीमित
कुछ भूमि पर, अतिक्रमण का फल है। इसके अतिरिक्त हिस्टोर्ज शुरुआतों का विकास,
टर्फार्ल क्षेत्र में वृद्धि, रासायनिक व्यापार व उद्योगों के बढ़ते प्रयोग, कुछ के उन्नत तरीके
वातावरण परराष्ट्रीयीकरण के फलस्वरूप नागरिकता की फैल प्रक्रिया आदि ऐसे कई तत्त्व हैं जो भूमि
उपयोग की फैलावशीलता के लिए विरोधपीड़ी है।

राजनंदगंगा जिले के सम्पूर्ण क्षेत्र के अन्तर्गत उपलब्ध कुल भू-भाग के उपयोग का
प्रतिभुत्क्रम एवं परिवर्तन का प्रयोग का अनुभव का अनुभव कार्यक्रम का
भूमि उपयोग परिवर्तन की व्यापकता अग्रिमित है।

निचले राजनंदगंगा का विशेष क्षेत्र (भारतीय सर्वोच्च के अनुसार) 109.70
हजार हेक्टर है 1 जो क्षेत्रप्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्र 44343 हजार हेक्टर का

1- अधिकार, भू-अभिलेख राजनंदगंगा, निला सांख्यिक पुस्तक 1973 से 1993 तक.
2.50 प्रतिवर्ष हैं।\textsuperscript{2} जिले में कृषि योग्य भूमि अर्थात (मिटा पशुक्लेष भर फसलों का योग) 565.76 हजार हेक्टर हैं।\textsuperscript{3} जो कुल भूमि का लगभग 51 प्रतिशत भाग है। इस प्रकार स्पष्ट है कि कुल क्षेत्र का लगभग 45% भाग कृषि योग्य भूमि का तथा शेष 49 प्रतिशत भाग वन एवं गर्भ कृषि क्षेत्र में है। निस्में 55 प्रतिशत वन जैसे 14 प्रतिशत गर्भ कृषि भूमि क्षेत्र है। इस प्रकार राजनीतिक निकला एक छोटी प्रणाली निकल है।

वन क्षेत्र में भूमि उपयोग

ग्रामीण अपने प्राचीन काल से ही अपने भोजन, कृषि तथा मकान के लिए वृक्षों पर निर्भर रहा है। आज भी ग्रामीण ईंट, चावा, इमारती लकड़ी, जड़ी-मूंगी, फल-फूल तथा अवधारण उपयोग करते काफ़ग तथा, वास्तव, रस्ता, कपड़ा, बेड़ी आदि के लिए कफ़चे वस्त्र हेतु वृक्षों पर निर्भर है।

आज देश के सीमित वन संसाधनों पर मजबूर और पशुओं की भूमि अनसंगत तथा ग्रामीणों की मिलती पूरी हेतु जलाल लकड़ी, माता बस्ती, इमारती लकड़ी एवं बाल तथा अन्य वनोपज भूमि हुई मांग के कारण अधिकार वन क्षेत्रों में वनों का प्रगति बहुत कम होता जा रहा है तथा जो बने हुए हैं वह भी विगड़े हुए वनों के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं जिसके कारण तेजस्वी वर्षों अनवश्यक और असहंसक तबाही, तूफान, अफाल, बंजर भूमि, शूभ-शरण, वायु प्रूफ़ नाथ धर्म प्रूफ़ जैसे अनेक पर्यावरण समस्याओं को सामना करना पड़ रहा है तथा देशक जीवन की आदर्शताओं के लिए योग्यता प्राप्त होना कठिन हो गया है।

भारत में वनों की रिश्त

स्थान पर्यावरण एवं संसाधित परिस्थिति के लिए समतल भू-भाग का एक तिहाई भाग वन आवश्यकता होता चाहिए जिसमें पहाड़ी शेखरों में 60 प्रतिशत एवं नमोदी भागों में 20 प्रतिशत भूमि में वन होना चाहिए।

---

1- आपन, भू-अभिलेख एवं बननसंत मो90 ध्वालियर, मो90 शामिल: संक्षेप आयुक्त एवं राजस्वपरिवार संचालनालय मो90, पृष्ठ 44.
2- अश्वक, भू-अभिलेख, कार्यकाल जिला राजस्वपरिवार पुस्तक, राजस्वाधीनता वर्ष 1992-93
यद्यपि भारत में वनस्पति में कुल 19 प्रतिशत क्षेत्र पर ही वन है निःसे शिलाकण्ठ चट्टानों सिमानियों निदंस्यों भी शामिल हैं। तथापि इसमें से 11 प्रतिशत क्षेत्र ऐसा है जहाँ अर्घे स्वस्थ एवं उत्तादिक वन है। शेष 8 प्रतिशत क्षेत्र में जो वन जीवनभर है वह विगाय गये हैं। हमारे देश में प्रति वर्ष 50-54 हज़ार हेक्टर क्षेत्र के चलते जा रहे हैं। यही कारण है कि वर्ष 1900 में हमारे देश में वन क्षेत्र का प्रतिशत लगभग 40 प्रतिशत था जो घटकर 19 प्रतिशत रह गया।

मगधप्रदेश में वनों की रिपोर्ट

मगधप्रदेश राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्र 4.42 लाख वर्ग किमी है। इसमें 1.55 लाख वर्ग किमी क्षेत्र वनों से आबद्ध है। जिसमें से 83.242 वर्ग किमी पर्वतीय क्षेत्र में लगभग 72,172 वर्ग किमी वैदेशिक क्षेत्र में वन है। इस प्रकार राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 35 प्रतिशत वन क्षेत्र है। अतः मगधप्रदेश सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला राज्य है। भारत के कुल वन क्षेत्र का 26 प्रतिशत भाग मगधप्रदेश में होता है।

वनों का वर्गीकरण

1. कुल भौगोलिक क्षेत्रफल - 4,42,841 वर्ग किमी
2. वनों का क्षेत्रफल - 1,55,414 वर्ग किमी
3. वैधानिक रिपोर्ट के अनुसार --
   
   (i) आर्थिक वन - 80,995.99 वर्ग किमी (52.13%)
   (ii) संरक्षित वन - 69,082.53 वर्ग किमी (44.44%)
   (iii) अवर्गीकृत वन - 5,335.86 वर्ग किमी (3.43%)

मगधप्रदेश में जो भी वन है उनका वितरण सभी क्षेत्रों में समान नहीं है। मगधप्रदेश के 9 जिले ऐसे हैं जहाँ 15 प्रतिशत तक ही वन है। इसी प्रकार 16 जिले ऐसे हैं जहाँ पर 15 से 22 प्रतिशत वन क्षेत्र है। शेष 20 जिले ऐसे हैं जहाँ भारतीय वन नीति के अनुसार 33 प्रतिशत से अधिक वन है। जिसमें रामरामगंगा जिला भी शामिल है।

1- मूली, बैंगलोर - "शृधारुपण मोटर मार्ग में सामाजिक वाहनों का अर्थ", पर्यावरण भवन में जन संशोधन, सामाजिक वाहनों मार्ग, राजपुर.

2-
राजनांदगंगा जिले में वन भूमि का उपयोग

राजनांदगंगा जिला 1973 में दुर्ग जिले से विभाग होकर नये जिले के रूप में निर्मित हुआ। राजनांदगंगा जिला चार तहसील वाला UDS समान्य वन मण्डल एवं कर्मचारी वन मण्डल शामिल था। राजनांदगंगा सामान्य वन मण्डल के अन्तर्गत मोहल, चौकी एवं मानपुर ऐसे परिक्षेत्र एवं आयोजित विकास क्रांति के अन्तर्गत आते थे व जहां वनों की अधिकता थी। राजनांदगंगा सामान्य वन मण्डल का लगभग 43.87 प्रतिशत वन क्षेत्र इस अधिवासी क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मानित था। यहां की वर्षा, जलवायु, पर्यावरण एवं भौगोलिक परिस्थितियां वनों के अनुकूल थी निर्देश कारण भारत शासन की योजनापुस्तक 1977 में मोहल क्षेत्र के पानामस्तात्र ग्राम (जहां वनों की अधिकता थी) को लेकर एक प्रोजेक्ट नामांकन गया जिसे "पानामस्तात्र प्रोजेक्ट" नाम दिया गया।

1- पानामस्तात्र प्रोजेक्ट नामांकन के अन्तर्गत चौकी एवं मोहल के अन्य वन क्षेत्रों को भी शामिल किया गया। इस प्रोजेक्ट के अनुसार इस क्षेत्र के वनों का विकास एवं संरक्षण करना था। यहां मुख्य रूप से सामूण एवं बाँस के जंगल पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य इमारती लकड़ीया का भी वृक्षारोपण किया गया है।

इस प्रकार वर्तमान में राजनांदगंगा जिले के अन्तर्गत तीन सामान्य वन मण्डल हैं:

(1) राजनांदगंगा सामान्य वन मण्डल:

(2) कर्मचारी वन मण्डल:

(3) पानामस्तात्र परियोजना मण्डल:

1- पानामस्तात्र परियोजना वार्षिक प्रतिवेदन, पानामस्तात्र प्रोजेक्ट, 1977, पृष्ठ 10.
2- सामान्य वन मण्डल राजनांदगंगा - वार्षिक प्रतिवेदन 1991, पृष्ठ 7.
3- सामान्य वन मण्डल कर्मचारी - वार्षिक प्रतिवेदन 1993, पृष्ठ 8.
4- पानामस्तात्र परियोजना मण्डल - पानामस्तात्र प्रोजेक्ट रिपोर्ट 1992, पृष्ठ 9.
राजनांदगंध जिले की निम्न सारणी के अन्तर्गत उपरोक्त तीनों वन मण्डलों के वन क्षेत्र को समृद्धित कर राजनांदगंध जिले के वन भूमि को दर्शाया गया है।

### सारणी क्रमांक आ-3.1

जिला राजनांदगंध में, वन क्षेत्र व उसकी प्रवृंदि

वर्ष 1973-74 से वर्ष 1982-83 की अवधि में (क्षेत्र हजार हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>साल</th>
<th>वन क्षेत्र (हेक्टर)</th>
<th>प्रवृंदि</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1973-74</td>
<td>397.00</td>
<td>388.82</td>
</tr>
<tr>
<td>1974-75</td>
<td>397.00</td>
<td>392.64</td>
</tr>
<tr>
<td>1975-76</td>
<td>397.00</td>
<td>396.45</td>
</tr>
<tr>
<td>1976-77</td>
<td>397.00</td>
<td>400.27</td>
</tr>
<tr>
<td>1977-78</td>
<td>397.00</td>
<td>404.09</td>
</tr>
<tr>
<td>1978-79</td>
<td>397.00</td>
<td>407.90</td>
</tr>
<tr>
<td>1979-80</td>
<td>397.00</td>
<td>411.73</td>
</tr>
<tr>
<td>1980-81</td>
<td>427.00</td>
<td>415.54</td>
</tr>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>427.00</td>
<td>419.36</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>427.00</td>
<td>423.18</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वेच्छा समीकरण \( y = a + bx \)

राजनांदगंध जिले में वन क्षेत्र एवं उसकी प्रवृंदि को रिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दस्तक में वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है। वर्ष 1973 में नव राजनांदगंध जिले बना था, उस समय वन क्षेत्र 397 हजार हेक्टर अतः 35.77 प्रतिशत था जो वर्ष 1982-83 में 423.18 हजार हेक्टर
ग्राफ़ नं- 31: रणवर्तमान निष्के में कमशेत एवं उसकी प्रमुखता

वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक
अर्थात् 38.5 प्रतिशत हो गया अर्थात् वर्ष 1973 से 1982 तक वन क्षेत्र में प्रतिशत वृद्धि दर के अनुसार 7.56 प्रतिशत की वृद्धि हुई: इस वृद्धि का मुख्य कारण वर्ष 1980 एवं 1983 में छन्ना-दारूच समान्य वन गण्डल का पुनर्निर्माण था जिसके प्रभाव से उस समय वन गण्डल का कुछ वन क्षेत्र छन्ना-दारूच वन गण्डल में समाविष्ट किया गया था।

खरणी क्रमांक अ-3.2

राजनादगंगा पिंडे में वन क्षेत्र एवं उसकी प्रजनिता वर्ष 1983-84 से 1992-93 की अवधि में (क्षेत्र हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रंि</th>
<th>वर्ष</th>
<th>वन क्षेत्र</th>
<th>प्रौरयि</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>1983-84</td>
<td>428.70</td>
<td>429.611</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>1984-85</td>
<td>428.70</td>
<td>429.253</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>1985-86</td>
<td>428.70</td>
<td>428.895</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>1986-87</td>
<td>428.70</td>
<td>428.537</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>1987-88</td>
<td>428.70</td>
<td>428.279</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>1988-89</td>
<td>428.70</td>
<td>427.821</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>1989-90</td>
<td>428.70</td>
<td>427.463</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>1990-91</td>
<td>428.70</td>
<td>427.105</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>1991-92</td>
<td>425.00</td>
<td>426.747</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>1992-93</td>
<td>425.00</td>
<td>426.389</td>
</tr>
</tbody>
</table>

लोौल् - सामान्य वन गण्डल राजनादगंगा, कृत्व एवं पाचवर्ष सहायक समान्य गण्डल के प्रतिवेदनों पर आधारित।

प्रजनिता समीकरण: \( Y = a + b \times X \)

1- राजनादगंगा सामान्य वन गण्डल, विभागाधिकारी प्रतिवेदन, पृष्ठ 3.
सारणी क्रमांक ब-3.2 में 1983-84 से 1992-93 तक के वन क्षेत्र एवं उनकी प्रौद्योगिकी मूल्य को दिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि इस दशक में वन क्षेत्र में कमी हुई है। दस्तक के प्रारंभिक वर्षों में वन क्षेत्र में कुल परिसंचालन स्पष्ट नहीं होता किन्तु दस्तक के अन्तिम वर्षों में वन क्षेत्र में अवगत दर्द्विध स्पष्ट होती है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1983-84 में वन क्षेत्र 38.63 प्रतिशत था जो 1992-93 में पटाक 38.3 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार इस दशक में 0.86 प्रतिशत वन क्षेत्र कम हो गया।

इस अवगत दर्द्विध का मूल कारण वर्ष 1976 के पूर्व के अतिक्रामक को स्वाधीन पट्टा दिया जाना है। वर्ष 1976 के पूर्व में भिन्न अतिक्रामकों ने वन भूमि पर कम्या कर लिया था उन्होंने पहले अभावी रूप से पट्टा दे दिया गया था। जिसके कारण उस वन भूमि का उपयोग किसी भी रूप में कर सकते थे किन्तु वर्ष 1991 में इन्हें शासन की योजनाओं के स्वाधी व अवगत रूप से पट्टा दे दिया गया। जितनी भूमि का स्वाधी पट्टा 1991 में दिया गया, वन क्षेत्र में उन्हीं वन भूमि कम हो गयी।

वर्ष 1993 तक की लिस्ट में इतनी वन गंधल के 655 क्षेत्रों को 902.937 हेक्टर भूमि एवं रामान्विक वन गंधल के 1153 क्षेत्रों को 1383.671 हेक्टर भूमि स्वाधी पट्टे के रूप में मित्रित की गयी।

इसके अतिरिक्त वन क्षेत्र में अन्य कोई पारस्परिक स्पष्ट नहीं होते हैं। वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अनुसार "हमारे यहां वनों में कमी होती है वन क्षेत्रों में नहीं।" किन्तु यह सच है कि जंगलों की वृक्ष एवं अन्य फूल के कारण वन घनत्व कम हुआ है। जिसके कारण परत भूमि का प्रभाव बढ़ा जा रहा है एवं अतिक्रामकों का कम्या भी बढ़ रहा है। परत भूमि पर पुनः वृक्षारोपण, सामाजिक वातावरणीय कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रस्तावित किया जा रहा है। जिस भूमि पर अतिक्रामक का कम्या है उस भूमि का अन्य उपयोग किया जा रहा है। किसानों को वृक्ष के लिये स्वाधी पट्टा वितरित किया गया।

राजनावधान सामान्य वन गंधल में वर्ष 1980 के पर्चावत 1996 तक हुए अतिक्रामक के कम्यों में जो राज्य है उस पर स्वाधी पट्टा दिया जाना जिस का विचारण है। जिसे सारणी क्रमांक ब-3.3 में दिखाया गया है।

1- राजनावधान, सामान्य वन गंधल, वित्तारण भूमि प्रतिष्ठित, पृष्ठ 3
2- सामान्य वन गंधल कार्यो, वार्षिक प्रतिष्ठित 1993, पृष्ठ 8.
सारणी क्रमांक अ-3.3
विनंक 24.10.80 के परिणाम हुए अतिक्रमण की जानकारी (दिसम्बर 96 तक)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र0</th>
<th>परिखेत्र</th>
<th>रक्षण (हेक्टर में)</th>
<th>खाली कराया गया रक्षण (हेक्टर में)</th>
<th>वर्तमान में काफिल रक्षण (हेक्टर में)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>राजनादगंव</td>
<td>19.691</td>
<td>5.600</td>
<td>14.091</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>गांगनाथ</td>
<td>0.262</td>
<td>0.262</td>
<td>निरंक</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>ग्रामपंचायत</td>
<td>-</td>
<td>5</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>चौकी</td>
<td>176.300</td>
<td>97.400</td>
<td>78.900</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>डौंगरगंज</td>
<td>161.471</td>
<td>18.500</td>
<td>142.971</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>गोडला</td>
<td>28.722</td>
<td>17.410</td>
<td>11.312</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>गणपति</td>
<td>182.100</td>
<td>3.225</td>
<td>178.875</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>मानपुर</td>
<td>1802.729</td>
<td>29.120</td>
<td>1775.609</td>
</tr>
<tr>
<td>योग :</td>
<td>2373.275</td>
<td>171.512</td>
<td>2201.758</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वीकार - सामान्य वन मण्डल, राजनादगंव।

सारणी क्रमांक अ-3.3 में 24.10.80 के परिणाम हुए अतिक्रमण की जानकारी दिसम्बर 96 तक दर्शाई गयी है। सारणी में राजनादगंव वन मण्डल के परिखेत्र में खाली कराया गया रक्षण एवं वर्तमान में काफिल रक्षण हेक्टर में दर्शाई गया है। सारणी से स्पष्ट है कि राजनादगंव वन मण्डल में 2373.275 हेक्टर भूमि पर अतिक्रमण के द्वारा कम्पन किया गया जिसमें से 171.512 हेक्टर भूमि खाली करा लिया गया है और शेष 2201.758 हेक्टर भूमि अभी भी अतिक्रमण के कब्जे में है। यह भूमि भी स्वागती पद्धति के रूप में दिये जाने के लिये शासन के विचारधीन है।

इस प्रकार अतिक्रमण के कब्जे के कारण वन क्षेत्र धीरे-धीरे कम हो रहा है। अत: यह शेष है कि यहाँ ही वन विभाग के अनुसरण के अंतर्गत वन कम न हुए हो मिन्टु वहीं की
कटाई के कारण बन घनत्व अर्थात् जंगल लम्ब कम होते जा रहे हैं और बन विविध वन क्षेत्र का अन्य कारण के लिए उपयोग किया जाने लगा है।

सारणी क्रमांक अ-3.4

परिद्रालकार बनों की रिखति
राजनांदगंगा समान्त बन संख्या के अन्तर्गत (हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>परिक्षेत्र</th>
<th>आर्किट बन</th>
<th>संख्यक बन</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>गण्डाई</td>
<td>निरंक</td>
<td>59432.23</td>
<td>59432.23</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>ढोंगरगढ़</td>
<td>23773.410</td>
<td>5805.58</td>
<td>29578.99</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>खैयागढ़</td>
<td>25718.86</td>
<td>5426.81</td>
<td>31145.67</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>राजनांदगंगा</td>
<td>6650.35</td>
<td>2468.54</td>
<td>9118.89</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>बागनदी</td>
<td>14222.19</td>
<td>6641.94</td>
<td>20864.13</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>अम्बरगढ़ चोपी</td>
<td>3117.68</td>
<td>22513.64</td>
<td>25631.32</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>मोहला</td>
<td>528.51</td>
<td>3220.75</td>
<td>3749.26</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>मानपुर</td>
<td>निरंक</td>
<td>50558.35</td>
<td>50558.35</td>
</tr>
</tbody>
</table>

योग :- 74011.00 156067.84 230078.84

स्वयं - समान्त बन मण्डल राजनांदगंगा के प्रतिवेदन पर अध्यादेश।
इसमे दुर्ग बन मण्डल से प्रतिबन वन क्षेत्र शामिल नहीं है।

सारणी क्रमांक अ-3.4 से स्पष्ट है कि राजनांदगंगा बन मण्डल के अन्तर्गत सवीपिक बन व्यक्ति 59432.23 हेक्टर गण्डाई परिक्षेत्र में एवं इसके बाद मानपुर परिक्षेत्र में 50558.35 हेक्टर वन क्षेत्र है तथा समस्त कम वन क्षेत्र वाला परिक्षेत्र राजनांदगंगा है जिसके 9118.89 हेक्टर पर ही वन है।
### सारणी क्रमांक अ-3.5

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र/</th>
<th>परिक्षेत्र</th>
<th>आर्थिक वन</th>
<th>संरक्षित वन</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>कक्षांग</td>
<td>32613.59</td>
<td>3485.60</td>
<td>36099.19</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>तर्कांग</td>
<td>20615.33</td>
<td>12902.62</td>
<td>33517.95</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>चहसपुर लोहार</td>
<td>4616.41</td>
<td>30956.47</td>
<td>35572.88</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>रंगाखार</td>
<td>12699.88</td>
<td>12340.49</td>
<td>25040.37</td>
</tr>
<tr>
<td>योग:</td>
<td></td>
<td>70545.21</td>
<td>59685.18</td>
<td>130230.39</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थीत - कक्षांग वन मण्डल के प्रतिबैंधन पर अभावित।

सारणी अ-3.5 से योग्य है कि कक्षांग वन मण्डल के अन्तर्गत सर्वाधिक वन क्षेत्र 36099.19 हेक्टर कक्षांग परिक्षेत्र के अन्तर्गत है जिसमें से 32613.59 हेक्टर आर्थिक वन एवं 3485.60 हेक्टर संरक्षित वन है तथा समस्त वन वन क्षेत्र 25040.37 हेक्टर रंगाखार परिक्षेत्र मे है।

### सारणी क्रमांक अ-3.6

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र/</th>
<th>परिक्षेत्र</th>
<th>आर्थिक वन</th>
<th>संरक्षित वन</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>खड़गांव</td>
<td>निरंक</td>
<td>5088.37</td>
<td>5088.37</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>देवबाड़ी</td>
<td>3076.90</td>
<td>5291.83</td>
<td>8368.73</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>बोरेखा</td>
<td>1229.12</td>
<td>4924.21</td>
<td>6158.33</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>मिससपिरी</td>
<td>8308.51</td>
<td>निरंक</td>
<td>8308.51</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>भोजपोला</td>
<td>5464.92</td>
<td>1737.61</td>
<td>7203.53</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>मोहला</td>
<td>2816.87</td>
<td>3465.14</td>
<td>6282.01</td>
</tr>
<tr>
<td>योग:</td>
<td></td>
<td>20897.32</td>
<td>20506.16</td>
<td>41403.48</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थीत - पानावरस परियोजना मण्डल, राजनाथगांव के भाष्क विभाग पर अभावित।
राष्ट्रीय क्रमांक अ-3.6 में पानाबरस परियोजना वन भण्डार के अन्तर्गत परियोजनावार्त आयात व संरक्षण की कीमत को दिया गया है। इस परियोजना भण्डार के अन्तर्गत वर्तमान में 41403.48 हेक्टर वन क्षेत्र है। जबकि वर्ष 1977 में जब पानाबरस परियोजना भण्डार का निर्माण किया गया था तब इस भण्डार के पास 37900.13 हेक्टर वन क्षेत्र था। अतः कह सकते हैं कि 1977 से वर्तमान रिचर्ड (1996) तक इस वन क्षेत्र में 9.24 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इन बुद्धि का गुणवत्ता कारण चौथी परियोजना से नये कम्प्यूटर का सहीमात्र क्षेत्र है।

राष्ट्रीय क्रमांक निलेश में ग्रामीण वन

ग्रामीण वनों से तात्पर्य उन वन या जंगलों से है जिनके अन्तर्गत राजस्थान क्षेत्र के वहें झाड़ के जंगल एवं छोटी-छोटी झाड़ीयों के द्वारा बनाये एवं संरक्षण को शामिल किया जाता है। जिनका संरक्षण पट्टारी से सार्ज किया जाता है तथा जो वन विभाग के अधिकार व संरक्षण के अन्तर्गत शामिल होते हैं। ये राजस्थान क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। अतः इसके विकास एवं संरक्षण का कार्य वन विभाग द्वारा अपने काम करता है। अतः यही कारण है किस वनों या वन क्षेत्रों को और कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। वर्तमान में जिले में ग्रामीण वनों का प्रतिशत 10.06 है। राष्ट्रीय क्रमांक निलेश में मिलने दो दशकों में ग्रामीण वनों की हेमान्ती की सारणी क्रमांक अ-3.7 में दिखाया गया है।

सारणी क्रमांक अ-3.7 में दो दशकों में (वर्ष 1973-74 से 1982-83 एवं वर्ष 1983-84 से 1992-93) मिले ग्रामीण वन एवं उत्कृष्ट पन्ना को दिया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 में ग्रामीण वन का प्रतिशत 8.61 था जो वर्ष 1982-83 में बढ़कर 10.14 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में 17.85 प्रतिशत की वृद्धि ग्रामीण वन में हुई। दूसरी ओर वर्ष 1982-83 से 1992-93 तक के दशक में ग्रामीण वन क्षेत्र में कमी की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। सारणी अ-3.7 से स्पष्ट है कि वर्ष 1983-84 में ग्रामीण वन का प्रतिशत 10.14 था जो 1992-93 में पट्टक 10.06 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार इस दशक में मिले के अन्तर्गत ग्रामीण वन क्षेत्र में मात्र 0.70 प्रतिशत की कमी हुई। ग्रामीण वन क्षेत्र में भी वन विभाग के अधिकार एवं संरक्षण क्षेत्र की तरह ही कोई विशेष परिवर्तन दिखाया नहीं देता पिछले नहीं में जंगलों की कटाई के कारण वन पन्ना में वर्तमान जंगलों नहीं होंगे।


सारणी क्रमांक श-3.7

राजनयांश के निये में ग्रामीण बन क्षेत्र एवं उसकी प्रवृति


<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र0</th>
<th>वर्ष</th>
<th>ग्रामीण बन</th>
<th>प्रवृति</th>
<th>वर्ष</th>
<th>ग्रामीण बन</th>
<th>प्रवृति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>1973-74</td>
<td>95.525</td>
<td>89.003</td>
<td>1983-84</td>
<td>112.537</td>
<td>111.170</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>1974-75</td>
<td>94.340</td>
<td>91.669</td>
<td>1984-85</td>
<td>112.336</td>
<td>110.910</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>1975-76</td>
<td>93.180</td>
<td>94.335</td>
<td>1985-86</td>
<td>112.298</td>
<td>110.650</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>1976-77</td>
<td>90.890</td>
<td>97.001</td>
<td>1986-87</td>
<td>111.883</td>
<td>110.390</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>1977-78</td>
<td>93.370</td>
<td>99.667</td>
<td>1987-88</td>
<td>108.913</td>
<td>110.130</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>1979-80</td>
<td>104.955</td>
<td>104.999</td>
<td>1989-90</td>
<td>104.598</td>
<td>109.610</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>1982-83</td>
<td>112.581</td>
<td>112.997</td>
<td>1992-93</td>
<td>111.740</td>
<td>108.830</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वरूप – अधीशक, भू-अभिमेलक राजनयांश।

प्रवृति का समीकरण: 
\[ Y = a+bx \]

प्रयत्न दशक वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक बन क्षेत्र में वृद्धि का कारण,
शहरीकरण की कम प्रवृति, वनों का होना और व्यवसायिक निर्मताओं के निर्माण एवं वृक्षारोपण है। किन्तु दूसरा दशक वर्ष 1982-83 से 1992-93 तक में वनों की कमी का मुख्य कारण, शहरीकरण की प्रवृति में वृद्धि, वनों का होना तथा जंगलों की कटाई है।
अग्रांत कृषि क्षेत्र

राजनांदगंज गिले में वन क्षेत्र के अतिरिक्त कहते हैं ऐसी भूमि है जो खेती के लिए उपलब्ध नहीं हो सकती। इसमें एक तो वह भूमि आती है जो गैर कृषि उपयोगों में लगी हुई है। इसी सबके, इमारतें, रेलवे आदि अथवा यह वह भूमि जो नदी-नाले या तहरों के नीचे है। जिले में ऐसी भूमि का क्षेत्र, अग्रांत कृषि क्षेत्र का लगभग 70 प्रतिशत है। अर्थात् 57330 हेक्टर है तथा दूसरी ओर वह भूमि है जो कंग्र फड़ी है या जिस पर खेती नहीं की जा सकती। जैसे रेगिस्तान, टीले, ऊंचे पहाड़ आदि। जिले में इस प्रकार की कंग्र भूमि का प्रतिशत कुल अग्रांत कृषि भूमि से लगभग 30 प्रतिशत है अर्थात् 24235 हेक्टर क्षेत्र है। इस तरह राजनांदगंज जिले के अन्तर्गत 81.59 हज़ार हेक्टर क्षेत्र कृषि के लिए अग्रांत भूमि का है।

मध्यप्रदेश में अग्रांत कृषि भूमि का प्रतिशत, कुल भौगोलिक क्षेत्र से 9.97 प्रतिशत है। जबकि भारत में वर्ष 1988-89 में अग्रांत कृषि भूमि का प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र से 13.53 प्रतिशत रहा है। राजनांदगंज जिले में वर्ष 1982-83 में ऐसी भूमि का प्रतिशत कुल भूमि से 6.97 रहा है जो बढ़कर वर्ष 1992-93 में 7.38 प्रतिशत हो गया है। फिर भी मध्यप्रदेश एवं भारत की तुलना में राजनांदगंज जिले में अग्रांत कृषि भूमि का प्रतिशत कम है।

राजनांदगंज जिले में कृषि के लिए अग्रांत भूमि के वर्गीकरण को दो उप-विभागों में रखा गया है:—

(अ) कृषि को छोड़कर अन्य उपयोग में लायी गयी भूमि अर्थात गैर कृषि क्षेत्र।

(ब) कंग्र एवं गैर मुख्य कृषि भूमि अर्थात संयंत्र कंग्र।

उपयोग के दोनों वर्गीकरण के प्रयुक्त व पश्चात्तल का अध्ययन समस्तित रूप से किया गया है।

1- जिला साहित्यकी पुस्तिका, साहित्यकी कार्यालय राजनांदगंज वर्ष 1993, पृष्ठ 17।
2- अध्यापक, भू-आभिलेख।
3- एप्रिक्लेट, पुस्तिका 1992, पृष्ठ 44-45।

### सारणी क्रमांक अ–3.8

राजनांदगंज निलेम में अग्रण कृषि भूमि-उनकी प्रगतियाँ


(हजार हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>वर्ष</th>
<th>अग्रण कृषि भूमि</th>
<th>प्रगति मूल्य</th>
<th>वर्ष</th>
<th>अग्रण कृषि भूमि</th>
<th>प्रगति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>1973–74</td>
<td>68.690</td>
<td>68.177</td>
<td>1983–84</td>
<td>78.820</td>
<td>78.939</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>1974–75</td>
<td>68.670</td>
<td>69.471</td>
<td>1984–85</td>
<td>78.990</td>
<td>79.175</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>1975–76</td>
<td>69.050</td>
<td>70.765</td>
<td>1985–86</td>
<td>79.520</td>
<td>79.411</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>1976–77</td>
<td>68.510</td>
<td>72.059</td>
<td>1986–87</td>
<td>79.970</td>
<td>79.646</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>1978–79</td>
<td>83.200</td>
<td>74.647</td>
<td>1988–89</td>
<td>79.900</td>
<td>80.118</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>1979–80</td>
<td>78.320</td>
<td>75.941</td>
<td>1989–90</td>
<td>79.920</td>
<td>80.354</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>1980–81</td>
<td>76.350</td>
<td>77.235</td>
<td>1990–91</td>
<td>80.160</td>
<td>80.590</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>1981–82</td>
<td>77.060</td>
<td>78.529</td>
<td>1991–92</td>
<td>80.190</td>
<td>80.825</td>
</tr>
<tr>
<td>10</td>
<td>1982–83</td>
<td>77.360</td>
<td>79.823</td>
<td>1992–93</td>
<td>81.870</td>
<td>81.001</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थल - अधीक्षक, भू-अभिलेख, राजनांदगंज।

प्रगतिमान समीकरण:  \( y = a + bx \)

सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1973–74 से 1982–83 तक एवं वर्ष 1983–84 से 1992–93 तक के दोनों दर्शकों में अग्रण कृषि भूमि की प्रगति बढ़ी हुई है। अर्थात निलेम में ऐसी भूमि की गंग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।
इसकी वृद्धि का मुख्य कारण नगरीकरण, औद्योगिकीकरण एवं शैक्षिक विकास है। उद्योग एवं यातायात के साथों का विकास, भूमि के बढ़ते मूल्य, अभूतिम वाणिज्य में वृद्धि के फलस्वरूप ही इस प्रकार की भूमि में वृद्धि हुई है। इस प्रकार की भूमि में वृद्धि आर्थिक प्रगति को उपलब्ध कराती है। जिले में क्रांति के स्तरों अर्थात भूमि में परिवर्तन पूर्णतः सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों से सम्बद्ध है।

राजनांदगंगा जिले में वर्ष 1973 से 1993 तक अर्थात कृषि क्षेत्र में जो वृद्धि हुई है वह 19.19 प्रतिशत है। इस वृद्धि का मुख्य कारण निम्नलिखित है वो

1) नगरीय क्षेत्र में वृद्धि :- स्वतंत्रता के बाद फ्यूम खर्च वर्ष 1991 में राजनांदगंगा जिले में 3 और नये नगर गठित, डांगरगांव और अम्बागढ चोरी का अभवस्थ हुआ। इससे स्पष्ट है कि जिले में गैर कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

2) नगरीय जनसंख्या में वृद्धि :- राजनांदगंगा जिले में अध्यायम एवं जनसंख्या वृद्धि दर के कारण नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई है। जिले में अधिक, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों से बड़ी मात्रा में लोग काम की तलाश में आते। यही कारण है कि यहाँ की नगरीय जनसंख्या जो वर्ष 1981 में 12.36 प्रतिशत थी, इसके बाद 1991 में 15.75 प्रतिशत हो गयी।

3) औद्योगिकीकरण :- जिले में औद्योगिकीकरण के विकास ने गैर कृषि क्षेत्र को महत्वाकांक्षा दिखा है। सीमाना, देशदा, डेब्ला, खट्टरु और सांकर आदि गाँवों में नये-नये उद्योगों की स्थापना हुई जिससे गैर कृषि क्षेत्र को प्रस्तावना मिला है किन्तु औद्योगिकीकरण के विकास की वृद्धि दर अन्य जिलों के समान, रायपुर की तुलना में बहुत ही कम है।

4) शैक्षिक विकास :- राजनांदगंगा जिले में वर्तमान में 1761 प्राथमिक शालायां, 345 माध्यमिक विद्यालय, 97 उच्च माध्यमिक विद्यालय, 14 महाविद्यालय एवं 5 व्यासाधिकार.

1- जिला सांख्यिकी पुरस्कार, सांख्यिकी कार्यालय राजनांदगंगा 1992, पृष्ठ 12.
2- गोयं, हर आरोपित - "रायपुर में जननी-वैध प्रभुतियाँ", 1991, अप्रतीपित शोध िन्तु.
संख्यातः 1 जिले में वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार साधरण का प्रतिशत 44.39 है जबकि वर्ष 1981 में साधरण का प्रतिशत 26.52 एवं वर्ष 1971 में 19.60 प्रतिशत था। 2 साधरण प्रतिशत की दर एवं शैवालिक संस्थाओं स्थपत करते हैं जिसे में शैवालिक विकास ने भी गैर क्रिषि क्षेत्र को बढ़ाने में सहयोग दिया है।

(5) यहाँ देखा गया है: राजनांदगंज जिला दक्षिण-पूर्वी रेल्वे के चन्दन--कलकत्ता गुड़ाम गार्ड में स्थित है। जिसका प्रशिक्षण का लक्ष्य 70 किलोमीटर है तथा जिले के सभी क्षेत्र आपस में सड़क गर्भ से जुड़े हुए हैं। यहाँ कुल सड़कों की लम्बाई 4448.79 है। 3 यहाँ के साधरण के विकास का प्रभाव भी गैर क्रिषि क्षेत्र में पड़ा है।

(6) कुन्जिक उपज मण्डलों का विकास:-- राजनांदगंज जिले में वर्तमान में 7 कुन्जिक उपज मण्डलों हैं। राजनांदगंज, कुन्जौ, बाढ़पानी, बोगरां, बोगरां, बोगरां व बोगरां कुन्जिक उपज मण्डलों। गंडौ मण्डल खोजना प्रस्तावित है जहां जिले में उत्पादित फसला उपजों का क्रय–विक्रय किया जाता है।

जिले के विभिन्न तहसीलों में अन्य एवं क्रिषि क्षेत्र

सारणी क्रमांक अ व 3.9 में जिले के विभिन्न तहसीलों में अन्य एवं क्रिषि क्षेत्र एवं उसकी प्रभाव को दिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में जिले में अन्य एवं क्रिषि क्षेत्र में छात्रलग्न प्रभाव रहा है। इस दशक में राजनांदगंज तहसील में 34.55 प्रतिशत एवं खेती गाड़ के दशक में 63.49 प्रतिशत से कमी हुई जबकि तहसील में अन्य एवं क्रिषि क्षेत्र में 417 प्रतिशत की वृद्धि हुई। बोगरां, बोगरां एवं बोगरां तहसीलों का निर्माण वर्ष 1980-81 में हुआ।

1- उपसंचालक, लोक शिक्षण विभाग, राजनांदगंज।
2- जिला साइंटिफिक पुस्तकालय, साइंटिफिक कार्यक्रम, राजनांदगंज 1992, पृष्ठ 29।
3- कार्यालय यथा, लोक निर्माण विभाग एवं व्यापार निगम निकाय, राजनांदगंज।
4- कुन्जिक उपज मण्डल, राजनांदगंज।
<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>उत्पादन (क्ष)</th>
<th>प्रूैलित</th>
<th>कवर्त</th>
<th>प्रूैलित</th>
<th>बाजार</th>
<th>प्रूैलित</th>
<th>लोगेक</th>
<th>प्रूैलित</th>
<th>सुस्थििन</th>
<th>प्रूैलित</th>
<th>मेंलो</th>
<th>प्रूैलित</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>73-74</td>
<td>31.110</td>
<td>34.697</td>
<td>15.368</td>
<td>15.352</td>
<td>22.195</td>
<td>24.896</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>74-75</td>
<td>31.850</td>
<td>34.031</td>
<td>15.190</td>
<td>15.496</td>
<td>21.880</td>
<td>23.808</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>75-76</td>
<td>32.600</td>
<td>33.165</td>
<td>15.030</td>
<td>15.640</td>
<td>21.570</td>
<td>22.720</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>76-77</td>
<td>32.720</td>
<td>32.299</td>
<td>14.630</td>
<td>15.784</td>
<td>21.360</td>
<td>21.632</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>77-78</td>
<td>34.130</td>
<td>31.433</td>
<td>15.300</td>
<td>15.928</td>
<td>21.370</td>
<td>20.544</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>78-79</td>
<td>35.550</td>
<td>30.567</td>
<td>16.070</td>
<td>16.072</td>
<td>21.500</td>
<td>19.456</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>79-80</td>
<td>36.940</td>
<td>29.701</td>
<td>16.100</td>
<td>16.216</td>
<td>21.690</td>
<td>18.366</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>80-81</td>
<td>38.380</td>
<td>28.835</td>
<td>16.200</td>
<td>16.360</td>
<td>21.810</td>
<td>17.250</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>81-82</td>
<td>19.115</td>
<td>27.969</td>
<td>16.177</td>
<td>16.504</td>
<td>13.915</td>
<td>6.166</td>
<td>3.495</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>17.675</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>82-83</td>
<td>20.360</td>
<td>27.103</td>
<td>16.030</td>
<td>16.648</td>
<td>8.102</td>
<td>15.104</td>
<td>6.738</td>
<td>4.125</td>
<td>7.761</td>
<td>18.371</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्देश : भारत भू-मर्गिशन, जनवर्षन. निर्देश संरक्षकी पुस्तक-1973-74 ते 1982-83 तक

आधार एवं प्रायूनकी संपर्क, भोजन (मौ.५०)

प्रूैलितण सम्बन्ध = \[ y = a + bx \]
इसी प्रकार सारणी क्रमांक अ-3.10 से स्पष्ट है कि वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में राजनांदगांव बंगला तहसील में अग्रणी कृषि भूमि में ग्रामीणकृषि प्रौद्योगिकी व कवरधा, बेसिक, अग्रणी और हाइब्रीड व बुईकाट में ग्रामीणकृषि प्रौद्योगिकी को स्पष्ट हो रही है। राजनांदगांव तहसील में 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में अग्रणी क्षेत्र में 23.06 प्रतिशत एवं मोहला तहसील में 39.23 प्रतिशत की कमी आयी जबकि कवरधा तहसील में 9.73, बेसिक में 2.18, अग्रणी तहसील में 9.83 एवं हाइब्रीड व बुईकाट में 1.11 प्रतिशत की वृद्धि अग्रणी कृषि क्षेत्र में हुई। अग्रणी और अग्रणी चौथी तहसील का निर्माण 1990-91 में हुआ।

यदि वर्ष 1973 से 1993 तक के दशकों में पालवर्तन की तुलना करें तो स्पष्ट होता है कि राजनांदगांव तहसील में दोनों दशकों में अग्रणी कृषि क्षेत्र कम हुआ। वर्ष 1973-74 से 1982-83 की तुलना में 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में 11.49 प्रतिशत तक की कमी। अग्रणी कृषि क्षेत्र में आयी जबकि कवरधा तहसील में दो दशकों में अग्रणी कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई है। इस वृद्धि का प्रतिवेश दोनों दशकों में तुलना करने पर 5.56 प्रतिशत है किन्तु अन्य क्षेत्रों में अग्रणी कृषि क्षेत्र बढ़ा है।

विभिन्न तहसीलों में अग्रणी कृषि क्षेत्र के बढ़ने व घटने के निम्न कारण हैं:

1. कवरधा तहसील में लघु व कमकु मर उद्योग को स्थापना जैसे डिपर्यु उद्योग, खतायत के साधनों का विकास जैसे राजनांदगांव से जक्क्सुर सर्वोच्च वस्त्र केंद्र (जिसके कारण दीवाली व्यवसाय का विकास हुआ) एवं जिला बनने की सम्भावना ने अग्रणी कृषि क्षेत्र में वृद्धि की है।

2. रेल सुविधा के विकास एवं वित्तपत्र, रोजगार उद्योग एवं तकनीकी अग्रणी उद्योग के विकास ने अग्रणी में गैर कृषि क्षेत्र में वृद्धि की है।

3. हाइब्रीड व लघु मिट्टी (सेल) उत्पादन, सिंचाई सुविधा से सम्बन्धित नवे क्षेत्र एवं कार्यक्रमों की स्थापना से गैर कृषि क्षेत्र को मजबूत किया है।

4. राजनांदगांव तहसील में गैर कृषि क्षेत्र के कम होने का कुछ कारण कृषि विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, पृष्ठ हालात का विकास, सिंचाई के साधनों का विकास एवं वित्तपत्र हैं। तुलसीपूड़ी, मोहला और बेसिक तहसील में बढ़ी सार्वजनिक सुविधा में सु-वृद्धि की होती
वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>भागांतरक्ष</th>
<th>प्रृष्ठति</th>
<th>कमत्र</th>
<th>प्रृष्ठति</th>
<th>वजनप्र</th>
<th>प्रृष्ठति</th>
<th>सुविदित</th>
<th>प्रृष्ठति</th>
<th>गोदाम</th>
<th>प्रृष्ठति</th>
<th>द्वितीय</th>
<th>प्रृष्ठति</th>
<th>अर्थशास्त्र</th>
<th>प्रृष्ठति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>89-90</td>
<td>17.310</td>
<td>17.926</td>
<td>16.710</td>
<td>17.171</td>
<td>8.188</td>
<td>8.006</td>
<td>8.188</td>
<td>7.078</td>
<td>7.900</td>
<td>8.030</td>
<td>13.794</td>
<td>7.182</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थिति - अर्थशास्त्र, भूौतिकशास्त्र, अनुभववाद

निर्धारण शर्तें की पुष्टि, वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक.

अर्थशास्त्र एवं वैज्ञानिक विद्याप्रदान, भूपत (गृहपती)

प्रृष्ठति का समीकरण - \( y = a + bx \)
राजनागरिक तहसील, जिला राजनागरिक तहसील के मुख्य बिंदु होने के बिना भी तुलसीभांत हार्ट से आयोगिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है। यहाँ का अन्य संसाधन भी पड़ोसी गिलियों में अर्द्धक्षण हो रहा है। अत: विकास अवस्था हो गया है जबकि निकटवर्ती गिलियों तुरंत, रामपुर दूसरी ओर गहराई में गाड़ीया, नामगुर के तीन आयोगिक विकास के कारण यह क्षेत्र अन्य "विकास छावन" (Shedo Area) के भाग के रूप में आवश्यकता रह गया है। आयोगिक प्रक्रिया में "स्थानीय सीमा" के सिद्धान्त के अनुसार संगठनकक्रम कारक (Agglomerating factors) का जो लाभ निकटवर्ती गिलियों को प्राप्त हुआ वह राजनागरिक को उपलब्ध नहीं हो सकता। राजनागरिक का संविधायिक च्यूनी एक मात्र सूती वर्तमान उद्योग (३०/१६० मिल) पुनर्निर्माण करने के अभाव में यह उद्योग किसी तरह सांस ले पहन की स्थिति में रह गया है।

(6) मोहला तहसील आदिवासी क्षेत्र होने के कारण वहाँ क्षेत्र, आयोगिक क्षेत्र एवं शिला, यातायात बहु दुर्ग्रेट से पिछड़ा हुआ है। जिसके उस क्षेत्र में गरूर कृषि क्षेत्र को बढ़ावा नहीं मिल पाया। इसके अतिरिक्त शासन का पारा ७०(६) के प्रक्रियाओं के सतत आदिवासी क्षेत्रों में आदिवासी सम्पादक के क्रय-विक्रय में रोक ने भी इस क्षेत्र में गरूर कृषि को विकास किया नहीं होने दिया।

(7) मोहला तहसील के गरूर कृषि क्षेत्र में किसी भी एक गरूर कारण नवशक्तादेवों का आगमन भी है जिनसके कारण उस क्षेत्र में अपूर्वाका की भाषण व्यक्त हो गया है।
उपर्युक्त विवरण को संदर्भ में कहा जा सकता है कि जिले की विभिन्न तहतीलों में विभिन्न कारणों से इन दो दशकों (वर्ष 1973 से 1993 तक) में गैर कृषि क्षेत्र में वृद्धि या कमी की प्रकृति रही है। किन्तु सम्पूर्ण जिले में गैर कृषि क्षेत्र में वृद्धि रही है। किन्तु यह वृद्धि औद्योगिकीकरण के कारण नए पदों पर रही है। वास्तव में इस वृद्धि का मुख्य कारण नए औद्योगिक क्षेत्र बनाने का है।

अन्य अकृषि क्षेत्र (धन कृषि को छोड़कर)

राजनाडंगांव जिले में अन्य अकृषि भूमि के अन्तर्गत भी के अन्तर्गत भी दो प्रकार की भूमि सुप्तिलिंग व दीर्घ चारण होता है। जो निर्मि पक्ष व्यक्ति से तादायित नहीं है। अन्य अकृषि भूमि के इन दोनों वर्गीकरण के पारंपरिक एवं प्राप्ति का अभ्यास भी संभवित है। रूप से किया गया है, जिसे मूल वर्ग में विकसित गया है।

सारणी क्रमांक अ-3.11

राजनाडंगांव जिले में अन्य अकृषि क्षेत्र में भूमि उपयोग व उसकी प्राप्ति।

वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक एवं वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक की अवधि में (हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>अन्य अकृषि</th>
<th>प्रृथ्वि मूल्य</th>
<th>वर्ष</th>
<th>अन्य अकृषि</th>
<th>प्रृथ्वि मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1973-74</td>
<td>58.34</td>
<td>54.737</td>
<td>1983-84</td>
<td>68.23</td>
<td>66.923</td>
</tr>
<tr>
<td>1974-75</td>
<td>56.99</td>
<td>56.351</td>
<td>1984-85</td>
<td>68.00</td>
<td>67.607</td>
</tr>
<tr>
<td>1975-76</td>
<td>55.64</td>
<td>57.965</td>
<td>1985-86</td>
<td>67.70</td>
<td>68.291</td>
</tr>
<tr>
<td>1976-77</td>
<td>55.34</td>
<td>59.579</td>
<td>1986-87</td>
<td>68.20</td>
<td>68.974</td>
</tr>
<tr>
<td>1977-78</td>
<td>57.63</td>
<td>61.193</td>
<td>1987-88</td>
<td>69.17</td>
<td>69.658</td>
</tr>
<tr>
<td>1978-79</td>
<td>67.43</td>
<td>62.807</td>
<td>1988-89</td>
<td>69.66</td>
<td>70.342</td>
</tr>
<tr>
<td>1979-80</td>
<td>68.46</td>
<td>64.421</td>
<td>1989-90</td>
<td>70.150</td>
<td>71.026</td>
</tr>
<tr>
<td>1980-81</td>
<td>66.94</td>
<td>66.035</td>
<td>1990-91</td>
<td>71.54</td>
<td>71.710</td>
</tr>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>66.60</td>
<td>67.649</td>
<td>1991-92</td>
<td>74.76</td>
<td>72.393</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>68.72</td>
<td>69.263</td>
<td>1992-93</td>
<td>72.67</td>
<td>73.077</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्त्रीत - अधिस्थक, भू-अभिलेख, राजनाडंगांव।

प्रृथ्वीमान समीकरण - \[ y = a + bx \]
ग्राफ़ नं. 3.5  राजनांदगंगा नदी में अंग्रेजी धरोहर एवं उसकी प्रसरण
वर्ष 1973-74 से 1992-93 तक
सारणी क्रमांक अ-3.11 में वर्ष 1973-74 से 1982-83 एवं वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दस्तावेजों में रुग्नपाठवार्ग जिले के अन्य अकृति क्षेत्र की प्रकृति बढ़ती हुई स्पष्ट होती है। वर्तमान में इस भूमि का प्रतिशत कुल भूमि का केंद्रियक्षेत्र से 6.55 है। अर्थात 72.67 हजार हेक्टेयर भूमि है ।

1 जो चारगांव एवं बीगर शाक-शुष्क के अन्तर्गत आती हैं। मध्यप्रदेश में अन्य अकृति भूमि का प्रतिशत 6.35 है । तथा भारत में इसका प्रतिशत 5.00 है।

2 मध्यप्रदेश एवं भारत की तुलना में रुग्नपाठवार्ग जिले में अन्य अकृति क्षेत्र की अधिकता है। इस भूमि की वृद्धि का प्रतिरूप अर्थात ग्रामों में सार्वजनिक भूमि एवं चारगांव में वृद्धि तथा अन्य अर्थात में वृद्धि होता है। अन्य अकृति भूमि की वृद्धि का गाण कारण भूमि आर्थित की कमी भी है। जिले में वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक अन्य अकृति श्रेणी में वृद्धि का प्रतिशत 17.79 रहा। जबकि वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दस्तावेज में 6.51 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्ष 1982-83, 1992-93 में अन्य अकृति क्षेत्र पहले दस्तावेज की तुलना में कम होता जा रहा है निर्माण कारण नानीकरण, और सुधारकरण, आवश्यक परिस्थितियों में वृद्धि है।

जिले की विभिन्न तहसीलों में अन्य अकृति क्षेत्र

सारणी क्रमांक (अ)-3.11 में जिले की विभिन्न तहसीलों में अन्य अकृति क्षेत्र (परा भूमि को छोड़कर) के भूमि उपयोग एवं उसकी प्रकृति को दिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दस्तावेज में रुग्नपाठवार्ग एवं शेखावाटी तहसील में अन्य अकृति क्षेत्र की प्रकृति ओर्धानक रही है। यह ओर्धानक प्रकृति रुग्नपाठवार्ग तहसील में 44.53 एवं शेखावाटी तहसील में 75.20 प्रतिशत रही। इस तहसीलों में अन्य अकृति क्षेत्र में बड़ी मात्रा में कमी का कारण वर्ष 1980-81 में तहसीलों का पुनर्मिलित न होने तहसीलों का निर्माण हुआ। दूसरी ओर कयापूर तहसील में अन्य अकृति क्षेत्र में वृद्धि की प्रकृति रही है निर्माण क्षेत्र का प्रतिशत 59.53 रहा है।

1- जिला साधिकारी पुरवहन, साहित्यकी कार्यलय, रुग्नपाठवार्ग 1993, पृष्ठ 17.

2- अदवराआ, भू-अभिलेख वन्यजन्तु मोड संस्थान, मोड संस्थानकी संभाषण 1994, पृष्ठ 44-45.

3- एशियालियर रिचर्ड्स इंड इंडिया, वाटरमूल XLVI (12) मार्च 1992.
<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>उत्पादन (क्रू)</th>
<th>फ्रूटिल (क्रू)</th>
<th>बकरी</th>
<th>फ्रूटिल (क्रू)</th>
<th>गढ़ (क्रू)</th>
<th>फ्रूटिल (क्रू)</th>
<th>ठंडा (क्रू)</th>
<th>फ्रूटिल (क्रू)</th>
<th>संसार (क्रू)</th>
<th>फ्रूटिल (क्रू)</th>
<th>जैत (क्रू)</th>
<th>फ्रूटिल (क्रू)</th>
<th>चिल्ला</th>
<th>फ्रूटिल (क्रू)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>73-74</td>
<td>25.236</td>
<td>27.401</td>
<td>12.994</td>
<td>12.206</td>
<td>20.117</td>
<td>21.997</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>74-75</td>
<td>25.040</td>
<td>26.423</td>
<td>13.610</td>
<td>13.271</td>
<td>19.670</td>
<td>20.886</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>75-76</td>
<td>24.860</td>
<td>25.445</td>
<td>14.230</td>
<td>14.337</td>
<td>19.230</td>
<td>19.776</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>76-77</td>
<td>23.870</td>
<td>24.467</td>
<td>12.750</td>
<td>15.402</td>
<td>18.720</td>
<td>18.666</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>77-78</td>
<td>25.560</td>
<td>23.489</td>
<td>16.950</td>
<td>16.467</td>
<td>18.870</td>
<td>17.555</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>78-79</td>
<td>27.250</td>
<td>22.511</td>
<td>21.150</td>
<td>17.533</td>
<td>19.020</td>
<td>16.445</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>79-80</td>
<td>27.250</td>
<td>21.533</td>
<td>20.720</td>
<td>18.598</td>
<td>19.040</td>
<td>15.334</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>80-81</td>
<td>27.600</td>
<td>20.555</td>
<td>20.270</td>
<td>19.664</td>
<td>19.070</td>
<td>14.224</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>81-82</td>
<td>12.785</td>
<td>19.577</td>
<td>20.447</td>
<td>20.720</td>
<td>12.904</td>
<td>13.114</td>
<td>4.970</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>12.951</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>82-83</td>
<td>13.999</td>
<td>18.599</td>
<td>20.730</td>
<td>21.794</td>
<td>4.989</td>
<td>12.003</td>
<td>5.450</td>
<td>8.446</td>
<td>15.070</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वी: अधिकार पू-अधिकार, खेती रूपेयको कृषि सर्वेक्षण वर्ष 73-74 से 82-83 तक।

अधिकार एवं रूपेयको संबंधितता, भूमिकाए।

फ्रूटिलाइशन वर्गीकरण: \[ y = a + bx \]
सारणी क्रमांक अ-3.12 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में राजनैतिक तहसील में घटने की प्रकृति का क्रम रहा. साथ ही कार्यक्षेत्र एवं धीरगढ़ में भी इसकी प्रकृति क्रमाल्पक रही. इस दशक में राजनौत्कं मतसील के अन्य अकृत्तिक्षेत्र में कमी का प्रतिशत 19.37 रहा तथा कार्यक्षेत्र में 4.56 प्रतिशत एवं धीरगढ़ में 2.6 प्रतिशत की कमी आयी. दूसरी ओर खीरगढ़, ललितखंड, मोहल्ला तहसील में अन्य अकृत्ति क्षेत्र में वृद्धि हुई. यह वृद्धि खीरगढ़ एवं ललितखंड में नागण रही किन्तु मोहल्ला तहसील में इसकी वृद्धि की प्रकृति 8.67 प्रतिशत रही है.

यदि वर्ष 1973 से 1993 तक के दशकों में परिवर्तन की तुलना करें तो स्पष्ट होता है कि राजनौत्कं मतसील में दोनों दशकों में अन्य अकृत्ति क्षेत्र की प्रकृति क्रमाल्पक रही लेकिन पहले दशक की तुलना में दूसरे दशक में 25.16 प्रतिशत की कमी आयी. अर्थात् दूसरे दशक में कमी का प्रतिशत कम रहा. अन्य क्षेत्रों में वृद्धि बढ़ी कमी की प्रकृति विनिमय रही. अन्य अकृत्ति क्षेत्र में वृद्धि एवं कमी के कारण इस प्रकार है.

विभिन्न तहसीलों में अन्य अकृत्ति क्षेत्र में कमी का कारण औद्योगिक कारण एवं नगरीकरण का विवाद है. इसके अतिरिक्त भूमि का प्रदा दिये जाने के कारण भी अन्य अकृत्ति क्षेत्र में कमी आयी. किन्तु जिन तहसीलों में अन्य अकृत्ति क्षेत्र में वृद्धि हुई, उसका कारण वन क्षेत्र में कमी, भूमि सूचार कार्यक्रम, भू-प्रक्रमण, दृष्टांतिक भूमि में वृद्धि है.

उपरोक्त विवरण के आधार पर कह सकते हैं कि विभिन्न तहसीलों में वर्ष 1973-74 से 1992-93 तक के दो दशकों में वृद्धि बढ़ी कमी की प्रकृति रही किन्तु रामपुरी जिले के अन्तर्गत अन्य अकृत्ति क्षेत्र (पत्ता भूमि को छोड़कर) में वृद्धि की प्रकृति विनिमय रही.
<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>एननस्टेन्स</th>
<th>प्रूनित</th>
<th>कनकर</th>
<th>प्रूनित</th>
<th>वैण्डल</th>
<th>प्रूनित</th>
<th>कोनकरन्स</th>
<th>प्रूनित</th>
<th>पुष्करन्स</th>
<th>प्रूनित</th>
<th>पौध</th>
<th>प्रूनित</th>
<th>कोपरकर</th>
<th>प्रूनित</th>
<th>भौगलिक प्रूनित</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>53-84</td>
<td>13.9700</td>
<td>14.8855</td>
<td>20.1600</td>
<td>20.2826</td>
<td>4.8020</td>
<td>4.9901</td>
<td>5.5030</td>
<td>5.0315</td>
<td>8.4180</td>
<td>7.8947</td>
<td>15.3640</td>
<td>14.9731</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>57-88</td>
<td>13.0700</td>
<td>13.2095</td>
<td>20.1500</td>
<td>20.0314</td>
<td>4.9600</td>
<td>4.9989</td>
<td>5.4010</td>
<td>5.0035</td>
<td>8.3310</td>
<td>7.9853</td>
<td>15.0230</td>
<td>15.8859</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थः - अध्यायक, पू-मृतेश्वर, गम्यांकम

निदर्शण औद्योगिक पुनरुत्तम वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक.

अध्यायक एवं राजस्थानी संचालक, भोपाल (8930)

पूर्विकम्य संपीडकम - y = a + bx
कृषि योग्य परत भूमि (व्यक्ति भूमि)

राजनालम्ब गिले ही नहीं वरन सम्पूर्ण देश की जनसंख्या रेखा ग्रति से बढ़ रही है। दूसरी ओर खाद्यान्नों के उत्पादन में वदकड़ा उत्पादन आधिक्य होने के कारण कभी आती रही है। अत: खाद्यान्नों की पूर्ति पालना जा रही है। परिप्रेक्ष्यवाद खाद्यान्नों की कभी कई समस्याओं को जन्म देती है। इस समस्या का समाधान अधिक उत्पादन द्वारा ही सम्भव है। उत्पादन में वृद्धि आधारभूत तीन विधियों से किया जा सकता है:

1. अधिक भूमि जोते में लकार
2. सपन (गहरी) कृषि करके
3. प्रति हेक्टर अधिक उत्पादन करके।

यदि कृषि भूमि का विस्तार सीमित है। तो: सिंचाई में विकास व विस्तार करके उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। दूसरी ओर हमें यह ध्यान रखना होगा कि उत्पादन की एक अधिकतम सीमा होती है। जिसके प्रति बुनियादी कृषि में फसल नियम खारू हो जाता है। अत: कृषि योग्य बेकार (पक्ष) भूमि का उपयोग करना रक्षाल्य, उत्पादक एवं लाभदायक उपाय है। जिससे अन्न की पूर्ति की जा सके। इस प्रकार की भूमि के बरे में अनेक प्रौद्योगिकी तथा अभ्यास यह स्पष्ट करते हैं कि बेकार (व्यक्ति) भूमि को कृषि योग्य बनाने की बहुत सी सम्भावनाएं है।

राजनालम्ब गिले में कृषि योग्य परत (बेकार) भूमि का प्रतिशत 1.67 है अथवा 18.57 हजार हेक्टर भूमि है। 1 मध्यप्रदेश में इस प्रकार की भूमि 3.53 प्रतिशत है तथा भारत में 5.00 प्रतिशत है। 3 तुलनात्मक दृष्टि से राजनालम्ब गिले में कृषि योग्य व्यक्ति भूमि का प्रतिशत मध्यप्रदेश व भारत से कम है।

सारणी क्रमांक 3-13 के अनुसार गिले में वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक रिपोर्ट में कृषि योग्य बेकार भूमि की प्रृूति बढ़ती हुई। क्योंकि वर्ष 1973-74 में कृषि योग्य परत

1- गिले अधिकारी रिपोर्ट, अधिकारी कार्यक्रम, राजनालम्ब 1993, पृष्ठ 17.
2- आमुला, भू-अभिलेख मंडोड़ मोफो न्यायिक, मोफो साधिकारी संस्थाप 1994, पृष्ठ 44-45.
3- एक्वानिफ रिपोर्ट इन श्रेणिया, ताबूम XLVI (12), मार्च 1992.
पृभि 15.09 हज़ार हेक्टर थे जो कि 1982-83 में बढ़कर 22.58 हज़ार हेक्टर हो गयी. इस प्रकार वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक की अवधि में 7.49 हज़ार हेक्टर पृभि अरू 49.62 प्रतिशत की वृद्धि हो गयी. दूसरी ओर वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दस्तक में कृषि योग्य परत पृभि में प्रृति पतली हुई स्पष्ट होती है. सारणी क्रमांक अ-3.13 से स्पष्ट हैं.

सारणी क्रमांक अ-3.13

राजनांदगंज जिले में कृषि योग्य परत (हेक्टर) पृभि उपयोग एवं उसकी प्रृति का वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक व वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक की अवधि में (हज़ार हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>कृषि योग्य परत पृभि</th>
<th>प्रृति मूल्य</th>
<th>वर्ष</th>
<th>कृषि योग्य परत पृभि</th>
<th>प्रृति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1974-75</td>
<td>16.00</td>
<td>15.409</td>
<td>1984-85</td>
<td>22.37</td>
<td>22.057</td>
</tr>
<tr>
<td>1977-78</td>
<td>18.70</td>
<td>18.487</td>
<td>1987-88</td>
<td>21.29</td>
<td>20.294</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत - अभीतक, भू-अभिलेख, राजनांदगंज.

प्रृति अनुमान समीकरण - \( y = a + bx \)

कि वर्ष 1983-84 में कृषि योग्य हेक्टर पृभि 21.57 हज़ार हेक्टर तथा वर्ष 1992-93 में 18.57 हज़ार हेक्टर हो गई. इस प्रकार, वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के वर्षों में

1. शिला सोडियांकी पृभि, सोडियांकी अभिलेख 1973 से 1993 तक, राजनांदगंज.
ग्राफ़ नं-3.6 राजनांदगिर्व भिड़े में कृषि योग्य परत (बेकार) मूल्य व उसकी प्रृति।
वर्ष 1973-74 से 1992-93 तक।

वर्ष
73-74 76-77 79-80 82-83 85-86 88-89 91-92

कृषि योग्य परत (बेकार) मूल्य
वास्तविक मूल्य
प्रृति मूल्य
कृषि योग्य बेकार भूमि में 3.00 हजार डेस्टर अथवा 13.9 प्रतिशत की कमी आयी. इससे स्पष्ट होता है कि वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में भू-युग्म बियोक्स में एवं सिंचाई के सामग्री का विस्तार हुआ. परिणामस्वरूप कृषि योग्य बेकार भूमि के प्रतिशत में कमी आयी।

जिसे की विभिन्न तहसीलों में कृषि योग्य पत्त (बेकार) भूमि

सारणी 9 क्रमांक अ-3.14 से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में राजनांदगांव एवं घेण्ण तहसील में इसकी प्रवृत्ति क्रांतिकारी रही है जबकि कब्जा तहसील में कृषि योग्य पत्त भूमि में वृद्धि हुई है. यह वृद्धि राजनांदगांव एवं तहसील में हुई कमी से अधिक रही है. राजनांदगांव तहसील में 50.92 प्रतिशत एवं 64.23 प्रतिशत की कमी कृषि योग्य पत्त भूमि में आयी जबकि कब्जा तहसील में यह वृद्धि 100 प्रतिशत से अधिक 175 प्रतिशत रही.

सारणी अ-3.15 में वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में गिले की विभिन्न तहसीलों की प्रवृत्ति को दर्शाया गया. सारणी 5 से स्पष्ट है कि राजनांदगांव, कब्जा एवं मोहल में कृषि योग्य व्यवस्था भूमि की प्रवृत्ति क्रांतिकारी रही है. राजनांदगांव तहसील में वर्ष 1983-84 से 1991-92 तक 5.90 प्रतिशत की कमी आयी जो कि लगभग नाम्न ही थी. किफ़्तु कब्जा एवं मोहल तहसील में क्रांतिकारी प्रवृत्ति क्रमशः 35.57 एवं 60.52 प्रतिशत रही है. दूसरी ओर घेण्ण एवं छुआक्षवाण तहसील में इसकी प्रवृत्ति क्रांतिकारी रही है. घेण्ण में 65.53 प्रतिशत, छुआक्षवाण में 9.23 प्रतिशत एवं छुआक्षवाण में 30.50 प्रतिशत की वृद्धि हुई.

वर्ष 1973 से 1993 तक के दौरान दशकों की वृद्धि करने पर स्पष्ट होता है कि वर्ष 1973 से 1992 तक की स्थिति में राजनांदगांव तहसील में कृषि योग्य बेकार भूमि में कमी प्रतिशत का परिवर्तन 45.02 प्रतिशत रहा है. लेकिन वर्ष 1992-93 में इसे 10.20 प्रतिशत की वृद्धि स्पष्ट होती है. किफ़्तु सामान्य प्रवृत्ति क्रांतिकारी रही है तथा योग्य तहसीलों में वृद्धि एवं कमी की प्रवृत्ति ही विद्यमान रही है.

कृषि योग्य पत्त (कब्जा) भूमि का अर्थ है, वह भूमि जो प्रत्यय छोड़ रो जीती न गयी है। इसके लिए भीतरी, आर्थिक, समाजीक तथा भौगोलिक पालिकाएं उत्साहित है।
वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>रजनीकांत</th>
<th>प्रृति</th>
<th>कार्य</th>
<th>प्रृति</th>
<th>चेयर</th>
<th>प्रृति</th>
<th>तोनराम</th>
<th>प्रृति</th>
<th>सुरेखन</th>
<th>प्रृति</th>
<th>अद्भुत</th>
<th>प्रृति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>73-74</td>
<td>9.1550</td>
<td>10.3383</td>
<td>1.4510</td>
<td>1.5123</td>
<td>4.4940</td>
<td>4.8955</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>74-75</td>
<td>9.1500</td>
<td>10.0409</td>
<td>1.8700</td>
<td>1.8429</td>
<td>4.6900</td>
<td>4.6965</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>75-76</td>
<td>9.1500</td>
<td>9.7435</td>
<td>2.3000</td>
<td>2.1735</td>
<td>4.8200</td>
<td>4.4975</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>76-77</td>
<td>9.3300</td>
<td>9.4461</td>
<td>2.8000</td>
<td>2.5041</td>
<td>5.1900</td>
<td>4.2965</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>77-78</td>
<td>8.580</td>
<td>9.1487</td>
<td>2.6400</td>
<td>2.8347</td>
<td>4.9900</td>
<td>4.0995</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>78-79</td>
<td>7.8300</td>
<td>8.8513</td>
<td>2.4900</td>
<td>3.1653</td>
<td>4.7900</td>
<td>3.9005</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>79-80</td>
<td>10.7300</td>
<td>8.5539</td>
<td>3.7200</td>
<td>3.4959</td>
<td>5.2500</td>
<td>3.7015</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>80-81</td>
<td>14.0400</td>
<td>8.2565</td>
<td>4.9600</td>
<td>3.8265</td>
<td>5.7200</td>
<td>3.5025</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>81-82</td>
<td>4.1490</td>
<td>7.9591</td>
<td>4.1270</td>
<td>4.1571</td>
<td>3.1390</td>
<td>3.3035</td>
<td>2.5590</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>10.3120</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>82-83</td>
<td>4.4930</td>
<td>7.6617</td>
<td>3.9900</td>
<td>4.4677</td>
<td>1.5940</td>
<td>3.1045</td>
<td>2.4550</td>
<td>1.4510</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वतः: अधिक, दू-अधिक, रजनीकांत।

निर्देश: स्वतः पुस्तक, रजनीकांत-1973-74 से 1982-83 तक

अधिक एवं स्वतः पुस्तक, थोर (50)

प्रृतितम समीकरण: \( y = a + bx \)
इस प्रकार की भूमि का कुछ भाग तो ग्रामीण पशुओं के चराने के काम आता है जिससे यह भूमि कटी-फटी ही अन्तर्वा में तथा अवशेषीक है। जब तक पशुओं के लिये अन्य व्यवस्था नहीं की जाती, इस भूमि का कुप्पे के लिये उपयोग सम्भव नहीं है।

जिले की तहसीलों में कृषि योग्य क्षेत्र भूमि में क्षेत्रक्षण परिवर्तन सफल होते हैं। कुछ ही क्षेत्र ऐसे हैं जहां इस प्रकार भूमि में वृद्धि हुई। यह वृद्धि मुख्यतः भौतिक परिस्थितियों द्वारा थीपी गयी कथ्याताओं के कारण है। जैसे- आमिरिषित वर्ष, अपनविषित मिटटी एवं अल्प उत्पादन है।

कृषि योग्य वर्षी भूमि नगरीय सीमान्त क्षेत्रों में अधिक विस्तृत है; जबकि नगर विकास योजना एवं आगराय योजना के अन्तर्गत नगर के निर्मल खेतों की भूमि रित सही है जो नि-तृप्त के लिये अपना भूमि में शामिल किया गया है।

राजनायक जिले के अधिकांश क्षेत्रों में कृषि योग्य परत (वर्षी) भूमि का हाल हुआ है। इसमें स्वामिक भोग दान सिंचाई क्षेत्र में वृद्धि तथा संकरण है तथा जिले में कृषि क्षेत्र के विस्तार की सम्भावनाएं अन्तर्गत कीमत है। अतः इस प्रकार की भूमि का उपयोग कृषि भूमि के विस्तार का वृद्धारोपण जैसी महत्वपूर्ण अवश्यकताओं के लिये किया जा सकता है। नानाशस्य के बढ़ते दबाव के कारण कृषि भूमि के विस्तार हेतु इसका स्तोल्तम उपयोग सिंचाई संग्रामों में वृद्धि तथा राजनीतिक उर्जाओं के भरपूर उपयोग से ही सम्भव है।

परत भूमि

परत भूमि का सम्बन्ध फलस्वरूप क्षेत्र से प्रत्यक्ष होता है। भूमि के परती खाने के कई भौतिक एवं आर्थिक कारण हैं। जैसे नहीं परती प्राय: भूमि की उर्जाला को पुनः प्राप्त करने या अन्य आर्थिक कारणों से अनुभवी छोड़ी जाने वाली भूमि से है। सामान्यतः इसकी अभिलंबी एक वर्ष तक की होती है और एक से अधिक वर्षों तक की परती भूमि चाचू परती की छोटक अन्य परती भूमि के अन्तर्गत आती है। भूमि के परती खाने का कारण कृषिकारों की कमजोर आर्थिक स्थिति, भूमि की अल्प उपयोग शामिल, सिंचाई संग्रामों का अभाव, नहर व नदियों में मिटटी इकट्ठी हो जाना, मोरम की अभियोजितता अन्तर्घाट कृषि आदि है।
निरीक्षा के विभिन्न वर्षों में दूध के जोड़ प्रति (वर्ष) पूरे व उत्तर की प्रृति

वर्ष 1983–84 से 1993–94 तक

(वर्षांक में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>एनन्दक</th>
<th>प्रृति</th>
<th>कन्या</th>
<th>प्रृति</th>
<th>ब्रूम्ह</th>
<th>प्रृति</th>
<th>धनर</th>
<th>प्रृति</th>
<th>धीरज</th>
<th>प्रृति</th>
<th>मौल</th>
<th>प्रृति</th>
<th>डागरक</th>
<th>प्रृति</th>
<th>अंध</th>
<th>प्रृति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>83–84</td>
<td>4.383</td>
<td>4.045</td>
<td>4.020</td>
<td>4.071</td>
<td>1.562</td>
<td>2.063</td>
<td>2.450</td>
<td>1.946</td>
<td>1.393</td>
<td>1.145</td>
<td>7.729</td>
<td>9.204</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>84–85</td>
<td>4.539</td>
<td>4.035</td>
<td>3.969</td>
<td>3.833</td>
<td>1.611</td>
<td>2.049</td>
<td>2.508</td>
<td>1.958</td>
<td>1.270</td>
<td>1.203</td>
<td>8.471</td>
<td>4.492</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>85–86</td>
<td>4.348</td>
<td>4.025</td>
<td>4.138</td>
<td>3.595</td>
<td>1.473</td>
<td>2.035</td>
<td>2.198</td>
<td>1.970</td>
<td>1.094</td>
<td>1.261</td>
<td>8.705</td>
<td>7.780</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>86–87</td>
<td>4.388</td>
<td>4.015</td>
<td>4.210</td>
<td>3.357</td>
<td>1.631</td>
<td>2.021</td>
<td>2.421</td>
<td>1.982</td>
<td>1.175</td>
<td>1.319</td>
<td>8.745</td>
<td>7.068</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>87–88</td>
<td>4.360</td>
<td>4.005</td>
<td>3.760</td>
<td>3.119</td>
<td>1.529</td>
<td>2.007</td>
<td>2.339</td>
<td>1.994</td>
<td>1.280</td>
<td>1.377</td>
<td>7.537</td>
<td>6.356</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>89–90</td>
<td>4.250</td>
<td>3.985</td>
<td>2.930</td>
<td>2.643</td>
<td>1.470</td>
<td>1.979</td>
<td>2.376</td>
<td>2.018</td>
<td>1.482</td>
<td>1.493</td>
<td>5.161</td>
<td>4.932</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत - अन्य स्रोतों, नू-अन्य स्रोत, एनन्दक
अग्रिकल्चर एवं सांश्लेखनीय संकेतात्मक, मौल (ला)

पूर्विक संकेतक - \( y = a + bx \)
राजनांदगंज जिले में पश्चि-भूमि का प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र से लगभग 4.82 प्रतिशत है। अर्थात् 53.51 हजार हेक्टर भूमि है। जिसमें चालू पश्चि-भूमि का प्रतिशत लगभग 58 तथा अन्य पश्चि-भूमि 42 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश में पश्चि-भूमि का प्रतिशत कुल भूमि भूमि 4.06 प्रतिशत है। तथा भारत में 7.97 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि भारत की तुलना में मध्यप्रदेश का राजनांदगंज जिले में पश्चि-भूमि का प्रतिशत कम है फिर भी जिले में पश्चि-भूमि का प्रतिशत दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

सारणी क्रमांक अ-3.16 से स्पष्ट है कि राजनांदगंज जिले के अन्तरगत वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक एवं वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के बीच दसकांक में पश्चि-भूमि की प्रवृत्ति चढ़ने की त्रिष है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 में पश्चि-भूमि का क्षेत्र 43.93 हजार हेक्टर था जो वर्ष 1982-83 में बढ़कर 50.23 हजार हेक्टर हो गया।

सारणी क्रमांक अ-3.16
राजनांदगंज जिले में पश्चि-भूमि उपयोग एवं उसकी प्रवृत्ति वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक एवं वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक की आधि में (हजार हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>पश्चि-भूमि क्षेत्र</th>
<th>प्रवृत्ति मूल्य</th>
<th>वर्ष</th>
<th>पश्चि-भूमि क्षेत्र</th>
<th>प्रवृत्ति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1973-74</td>
<td>43.93</td>
<td>48.257</td>
<td>1983-84</td>
<td>47.89</td>
<td>44.687</td>
</tr>
<tr>
<td>1974-75</td>
<td>44.90</td>
<td>49.311</td>
<td>1984-85</td>
<td>45.75</td>
<td>45.868</td>
</tr>
<tr>
<td>1975-76</td>
<td>45.87</td>
<td>50.365</td>
<td>1985-86</td>
<td>43.83</td>
<td>47.049</td>
</tr>
<tr>
<td>1976-77</td>
<td>63.91</td>
<td>51.419</td>
<td>1986-87</td>
<td>45.75</td>
<td>48.229</td>
</tr>
<tr>
<td>1977-78</td>
<td>57.58</td>
<td>52.473</td>
<td>1987-88</td>
<td>50.15</td>
<td>49.410</td>
</tr>
<tr>
<td>1978-79</td>
<td>55.06</td>
<td>53.527</td>
<td>1988-89</td>
<td>53.31</td>
<td>50.590</td>
</tr>
<tr>
<td>1979-80</td>
<td>59.47</td>
<td>54.581</td>
<td>1989-90</td>
<td>53.06</td>
<td>51.771</td>
</tr>
<tr>
<td>1980-81</td>
<td>58.70</td>
<td>55.635</td>
<td>1990-91</td>
<td>54.23</td>
<td>52.951</td>
</tr>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>54.75</td>
<td>56.689</td>
<td>1991-92</td>
<td>55.34</td>
<td>54.132</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>50.23</td>
<td>57.743</td>
<td>1992-93</td>
<td>53.51</td>
<td>55.313</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्पष्टतः अधिक, भू-अभिलेख, राजनांदगंज प्रवृत्तिमान संगीकरण - \( y = a + bx \)

1- जिला साहित्यकी पुस्तिका, साहित्यकी वार्षिक राजनांदगंज 1993, पृष्ठ 17.
2- अाधुनिक, भू-अभिलेख एवं मंदिर संग्रह, 900 यथातिसर, 90 साहित्यकी संस्थाप 1994, पृष्ठ 44-45
3- एशियालायर नियमाभुता इन इस्प्टिया, वाल्मु मैल. XLVI (12), वर्ष 1992.
इस प्रकार वर्ष 1973-74 की हुल्ला में वर्ष 198-83 में 63 हजार हेक्टर अर्थात 14.34 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार वर्ष 1983-84 में पत्ती भूमि का शेष 47.89 हजार हेक्टर था जो वर्ष 1992-93 में बढ़कर 53.51 हजार हो गया। इस प्रकार वर्ष 1983-84 की हुल्ला में वर्ष 1992-93 में पत्ती भूमि में 5.62 हजार हेक्टर अर्थात 11.73 प्रतिशत की वृद्धि हुई। दोनों दशकों की दुसरी पर स्पष्ट होता है कि वर्ष 1973-74 से वर्ष 1992-93 तक की स्थिति में पत्ती भूमि में वृद्धि हो रही थी। इसने यह उल्लेख दर पहले दशक की हुल्ला में दूसरे दशक में 2.61 प्रतिशत कम रही। अतः स्पष्ट है कि दूसरे दशक में पत्ती भूमि का उपयोग करने का प्रयास किया जा रहा है।


जिले की विभिन्न तहसीलों में पत्ती भूमि

सारणी क्रमांक अ-3.17 में जिले के अन्तर्गत विभिन्न तहसीलों में पत्ती भूमि एवं उनकी प्रृथितियों का विवरण गद्हाण है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में राजनालंबाव और खेती में तहसील में पत्ती भूमि कम हुई है। इसका एक मुख्य कारण इन तहसीलों का पुनर्विरुद्ध भी है। राजनालंबाव तहसील में 52.69 प्रतिशत एवं खेती में तहसील में 74.11 प्रतिशत पत्ती भूमि कम हुई है। दूसरी ओर कवर्च तहसील में वर्ष 1973-74 से 1980-81 तक 26.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, किंतु 1980-81 से 1982-83 तक की स्थिति में 26.49 प्रतिशत की कमी हुई। वर्ष 1980-81 के बाद से कवर्च तहसील में पत्ता भूमि निकास कर्फ्यू के कारण पत्ता भूमि में कभी की प्रृथित देखी गयी किंतु पूरे दशक की प्रृथित का अभाव करने पर स्पष्ट होता है कि कवर्च तहसील में वृद्धि की प्रृथित नियोजन है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>राजस्वलक्षण</th>
<th>प्रमुखता</th>
<th>करार</th>
<th>प्रमुखता</th>
<th>राजस्वलक्षण</th>
<th>प्रमुखता</th>
<th>राजस्वलक्षण</th>
<th>प्रमुखता</th>
<th>हैरानकाम</th>
<th>प्रमुखता</th>
<th>नेतृत्व</th>
<th>प्रमुखता</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>73-74</td>
<td>26.732</td>
<td>35.322</td>
<td>8.441</td>
<td>8.630</td>
<td>12.762</td>
<td>17.223</td>
<td>-</td>
<td>-1.246</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>74-75</td>
<td>29.810</td>
<td>33.695</td>
<td>8.570</td>
<td>8.712</td>
<td>14.130</td>
<td>16.507</td>
<td>-</td>
<td>-0.735</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>75-76</td>
<td>32.900</td>
<td>32.068</td>
<td>8.700</td>
<td>8.795</td>
<td>15.500</td>
<td>15.791</td>
<td>-</td>
<td>-0.223</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>76-77</td>
<td>37.490</td>
<td>30.441</td>
<td>9.080</td>
<td>8.877</td>
<td>17.340</td>
<td>15.074</td>
<td>-</td>
<td>0.289</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>77-78</td>
<td>34.500</td>
<td>28.814</td>
<td>8.600</td>
<td>8.999</td>
<td>16.390</td>
<td>14.358</td>
<td>-</td>
<td>0.800</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>78-79</td>
<td>31.490</td>
<td>27.187</td>
<td>8.120</td>
<td>9.041</td>
<td>15.450</td>
<td>13.642</td>
<td>-</td>
<td>1.312</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>79-80</td>
<td>31.500</td>
<td>25.560</td>
<td>9.400</td>
<td>9.123</td>
<td>15.950</td>
<td>12.926</td>
<td>-</td>
<td>1.823</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>80-81</td>
<td>31.500</td>
<td>23.933</td>
<td>10.680</td>
<td>9.206</td>
<td>16.520</td>
<td>12.210</td>
<td>-</td>
<td>2.335</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>81-82</td>
<td>13.565</td>
<td>22.306</td>
<td>9.786</td>
<td>9.288</td>
<td>11.493</td>
<td>5.312</td>
<td>2.847</td>
<td>-16.609</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्पष्टि: अध्यक्ष, भु-अध्यक्ष, राजस्वलक्षण।

मिति सांख्यिकी पुरस्कार, राजस्वलक्षण 1973-74 से 1982-83 तक

आर्थिक एवं अर्थव्यवस्था की रचनाकल्पना, भोग (ंक्रण)

प्रमुखता नीति: \( y = a + bx \)
सारणी क्रमांक अ-3.18 से स्पष्ट है कि वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में राजनांगंगा, कर्नप, खैराखंड एवं झोपरगढ़ तहसील में परती भूमि की धनात्मक रही है। यह वृद्धि की प्रमुखता राजनांगंगा तहसील में 4.66 प्रतिशत, कर्नप में वर्ष 1983 से 1992 तक 10.01 प्रतिशत, खैराखंड में 41.51 प्रतिशत एवं झोपरगढ़ तहसील में 13.81 प्रतिशत रही है। दूसरी ओर छुईखड़ एवं मोहल तहसील में परत भूमि की प्रमुखता धनात्मक रही है।

इस धनात्मक प्रस्तुति का प्रतिशत छुईखड़ में 4.41 प्रतिशत एवं मोहल में 32.90 प्रतिशत रहा है।

वर्ष 1973 से 1993 तक के दोनों दशकों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि राजनांगंगा एवं खैराखंड तहसील में पहले दशक की तुलना में दूसरे दशक में वृद्धि की प्रमुखता स्पष्ट होती है। अर्थात् पहले दशक (वर्ष 1973 से 1983 तक) की तुलना में दूसरे दशक (वर्ष 1983 से 1993 तक) में राजनांगंगा तहसील में 4.66 एवं खैराखंड तहसील में 41.51 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अर्थात् दूसरे दशक में परिवर्तन की दिशा बदल गयी तथा राजनांगंगा तहसील में यह परिवर्तन हुआ ही कम रहा है। कर्नप तहसील में दोनों दशकों में वृद्धि की प्रमुखता निरपेक्ष रही है किन्तु इस दशक में 16.51 प्रतिशत की कमी परती भूमि में आयी है। दूसरी ओर कर्नप एवं मोहल तहसीलों में परत भूमि के कम होने का कारण सिंचाई सम्बन्धी नये क्षेत्रों एवं कार्यालयों की स्थापना, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार है। लेकिन मोहल तहसील में परती भूमि के कम होने का कारण वृद्धि रोपण है। यहां पानीपानी विकास परियोजना के अन्तर्गत बढ़ी भूमि में सागीन, बांस, गोलगिन्दी एवं अन्य जमाती लकड़ियों के बृहत का वृद्धि रोपण किया जा रहा है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उक्त को दशकों में जिसे की विभिन्न तहसीलों में वृद्धि व कमी की प्रमुखता रही है। वृद्धि का मुख्य कारण नये उद्योगों की स्थापना, व्यापारिक परिसर एवं आयाती रूप से वृद्धि, भू-वातस्य उत्कल्पना, पत्तर उत्कल्पना जिसके कारण इनके आकार की जगी (भूमि) का कोई उपयोग नहीं हो पाता और भूमि परती रूप में रहती है। इसके अलावा अन्य भूमि में जंगलों के कटाई भी परती भूमि में वृद्धि का कारण रही है। किन्तु सामाजिक वानिकी के अन्तर्गत परत भूमि विकास योजना के तहत बढ़ी भूमि में वृद्धि रोपण किया जा रहा है एवं निष्कासन रक्षाएं विस्तार ने भी
पिछले की विभिन्न उद्देश्यों में पहले पृष्ठ के केंद्र के उपरण प्राप्ति
वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>फसलदोहर</th>
<th>प्राप्ति</th>
<th>कमांड</th>
<th>प्राप्ति</th>
<th>फसलदोहर</th>
<th>प्राप्ति</th>
<th>फसलदोहर</th>
<th>प्राप्ति</th>
<th>फसलदोहर</th>
<th>प्राप्ति</th>
<th>फसलदोहर</th>
<th>प्राप्ति</th>
</tr>
</thead>
</table>

स्पष्टीकण - खंड-खंड, फसलदोहर, समयकाल.

वर्ष (१९८३-८४ से १९९२-९३ तक).

खंड-खंड एवं फसलदोहर तिथियाँ, व्यक्त (१०००)

प्राप्तिप्रमाण समीकरण - $y = a + bx$
कुछ क्षेत्रों में पर्यावरण की कम करने का प्रयास किया है। जहां तक राजनांदगंज जिले की बात है तो सम्पूर्ण जिले में दोनों दस्तावेजों में वृद्धि की प्रतिशत विद्यमान रही है।

रिपोर्ट क्षेत्र

रिपोर्ट क्षेत्र से आश्वात धारा लगी थी भूमि से है जिसे निर्धारित उपरोक्त से उपरा गाजा है। \(^1\) राजनांदगंज जिले में ऐसी भूमि का प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र से 44.49 प्रतिशत अर्थात 493.68 हज़ार हेक्टर है। \(^2\) मध्यप्रदेश में निरपेक्ष क्षेत्र का प्रतिशत 43.92 \(^3\) एवं भारत में 46.50 प्रतिशत है। \(^4\) अतः स्पष्ट है कि भारत की तुलना में मध्यप्रदेश एवं राजनांदगंज जिले में निरपेक्ष क्षेत्र कम है। लेकिन मध्यप्रदेश की तुलना में राजनांदगंज जिले में निरपेक्ष क्षेत्र का प्रतिशत अधिक है। इसलिए स्पष्ट होता है कि राजनांदगंज जिला एक कृषि प्रधान जिला है।

राजनांदगंज जिले में वर्ष 1973-74 में निरपेक्ष क्षेत्र का प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र से 44.18 प्रतिशत था जो वर्ष 1982-83 में 45.06 प्रतिशत हो गया अर्थात वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक निरपेक्ष क्षेत्र में 1.99 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार दूसरे दशक में वर्ष 1983-84 में निरपेक्ष क्षेत्र का प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्र से 45.61 था जो वर्ष 1992-93 में कम होकर 44.49 प्रतिशत हो गया अर्थात दूसरे दशक में निरपेक्ष क्षेत्र में 1.85 प्रतिशत की कमी आयी। जिसे सारणी क्रमांक अ-3.19 में दिखाया गया है।

सारणी क्रमांक अ-3.19 से स्पष्ट है कि वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में निरपेक्ष क्षेत्र की प्रवृति बढ़ती हुई है। इस बढ़ती प्रवृति का मुख्य कारण यह है कि वर्ष 1973 में राजनांदगंज जिला बना था। नवनिर्मित जिला होने के कारण बहुत सा नया क्षेत्र इसमें मामला किया गया तथा जो भूमि कृषि सामग्री बेचकर पही थी उसका निर्माण उपयोग किया गया जाने लगा; क्योंकि जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण खाद्य आपूर्ति की भी मांग बढ़ने लगी। यद्यपि कारण है कि इस दशक में निरपेक्ष क्षेत्र में वृद्धि हुई किन्तु निरपेक्ष क्षेत्र में वृद्धि का प्रतिशत बहुत ही सामान्य रहा है।

1- अन्वेषण एवं अन्य आवस्यक - भारतीय अन्तरराष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय 1977, विवाद राजस्थान सम्मान 2971, पृष्ठ 291.
2- वर्तमान, मध्यप्रदेश. जिला सांस्कृतिक संस्था, सांस्कृतिक संस्कृतय राजनांदगंज वर्ष 1993, पृष्ठ 17.
3- अन्य संस्थाएं, मध्यप्रदेश एवं मध्यप्रदेश म090 ग्रामीण. म090 सांस्कृतिक संस्था 1994, पृष्ठ 44-45
4- एरिक फेल्हर विज्ञान एवं अन्य दस्तावेज, वर्ष 1992.
जिले के निरामिष्क्ष अक्ष में वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक में प्रतिविश्व बृहदि दर का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि केवल वर्ष 1976-77 एवं 1979-80 में अणात्मक प्रतिविश्व बृहदि दर रही। वर्ष 1976-77 में अणात्मक प्रतिविश्व बृहदि दर 3.56 रही जबकि 1979-80 में यह दर मात्र 0.42 हो गई थी। वर्ष 1976-77 में निरामिष्क्ष क्षेत्र में सबसे अधिक बढ़ी थी। इसका कारण परति भूमि में बृहदि है। यदि ख़रेद हाई 3.16 में परति भूमि को विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि वर्ष 1976-77 में सबसे अधिक परति भूमि 63.91 हजार हेक्टर थी।

सारणी क्रमांक अ-3.19

राजनांदगाँव जिले में निरामिष्क्ष क्षेत्र एवं उसकी प्रवृत्ति


(हजार हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>निरामिष्क्ष क्षेत्र</th>
<th>प्रवृत्ति मूल्य</th>
<th>वर्ष</th>
<th>निरामिष्क्ष क्षेत्र</th>
<th>प्रवृत्ति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1973-74</td>
<td>490.30</td>
<td>489.11</td>
<td>1983-84</td>
<td>502.97</td>
<td>506.138</td>
</tr>
<tr>
<td>1974-75</td>
<td>493.68</td>
<td>489.753</td>
<td>1984-85</td>
<td>505.22</td>
<td>504.552</td>
</tr>
<tr>
<td>1975-76</td>
<td>497.05</td>
<td>490.395</td>
<td>1985-86</td>
<td>507.28</td>
<td>502.966</td>
</tr>
<tr>
<td>1976-77</td>
<td>479.35</td>
<td>491.037</td>
<td>1986-87</td>
<td>505.22</td>
<td>501.379</td>
</tr>
<tr>
<td>1977-78</td>
<td>489.78</td>
<td>491.679</td>
<td>1987-88</td>
<td>500.05</td>
<td>499.793</td>
</tr>
<tr>
<td>1978-79</td>
<td>493.08</td>
<td>492.321</td>
<td>1988-89</td>
<td>496.27</td>
<td>498.207</td>
</tr>
<tr>
<td>1979-80</td>
<td>491.01</td>
<td>492.963</td>
<td>1989-90</td>
<td>497.07</td>
<td>496.621</td>
</tr>
<tr>
<td>1980-81</td>
<td>491.06</td>
<td>493.605</td>
<td>1990-91</td>
<td>493.25</td>
<td>495.034</td>
</tr>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>495.08</td>
<td>494.247</td>
<td>1991-92</td>
<td>493.83</td>
<td>493.448</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>500.04</td>
<td>494.889</td>
<td>1992-93</td>
<td>493.68</td>
<td>491.862</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वीट - अधीक्षक, भू-अभिलेख, राजनांदगाँव।

प्रवृत्तियाँ समीकरण - \[ y = a + bx \]
ग्राफ नं 0-18 राजनांदरान विलेय में निरपेक्ष में टेस्ट एंड उसकी प्रवृत्ति
वर्ष 1973-74 से 1992-93 तक
इसी प्रकार सारणी अ-3.19 में वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक निराकरण क्षेत्र एवं उसकी प्रूढ़ियों को दर्शाया गया है। उक्त सारणी अ-3.19 से स्पष्ट है कि इस दशक में निराकरण क्षेत्र में कमी निरोध होने रही है। निराकरण क्षेत्र में कमी का प्रतिशत 1.85 है। यह कमी की प्रूढ़िय की बहुत ही रकम हो रही है। इसका सुझाव कारण अन्य भूमि में वृद्धि है।

इस दशक में प्रतिवर्ष वृद्धि के अभाव करने पर स्पष्ट होता है कि निलेय में वर्ष 1986-87, 1987-88, 1988-89, 1990-91 एवं 1991-92 में क्रमांक वृद्धि दर रही है। यह क्रमांक वृद्धि दर वर्ष 1987-88 में सर्वाधिक 1.02 प्रतिशत और वर्ष 1991-92 में सबसे कम 0.03 प्रतिशत रही। शेष वर्षों में निराकरण क्षेत्र में प्रतिवर्ष वृद्धि दर स्पष्ट होती है।

यद्यपि अग्रणी क्षेत्र में कमी का मुख्य कारण बालू परती भूमि में वृद्धि है। लिस वर्ष भौतिक एवं आयर्निक कारणों जैसे भूमि की उच्च-स्थिति पुराव है। कारण के लिए भूमि को परती के बाद पूरे रूप में छोड़ जाना अथवा कम्युनिटी अवरुध्द प्रतियोगिता के कारण में, त्योहारों का प्रयोग न करने के कारण भूमि को जोड़ा न जाना ही निराकरण क्षेत्र में कमी का मुख्य कारण है। इसके विपरीत जब तिथियाँ तथा अन्य कारण भूमि की मित्ति के बाद प्रयोग किया जाता है तो निराकरण क्षेत्र में वृद्धि होती है।

निलेय की प्रमुख तहसीलों में निराकरण क्षेत्र

सारणी क्रमांक अ-3.20 में वर्ष 1973-74 तक के दशक में निलेय की प्रमुख तहसीलों में निराकरण क्षेत्र एवं उसकी प्रूढ़ियों को दर्शाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि इस दशक में उत्पादनीय कृषि शेयर तहसीलों में निराकरण क्षेत्र में कमी की प्रूढ़िय मिनामा रही है। वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक राजनीतिक दशक में 36 प्रतिशत एवं यहाँ निराकरण क्षेत्र में 59.96 प्रतिशत की अमृतात्मा। इसका एक कारण अन्य कारणों के अंतर्गत में इन तहसीलों का वर्ष 1980-81 में पुनरावर्तन होता है जबकि कंपनी तहसील में निराकरण क्षेत्र में जनताकर्मी कृषि दर प्रूढ़िय स्पष्ट होती है कार्य तहसील में 4.80 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

1- अग्रासत पृष्ठें "भारतीय अर्थव्यवस्था" 1977, पृष्ठ 291.
<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>रजतपालन</th>
<th>प्रौढ़ता</th>
<th>कवर्ण</th>
<th>प्रौढ़ता</th>
<th>भेड़पर्य</th>
<th>प्रौढ़ता</th>
<th>कौटि</th>
<th>प्रौढ़ता</th>
<th>पौधकर्म</th>
<th>प्रौढ़ता</th>
<th>पेड़कर्म</th>
<th>प्रौढ़ता</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>73-74</td>
<td>212.3500</td>
<td>229.5466</td>
<td>123.6330</td>
<td>123.2280</td>
<td>154.3070</td>
<td>171.0005</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>74-75</td>
<td>220.4700</td>
<td>222.0918</td>
<td>123.7000</td>
<td>130.4645</td>
<td>153.5900</td>
<td>20.8664</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>75-76</td>
<td>208.5900</td>
<td>214.6370</td>
<td>123.7600</td>
<td>13.6175</td>
<td>152.8600</td>
<td>19.7760</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>76-77</td>
<td>204.9600</td>
<td>207.1822</td>
<td>122.6900</td>
<td>130.7705</td>
<td>151.7000</td>
<td>18.6666</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>77-78</td>
<td>208.4700</td>
<td>199.7274</td>
<td>123.0900</td>
<td>130.9235</td>
<td>152.6400</td>
<td>17.5552</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>78-79</td>
<td>211.9900</td>
<td>192.2726</td>
<td>127.5100</td>
<td>131.0765</td>
<td>153.5800</td>
<td>16.4448</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>79-80</td>
<td>212.9900</td>
<td>184.8176</td>
<td>126.6000</td>
<td>131.2295</td>
<td>152.4400</td>
<td>15.3344</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>80-81</td>
<td>214.0200</td>
<td>177.3630</td>
<td>125.7300</td>
<td>131.3825</td>
<td>151.3100</td>
<td>14.2240</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>81-82</td>
<td>135.2180</td>
<td>169.9082</td>
<td>127.1740</td>
<td>131.5355</td>
<td>105.4910</td>
<td>13.1136</td>
<td>47.5260</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>79.6740</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>82-83</td>
<td>135.9000</td>
<td>162.4534</td>
<td>129.5700</td>
<td>131.6885</td>
<td>61.7910</td>
<td>12.0032</td>
<td>47.6100</td>
<td>44.8970</td>
<td>-</td>
<td>80.1690</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**प्रमेय:** कपड़क, भू-संपत्तिय, रजतपालन.

पिताल संचयनीय पृष्ठक्रम, रजतपाल: 1973-74 से 1982-83 तक.

अर्थव्यवस्था एवं संचयनीय संचालनीय, प्रभाव (शुद्ध)

**प्रौढ़ता उच्चगति—** y = a + bx
सारणी क्रमांक अ-3.21 में वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक के दशक में निराकरण क्षेत्र एवं उनकी प्रूढ़ियों को दिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि यह इतना कम प्रूढ़ि राग्नादारांग तहसील में 31.53, खेरगढ़ में 1.53 प्रतिशत, बोगराघ में 2.76, बुद्धिमान में 0.85 प्रतिशत, एवं मोहला तहसील में 36.73 प्रतिशत की कमी अधीन है। स्पष्ट है कि राग्नादारांग एवं मोहला तहसील में कमी का प्रतिशत की प्रतिशत अन्य तहसीलों की तुलना में अधिक है। इसका भी अन्य कारणों के अतिरिक्त एक कारण वर्ष 1990-91 में इसे तहसीलों का पुनर्निर्माण है निर्माण के फलस्वरूप खेरगढ़ एवं बोगराघ चौकी दो नовые तहसीलों का उदय हुआ निर्माण के कारण राग्नादारांग, बुद्धिमान तहसील का निराकरण क्षेत्र का अधिकांश भाग खेरगढ़ बुद्धिमान तहसील में और मोहला तहसील का क्षेत्र अन्याय चौकी तहसील में चला गया। दृशी और इस दशक में भी कमी में तहसील में बुढ़ा की प्रूढ़ित विध्यालय रही है जिसका प्रतिशत 1.41 था।

वर्ष 1973 से 1993 तक के दोनों दशकों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि राग्नादारांग तहसील में दोनों ही दशकों में निराकरण क्षेत्र में कमी की प्रूढ़ित रही है। लेकिन वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक की तुलना में वर्ष 1983-84 से वर्ष 1992-93 तक के दशक में 4.47 प्रतिशत की कमी आयी। खेरगढ़ तहसील में भी पहले दशक की तुलना में दूसरे दशक में निराकरण क्षेत्र में कमी प्रनिर्माण कम रहा है। इसी प्रकार कवर्क्स तहसील में 1973-74 से 1982-83 की तुलना में 1983-84 से 1992-93 तक में निराकरण क्षेत्र में बुढ़ा की प्रूढ़ित में 3.39 प्रतिशत की कमी आयी किन्तु दोनों ही दशकों में कवर्क्स तहसील में बुढ़ा की प्रूढ़ित विध्यालय रही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दोनों दशकों में विभिन्न तहसीलों में निराकरण क्षेत्र में कमी व बुढ़ा की प्रूढ़ित रही है। तहसीलों में निराकरण क्षेत्र में कमी का मुख्य कारण नागरिकवादी, अधोमतीकरण, नागरिकवादी, बुढ़ा, चालू पृथ्वी भूमि में बुढ़ा, कमजोर आर्थिक स्थिति, सिंचाई के लाभों की कमी व सुविधाओं का अभाव एवं तहसीलों का पुनर्निर्माण एवं क्षेत्र का प्रलय है। इसके अतिरिक्त मोहला तहसील में कमी का मुख्य कारण आदिवासी क्षेत्र का होना है जहां गरीबी, अधिकार विध्यालय है। लागू ही आदिवासियों में बुढ़ा स्ताव परिवर्तन की भी प्रूढ़ित रही जाती है।

1- उपर्ति हरसिन्धा - भारतीय जनजातियों, सामाजिक विस्तार हिन्दी रचना केन्द्र, राजस्थान विस्तार विभाग, जयपुर, पृष्ठ 99-100.
<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>राजनयिक</th>
<th>भूतित</th>
<th>कम्यु</th>
<th>भूतित</th>
<th>भूतित</th>
<th>भूतित</th>
<th>भूतित</th>
<th>भूतित</th>
<th>भूतित</th>
<th>भूतित</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>83-84</td>
<td>136.340</td>
<td>143.513</td>
<td>130.090</td>
<td>130.316</td>
<td>61.885</td>
<td>62.486</td>
<td>47.955</td>
<td>48.116</td>
<td>45.181</td>
<td>45.261</td>
</tr>
<tr>
<td>84-85</td>
<td>136.608</td>
<td>137.399</td>
<td>130.803</td>
<td>130.468</td>
<td>62.071</td>
<td>62.378</td>
<td>48.663</td>
<td>47.868</td>
<td>45.391</td>
<td>45.203</td>
</tr>
<tr>
<td>85-86</td>
<td>137.079</td>
<td>131.285</td>
<td>131.281</td>
<td>130.620</td>
<td>62.443</td>
<td>62.270</td>
<td>48.514</td>
<td>47.620</td>
<td>45.353</td>
<td>45.145</td>
</tr>
<tr>
<td>86-87</td>
<td>133.359</td>
<td>123.171</td>
<td>130.820</td>
<td>130.772</td>
<td>61.035</td>
<td>62.162</td>
<td>48.161</td>
<td>47.372</td>
<td>44.830</td>
<td>45.087</td>
</tr>
<tr>
<td>87-88</td>
<td>121.200</td>
<td>119.057</td>
<td>131.520</td>
<td>130.924</td>
<td>61.643</td>
<td>62.054</td>
<td>47.740</td>
<td>47.324</td>
<td>45.015</td>
<td>45.029</td>
</tr>
<tr>
<td>88-89</td>
<td>111.930</td>
<td>112.943</td>
<td>131.560</td>
<td>131.076</td>
<td>61.550</td>
<td>61.946</td>
<td>47.337</td>
<td>46.876</td>
<td>44.961</td>
<td>44.971</td>
</tr>
<tr>
<td>89-90</td>
<td>102.660</td>
<td>106.629</td>
<td>131.610</td>
<td>131.228</td>
<td>61.460</td>
<td>61.838</td>
<td>46.933</td>
<td>46.628</td>
<td>44.907</td>
<td>44.913</td>
</tr>
<tr>
<td>90-91</td>
<td>93.162</td>
<td>100.715</td>
<td>132.411</td>
<td>131.380</td>
<td>61.452</td>
<td>61.730</td>
<td>46.544</td>
<td>46.380</td>
<td>44.862</td>
<td>44.855</td>
</tr>
<tr>
<td>91-92</td>
<td>93.620</td>
<td>94.601</td>
<td>130.918</td>
<td>131.532</td>
<td>61.294</td>
<td>61.622</td>
<td>46.516</td>
<td>46.332</td>
<td>44.845</td>
<td>44.797</td>
</tr>
<tr>
<td>92-93</td>
<td>93.350</td>
<td>88.487</td>
<td>131.920</td>
<td>131.684</td>
<td>60.940</td>
<td>61.514</td>
<td>46.632</td>
<td>45.884</td>
<td>44.798</td>
<td>44.739</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थान - आर्थिक, भू-वैज्ञानिक, राजनैतिक.
भीतर तलाशिक प्रभाव, वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक.
आर्थिक एवं राजनैतिक संबंधालय, संचालन (रोजना)

प्रभावित रेमोकरण - \[ y = a + bx \]
तहसीलों एवं वर्षों में निराकरण क्षेत्र में वृद्धि हुई अथवा जहां निराकरण क्षेत्र में कमी का प्रतिशत महत्ता कम है। ऐसे स्थिरांकन तो इसका कारण चारू परती भूमि का उपयोग एवं सिंचाई के साथों का विस्तार होना है।

राजनांदगांव जिले में वर्ष 1992-93 में शुद्ध सिंचाई क्षेत्र का शुद्ध बचे गये क्षेत्र का प्रतिशत 13.00 है 1 एवं विभिन्न तहसीलों में यह प्रतिशत इस प्रकार है:- राजनांदगांव में 14.17 प्रतिशत, कवर्मा में 11.44 प्रतिशत, जेठराज में 19.51 प्रतिशत, डोगराड में 20.20 प्रतिशत, चुंबेखान में 25.23 प्रतिशत, गोरखा तहसील में 4.81 प्रतिशत, खोगराँच में 20.45 प्रतिशत एवं बाहराइक सीमी तहसील में 8.36 प्रतिशत है। 2 इस प्रकार स्पष्ट है कि गोरखा तहसील में शुद्ध सिंचाई क्षेत्र का प्रतिशत शुद्ध बचे गये से क्षेत्र से सम्मति कम है। अध्यात्म 4.81 प्रतिशत है। इसी कारण है कि इस क्षेत्र में निराकरण क्षेत्र में कमी का प्रमुख विवरण है। उसी और चुंबेखान तहसील में सिंचाई सम्बन्धी नये-नये क्षेत्र एवं कार्यक्रमों की स्थापना के कारण यहां शुद्ध सिंचाई क्षेत्र का प्रतिशत सम्मति अधिक 25.23 है। अतः निराकरण क्षेत्र में वृद्धि के लिये आवश्यक है कि सिंचाई सुनिश्चित का विस्तार किया जाये।

दो फसलीय क्षेत्र

आद्रित की पूर्व सुधीरी प्रक्रिया का प्रभावित करती है जिले में मासूमी वर्षा सीमित है। मासूम कला अनियम समय में हुई वर्षा से प्राप्त आदर्श दूसरी फसल के लिये लाभदायक होती है। इसी प्रकार शीतकालीन वर्षा से प्राप्त हुई फसल के लिये सहायक रहती है। अतः दूसरी फसल का उत्पादन सम्बन्धी शीतकालीन वर्षा से होता है। फसल प्रतिपुष्ट भी दुग्रहली क्षेत्र के विस्तार के लिये महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जिन क्षेत्रों में रुपना, अरहर एवं देल से पकने वाली धान की फसल होती है। वहां राजी नौसम में दूसरी फसल नहीं ली जा सकती। 3

1- अधीनक, भू-अधिशाख, राजनांदगांव।
2- - वही -
3- हरिन मारिड - "एशिया परियोजना, वन्य विज्ञान संस्थान, न्यू दिल्ली 1979, पृष्ठ 25 से 30.
दोसलीय प्रक्रिया कृषि की आदर्श स्थिति को प्रकट करती है। वस्तुतः दोहरी
फसल प्रक्रिया कृषि की प्रगति का सुचारु है। वहीं दूसरी ओर यह क्रमसेत्य के हित में अधिक
मित्रत्वीय एवं लाभदायक है। दोहरी फसल प्रक्रिया भूमि की उत्प्रेरणा को बनाये रखने में
भी सहायक होती है, क्योंकि खेती में बचे हुए फसलों के आवश्यक का भूमि की संरचना
एवं गुण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

भूमि एक सीमित संसाधन है जिसके कारण उसमें बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान्नों
की पूर्ति के लिये विस्तृत खेती की सम्भावनायें सीमित है। लेकिन गहरी खेती का क्षेत्र काफी
विद्यमान है। आत: सिंचाई के साधनों का विस्तार करके हमें, जिस भूमि पर एक फसल
होती है उस पर दो या अधिक फसलें उगाने चाहिये और प्रति एकड़ पेयज्य क्षेत्रीय चाहिये। २
राजगंगाधर जिले में सकल कृषि क्षेत्र 106.23 हजार हेक्टर क्षेत्र ऐसा है जिस पर एक से
अधिक फसल बुधाई होती है। यह सम्पूर्ण फसल क्षेत्र का मात्र 17.23 प्रतिशत है। ३
मध्यप्रदेश में एक से अधिक फसलें उगाने योग्य क्षेत्र का प्रतिशत सकल क्षेत्र गया क्षेत्र से 16.06 प्रतिशत हैं ।
तथा भारत में इसका प्रतिशत 21.31 है। ५ आत: स्थपत्न है कि मध्यप्रदेश एवं राजगंगाधर
जिले में भारत की तुलना में दो फसली क्षेत्र कम है लेकिन राजगंगाधर की अग्रणी राजगंगाधर
जिले में दो फसली क्षेत्र 1.67 प्रतिशत अधिक है। किंतु राजगंगाधर जिले में इसकी
प्रगति अत्यावश्यक रही है। जैसे कि सारणी क्रमांक अ-3.22 से स्थपत्न हैं।

सारणी क्रमांक अ-3.22 में वर्ष १९७३-७४ से १९८२-८३ तक राजगंगाधर जिले
में दो फसली क्षेत्र एवं उनकी प्रगति को दिखाया गया है। सारणी से स्थपत्न है कि जिले में
इस दशक के अन्तर्गत दो फसली क्षेत्र में ऋणात्मक प्रगति रही है। जिले में इस दशक के

1- कुमार डॉ० ग्रंथ "मध्यप्रदेश", म090 हिन्दी प्रथ
       अकादमी 1990, पृष्ठ 180 से 190.
2- देयकानल सम्पदा व नामुमकिन लकीनायापन - "भारतीय अर्थव्यवस्था", प्रकाशन -
       लक्षमीनारायण अनुसार अस्पताल मार्ग, आधुनिक 1969, पृष्ठ 158.
3- जिला साहित्यकृति पुस्तिका, साहित्यकृति कार्यक्रम, राजगंगाधर वर्ष 1993, पृष्ठ 17.
4- अयुक्त, मध्य-अमिलत एवं कब्ज़ामत म090 साहित्य, म090 साहित्यकृति संस्करण 1994,
       पृष्ठ 44-45.
5- एसीकटर रिपोर्ट इन हालाता, वाशिंग XLVI (12), मार्च 1992.
सारणी क्रमांक अ-3.22
राजनांवर्ग में दो-फलस्वतिक क्षेत्र एवं उनकी प्रभृति
(हजार देसीतर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>दो-फलस्वति क्षेत्र</th>
<th>प्रभृति मूल्य</th>
<th>वर्ष</th>
<th>दो-फलस्वति क्षेत्र</th>
<th>प्रभृति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1973-74</td>
<td>126.86</td>
<td>120.022</td>
<td>1983-84</td>
<td>137.39</td>
<td>136.834</td>
</tr>
<tr>
<td>1974-75</td>
<td>128.12</td>
<td>118.906</td>
<td>1984-85</td>
<td>124.70</td>
<td>132.204</td>
</tr>
<tr>
<td>1975-76</td>
<td>129.38</td>
<td>117.790</td>
<td>1985-86</td>
<td>141.07</td>
<td>127.575</td>
</tr>
<tr>
<td>1976-77</td>
<td>81.05</td>
<td>116.674</td>
<td>1986-87</td>
<td>124.70</td>
<td>122.945</td>
</tr>
<tr>
<td>1977-78</td>
<td>123.81</td>
<td>115.558</td>
<td>1987-88</td>
<td>140.56</td>
<td>118.315</td>
</tr>
<tr>
<td>1978-79</td>
<td>129.25</td>
<td>114.442</td>
<td>1988-89</td>
<td>94.25</td>
<td>113.685</td>
</tr>
<tr>
<td>1979-80</td>
<td>73.32</td>
<td>113.326</td>
<td>1989-90</td>
<td>80.75</td>
<td>109.055</td>
</tr>
<tr>
<td>1980-81</td>
<td>119.45</td>
<td>112.210</td>
<td>1990-91</td>
<td>110.54</td>
<td>104.425</td>
</tr>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>117.02</td>
<td>111.094</td>
<td>1991-92</td>
<td>102.89</td>
<td>99.796</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>122.52</td>
<td>109.978</td>
<td>1992-93</td>
<td>106.23</td>
<td>95.166</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थोत - अधीशक, भू-अभीलेख, राजनांवर्ग।
प्रभृतिमान समीकरण - $y = a + bx$

अन्तर्निध दो-फलस्वति क्षेत्र में 3.42 प्रतिशत की कमी अप्री. प्रतिशत वृद्धि दर यह मात्र है कि
यह कमी 1979-80 में स्वापचक 43.27 प्रतिशत रही एवं 1981-82 में समस्ते कम
2.03 प्रतिशत रही. दूसरी ओर वर्ष 1974-75, 1975-76, 1977-78, 1978-79,
1980-81 एवं 1982-83 में प्रतिशत वृद्धि दर घनत्वक रही है. इन वर्षों में वर्ष 1980-81
में स्वापचक 62.92 प्रतिशत एवं समस्ते कम वर्ष 1975-76 में 0.98 प्रतिशत दो-फलस्वति
क्षेत्र में वृद्धि हुई.
ग्राफ नं: 3.9 राजनौँदलें विवेक में दो फसली क्षेत्र एवं उसकी प्रभृति।
वर्ष, 1973-74 से 1992-93 तक।

वर्ष 1973 से 1993 तक के दशकों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि दो-फसली क्षेत्र कम हुआ लेकिन वर्षों दशक की तुलना में दूसरे दशक में यह कमी 19.26 प्रतिशत अधिक आयी। इस कमी का मुख्य कारण खाद के दशक में वर्षों की कमी थी लिएके कारण भूमि नमो कम रही और कृषक दूसरी फसल के लिए तैयार न हो सके। खाद एवं उत्तरस्रों के कम प्रयोग से भी दो-फसली क्षेत्र प्रभावित हुआ।

किसे की विभिन्न तहसीलों में दो-फसली क्षेत्र

सारणी क्रमांक अ-3.23 में वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में किसे की विभिन्न तहसीलों में दो-फसली क्षेत्र की प्रूढ़िति को स्थायित्व गया है। सारणी से स्पष्ट है कि राजनांदगांव, कवर्य एवं खौरग राबी तहसीलों में दो-फसली क्षेत्र की प्रूढ़िति क्रमांक रही है। वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में राजनांदगांव तहसील में 18.18 प्रतिशत, कवर्य तहसील में 12.24 एवं खौरग 61.57 प्रतिशत तक की कमी दो-फसली क्षेत्र में आयी। राजनांदगांव एवं खौरग तहसील में इस कमी का कारण अन्य कारणों के अतिरिक्त इन तहसीलों का मनोवैज्ञानिक भी है। इस दशक में प्रतिशत वृद्धि दर की गणना करने पर स्पष्ट है कि विभिन्न वर्षों की तुलना में वर्ष 1977-78 में राजनांदगांव, कवर्य एवं खौरग तहसीलों में सथायिक प्रतिशत वृद्धि दर क्रमशः 27.04, 35.36 एवं 31.26 प्रतिशत रही है तथा सथायिक प्रति फसल क्षेत्र वर्ष 1978-79 में राजनांदगांव तहसील
प्रति के विभिन्न वर्षों में दो-फलकी एवं उसकी प्रृति

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>उन्नासकक्ष</th>
<th>प्रृति</th>
<th>कर्मच</th>
<th>प्रृति</th>
<th>थोपक्ष</th>
<th>प्रृति</th>
<th>दोनकक्ष</th>
<th>प्रृति</th>
<th>ज्ञातिय</th>
<th>प्रृति</th>
<th>पौराक</th>
<th>प्रृति</th>
<th>भेष्य</th>
<th>प्रृति</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>73-74</td>
<td>65.334</td>
<td>59.005</td>
<td>20.104</td>
<td>19.046</td>
<td>35.427</td>
<td>35.349</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>74-75</td>
<td>60.060</td>
<td>58.782</td>
<td>18.920</td>
<td>19.036</td>
<td>32.620</td>
<td>20.886</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>75-76</td>
<td>54.800</td>
<td>58.559</td>
<td>17.740</td>
<td>19.026</td>
<td>29.809</td>
<td>19.776</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>76-77</td>
<td>43.640</td>
<td>58.335</td>
<td>14.060</td>
<td>19.015</td>
<td>23.350</td>
<td>18.666</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>77-78</td>
<td>55.440</td>
<td>58.112</td>
<td>19.060</td>
<td>19.005</td>
<td>30.650</td>
<td>17.555</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>78-79</td>
<td>67.240</td>
<td>57.888</td>
<td>24.060</td>
<td>18.995</td>
<td>37.950</td>
<td>16.445</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>79-80</td>
<td>65.290</td>
<td>57.665</td>
<td>22.010</td>
<td>18.985</td>
<td>36.850</td>
<td>15.334</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>80-81</td>
<td>63.340</td>
<td>57.442</td>
<td>20.360</td>
<td>18.975</td>
<td>35.750</td>
<td>14.750</td>
<td>14.224</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>81-82</td>
<td>53.009</td>
<td>57.218</td>
<td>15.770</td>
<td>18.964</td>
<td>21.575</td>
<td>13.114</td>
<td>14.418</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>12.308</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>82-83</td>
<td>53.450</td>
<td>56.995</td>
<td>17.640</td>
<td>18.954</td>
<td>13.616</td>
<td>12.003</td>
<td>15.006</td>
<td>-</td>
<td>10.313</td>
<td>-</td>
<td>12.507</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोतः: अध्यापक, मू-अभिलेख, ग्रन्थदाता।

जिला सदियों की पृतिव्य, 1973-74 से 1982-83 तक।

अध्यापक एवं सदियों की संघटनक्षम, मोक्ष (मूर्त)

प्रृतिनिष्ठ घटक = \( y = a + bx \)
में 67.24, कर्नाथ में 24.06 एवं खेरागढ़ तहसील में 37.95 हजार घरकार रहां हैं। अतः कहा जा सकता है कि वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दशक में 1977-78 एवं 1978-79 का वर्ष दो-फसली क्षेत्र के लिए सबसे अच्छा वर्ष रहा है तथा 1976-77 का वर्ष दो-फसली क्षेत्र के लिए सबसे बुरा वर्ष रहा है; क्योंकि इस वर्ष सभी तहसीलों में दो-फसली क्षेत्र में कमी आयी। इस वर्ष रमणादेव तहसील में 43.64, कर्नाथ में 14.06 तथा खेरागढ़ तहसील में 23.35 हजार घरकार क्षेत्र में दो-फसली कृषि हुई।

इसी प्रकार सरायी क्रमांक अ-3.24 में वर्ष 1982-83 से 1992-93 तक के दशक में विभिन्न तहसीलों के दो-फसली क्षेत्र एवं उसकी प्रौद्योगिकी को दिखाया गया है। सरायी से स्पष्ट है कि छूटवाद तहसील को छोटाकर अन्य सभी तहसीलों में दो-फसली क्षेत्र में कमी आयी। यह कर्नाथ रमणादेव तहसील में 52.13, कर्नाथ में 16.86, खेरागढ़ तहसील में 34.10, खेरागढ़ में 29.47 एवं मोहला तहसील में 60.68 प्रतिशत आयी है। रमणादेव एवं मोहला तहसील में दो-फसली क्षेत्र में बड़ी मात्रा में कमी आयी का कारण इन तहसीलों का बोंगमांज का अभिव्यक्ति ना है फिर भी छूटवाद को छोटाकर सभी तहसीलों में इस दशक में कमी आयी है। यहां कमी का मुख्य कारण सिंचाई के साधन एवं वर्ष की कमी है। छूटवाद में दो-फसली क्षेत्र में वृद्धि की प्रौद्योगिकी स्पष्ट होती है। इसका मुख्य कारण छूटवाद में सिंचाई समस्या नई कार्यस्थलों की स्थापना तथा अन्य सिंचाई क्षेत्र लगभग शुद्ध बने गये क्षेत्र का 25.25 प्रतिशत क्षेत्र है। अत: यहां दो-फसली क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

इस दशक में प्रतिशत वृद्धि दर द्वारा विभिन्न तहसीलों के दो-फसली क्षेत्र का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि दो-फसली क्षेत्र में सार्वजनिक वृद्धि वर्ष 1985-86 में कर्नाथ तहसील में 34.92 प्रतिशत एवं मोहला तहसील में 22.73 प्रतिशत हुई तथा रमणादेव तहसील में 17.63, खेरागढ़ में 3907, खेरागढ़ में 19.23, छूटवाद में 34.92 प्रतिशत की वृद्धि वर्ष 1987-88 में हुई तथा वर्ष 1986-87 में रमणादेव तहसील में 44.43 प्रतिशत, कर्नाथ तहसील में 32.37, खेरागढ़ में 47.49, खेरागढ़ में 34.18, छूटवाद में 35.28 एवं मोहला तहसील में 45.75 प्रतिशत से दो-फसली क्षेत्र में कमी आयी। अतः स्पष्ट है कि दो-फसली
### सारखा तालिका त-3.24

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>राजनालिन</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>कव्या</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>खप्पा</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>प्रपत्र</th>
<th>प्रपत्र</th>
</tr>
</thead>
</table>

रचन - अदीक्षक, पृ-विभाग, राजनालिक।

निर्देशण आंशिक रूपसे, वर्ष 1983-84 से 1992-93 तक।

अर्थिक एवं संचालकी संकल्पना, निर्देशन (भाषा)

प्रकृतिक रूपसे, आंशिक रूपसे, निर्देशन (भाषा)

### परीक्षण तालिका

\[ y = a + bx \]
क्षेत्र के इकाइयों से 1985-86 एवं 1987-88 का वर्ष अच्छा रहा एवं 1986-87 का वर्ष सफल बुद्ध; क्योंकि इस वर्ष न केवल जिले में बलिक सभी तहसीलों में दो-फसली क्षेत्र में कमी आयी।

दो-फसली क्षेत्र में ब्रीम का मुख्य कारण सिंचाई शंकर एवं वर्षा की कमी है। निम्न वर्ष क्षेत्र में वर्षा की कमी होती है उस वर्ष उस क्षेत्र में दो-फसली क्षेत्र बड़ा जाता है अलग जीर्ण दो-फसली क्षेत्र में वृद्धि नहीं हो पाती है। वर्तमान में खण्डीय वर्षा अधिक होती है अर्थात कुछ भाग में वर्षा होती है और कुछ भाग में नहीं। यही कारण है कि तहसील का यह क्षेत्र जहां वर्षा अधिक हुई है दो-फसली रहता है और वह क्षेत्र जहां वर्षा नहीं हो पाती इससे बाहुल्य हो जाता है। संख्या में कह सकते हैं कि दो-फसली क्षेत्र पूर्ण। वर्षा पर निर्भर रहता है।

भिन्नता फसल प्रक्रिया

यह फसलों की संकल्पना फेरे-बदल की क्रिया है जिसमें दो या अधिक फसलों एक ही समय या अलग-अलग समय में बैठी जाती है। भिन्नता फसल प्रक्रिया का लाभकारी पहलू फसलों में पेरे-बदल है। विशेषकर उस समय जब दाल की फसलें अन्य फसलों के साथ बैठी जाती है। यह क्रिया मूलम, श्रम, उर्जा तथा पानी के आवश्यक उपयोग को समाय बनाती है। साथ ही फसलों को उद्धार एवं निषेधान्त उपादन करती है। कुछ फसलों के छोटे आकार होने के कारण जीतने के लिये आवश्यक प्रयोग क्रिया के फसलों के उत्पादन में आतंकन नहीं है। इसलिए यह भिन्नता फसलों को अधिक पसन्द करते हैं जो उन्हें बेहतर से कुछ अतिरिक्त फसल प्राप्त करने का अवसर देती है। राजस्थान जिले में मुख्यतः धान-अरहर, सोयाबीन-अरहर, धान-उड़द, धान-मूंग, धान-कुली आदि की भिन्नता फसल ही जाती है।

$"`
\$\$
\$\$\$
\$\$\$\$
\$\$\$\$\$
भारतवर्ष समग्र जनसंख्या और भौगोलिक तूफान से बांध देखा है। इतना ही नहीं आदेशार्थी जनसंख्या की दृष्टि से पृथिवी, अफ्रीका, आध्यात्मिक अमेरिका की तुलना में आदेशार्थियों की जनसंख्या सर्वाधिक है। 1 जिस प्रकार भारत दुनिया में आदेशार्थी जनसंख्या थाला एक बांध देखा है, उसी प्रकार वन्यजन्तु में बिभिन्न राज्यों की तुलना में सर्वाधिक आदेशार्थियों की जनसंख्या रहती है। 2

राजनांदगंगा जिले के कुल जनसंख्या 1991 की जनगणना अनुसार 1439951 है। जिसमें अनुपूर्ण आदेशार्थीयों की जनसंख्या 362355 है जो कि कुल जनसंख्या का 25.16 प्रतिशत है एवं अनुपूर्ण आदेशार्थीयों की जनसंख्या 148018 है, जो कुल जनसंख्या का 10.28 प्रतिशत है। जिले की विकासश्रेणी चौथी, मोहल्ला, मानपुर में आदेशार्थियों की जनसंख्या 50 प्रतिशत से अधिक है। चौथी में 51.74, मोहल्ला में 70.96 एवं मानपुर में 74.85 प्रतिशत है। 3 विशेषकर मोहल्ला व मानपुर में इनकी संख्या सबसे अधिक है तथा विकासश्रेणी छुरिया, दोरायाँ, धरारां एवं मोहल्ला में 20 प्रतिशत से अधिक आदेशार्थी जनसंख्या है। जिले में सबका रूप से गोड़, कंवर, हल्दा, भील, बंग, मांडो, पालडी, फ्रान्स, अनेक आदेशार्थियों विवाह करती है। भारत शासन की नीति के अनुसार वर्ष 1977-78 में तीन विकासश्रेणी चौथी, मोहल्ला, मानपुर को मिलाकर आदेश जाति लघु परियोजना चौथी का निर्माण किया गया। 4 वाद में स्वास्थ्य के परियोजनास्वरूप जिले के दूसरे विकासश्रेणी जैसे छुरिया, धरारां, मोहल्ला में आदेशार्थी बाहुल्य ग्राम समूह को मिलाकर चौथी लघु परियोजना का दर्जा बढ़ाकर चुनौत

1- जैन, कुर्मन एवं मेहरोत, जि.एस. भारत की संस्कृतिक विराट, साहित्य भवन अनुभव 1991, पृष्ठ 60, 61.

2- पाल्मकार, चन्द्रमौलन - आदेशार्थी बाहुल्य जाति विकास, नर्तन मुंबई सेंटर, इलाहाबाद 1986, पृष्ठ 17.

3- जिले साहित्यको पुरस्कर, जिल कार्यकाळ राजनांदगंगा स्तंभ जनगणना 1991, पृष्ठ 13-14

4- एकीकृत आदेश जाति विकास परियोजना, राजनांदगंगा रिपोर्ट पृष्ठ 4.
किया गया। इस प्रकार गठित परियोजना को एकीकृत आदिद जाति क्षेत्रीय विकास परियोजना राजनांदगंज के नाम से जाना जाता है। परियोजना में पाये जाने वाली जनजाति की जनसंख्या निम्नजन्य हैंः——

### सारणी क्रमांक ब–3.1

एकीकृत आदिद जाति क्षेत्रीय विकास परियोजना के अन्तर्गत जनजाति एवं जनसंख्या

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र0</th>
<th>जनजातियों के नाम</th>
<th>कुल जनसंख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>गृहें</td>
<td>160126</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>कंवर</td>
<td>26126</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>हर्ष</td>
<td>36710</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>भील</td>
<td>71</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>बेग</td>
<td>12457</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>मांझी</td>
<td>120</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>पास्जी</td>
<td>18</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>प्रधान</td>
<td>309</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>अन्य</td>
<td>561</td>
</tr>
</tbody>
</table>

योग — 236498

(उपरेखित जनजाति में से बेग जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति मानी जाती है)

स्वोहा — एकीकृत आदिद जाति क्षेत्रीय विकास परियोजना रिपोर्ट 1996, राजनांदगंज जिला

आंदोलन का समूह समाज अपनी क्रियाशीलता की वजह से निर्देश विलंबित और अध्ययन का विषय हो रहा है। लगभग सभी जनजातियों में उनकी उपस्थिति के बरे में प्रोफेसर्स के दिशानुसार दिखती हैं। इस उपस्थिति में वे अपने देश की विशिष्ट भूमिका मानते हैं तथा इसके प्रति तुच्छ आश्चर्य भी रखते हैं। प्रभ. सभी जातियों के लोग समस्त पहले जनम लेने वाले पुरुष
को अपना आदि पितृर मानते हैं। प्रकृति के अधिकांश चीजों को वे देव के यज्ञदान की तरह स्वीकार करते हैं। शायद इसलिए प्रकृति से उनका महत्व भाव और उपकार की भवनात्मक रिस्ता है।

आद्विशायफ की वेश-पूजा और रंग पतन्य चित्ताकर्षक लक्ष्य है। वे चावड़ी, कांस, पेपतल, कृषी और टांबे के गहने पहनते हैं। वन बालवें अपने गले में भोजनों की भिन्न-भिन्न नक्षत्रों दायर बालवें पहनती है। नैसर्गिक करण से स्वयं की स्वातिक संबंधत है।

इसके अलावा आद्विशायियों में गुरुने उनका स्वयं स्वातिक आयुष्य है। आद्विशायियों के यह मूल संदेह के उपकरण अवलोक्त होते है।

आद्विशायियों का आर्थिक जीवन उनकी भौगोलिक परिस्थितियों से निर्भरित होता है। आर्थिक कारण जो जमीन, जनन, वस्तुएं और पानी से जो मिला जाता है उससे काम चलाते हैं। इसके आर्थिक जीवन की दृष्टि में वह अर्थव्यवस्था यह है कि समृद्धिक रूप से मछुँ मराला, शिकार करता, पर बचने आदि ये लोग एक साथ मिलकर करते हैं। वर्तमान में ये आद्विशाय समृद्धि रूप से कृषि कार्य भी करने लगे हैं। इनका आर्थिक, समाजिक और धार्मिक जीवन ऐसी निरंतर रंगे हैं कि उन्हें अलान-अलान करके देखना युक्तिहीन नहीं है।

आद्विशायी अपने धर्म और आर्थिक विश्वासों के प्रति महत्व दुध है। अल्पता सुगमिता समाज व्यवस्था आद्विशायी समाज की विशेषता होती है। आदि समाज में किसी व्यक्ति विशेष के नाम के रूप से प्रकृतिक वस्तुएं को ही धार्मिक विश्वास का आधार बना गया है और प्रकृतिक वस्तुएं की पूजा की जाती है। जैसे-सूर्य, चंद्रमा, तारे, पेड़, पर्वत, तालाब आदि। इसी वज़न में छूटिया ग़ज़ लने की जननातियां देवी-देवताओं के पूजन पश्चात फिरतों की आताओं का पूजन करते हैं।

प्रदेश की सबसे बड़ी जननाति ग़ज़ है जिसमें भक्ताव, जातिवाद और आर्थिक वस्तुएं की समीक्षित अवधारणा पर जीती है। प्रदेश के जातीय भोजन बहुल आद्विशायी अपनी निजी धार्मिक मान्यताओं के आधार पर अपनी गुण समाजिक व्यवस्था का जीवन और उपकरण हुए हैं।

1- उपेन्द्र हरिस्चंद्र - भारतीय जननातियां, समाजिक विश्वास हिन्दी रचना केन्द्र, राजस्थान भवनात्मक, जयपुर, पृष्ठ 99-100.
2- बहुल भारतीय सूर्यक्षेत्र - छूटिया 1940 में 1947-1991, पृष्ठ 246 देख 257.
आनंदी के बाद भारतीय संविधान के अनुसार 46 में आदिवासियों को ऊंचा उठाने एवं उनके शोषण को समाप्त करने का संकल्प किया गया है। मध्यप्रदेश शासन भी अपने संस्थापनक दायित्व को पूरा करने के लिये कृत्त संकल्प है। राज्य के समस्त विकास विभाग इसके विकास के प्रति जागरूक हैं।

इस प्रकार आदिवासियों की अपनी सम्पत्ति व संस्कृति धरती है और वे उसी के अनुसार जीवन निर्वाच करते हैं। अतः स्पष्ट है कि गैर आदिवासियों एवं आदिवासियों के धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाकलाप भिन्न होते हैं। गैर आदिवासी क्षेत्र की तुलना में आदिवासी क्षेत्र विकास की दृष्टि से काफी पिछड़े हुए हैं। यही कारण है कि शासन श्री आदिवासियों एवं आदिवासी क्षेत्र के विकास के लिये कई योजनाओं बनाई हैं। जैसे- स्वरूपनगर योजना, नवीनता आवास योजना, बुद्धधर्म योजना, जलजीवन योजना, स्वास्थ्य योजना, लघु उद्योग योजना, मित्र शेअर योजना, सहकार योजना, बजार योजना, रस्ता योजना, साहि योजना आदि। इन योजनाओं के साथ कहीं तक अनुसूचित जाति एवं जनजाति के व्यक्तियों एवं श्रेणियों को मिला है तथा उन क्षेत्रों में भूमि उपयोग प्रतिस्पर्ध का प्रयोग किया गया है। इस बात को स्पष्ट करने के लिये अनुसूचित जाति एवं जनजाति क्षेत्र के रूप में गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र के भूमि उपयोग प्रतिस्पर्ध एवं उसकी प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिस्पर्ध का तुलनात्मक अध्ययन के अनुसार व भूमि उपयोग के उपरोक्त क्रियाश्रृंखला के अनुसार वन क्षेत्र, अग्नि कृषि भूमि, अन्य अग्नि कृषि भूमि, कृषि योग्य पृष्ठ (भक्ति) भूमि, परती भूमि एवं निर्माणस्तर क्षेत्र दो क्षेत्र के अन्तर्गत किया गया है।

1- प्राचीन आदिव जाति श्रेणी के विकास परियोजना रिपोर्ट, राजनांदगंज।
येर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में बन क्षेत्र

प्रारंभ से ही आदिवासियों का प्रकृति से कुछ उत्साह एवं उपकार की सत्तानुपात रिश्ता है। प्रकृति के अभिक्रिया चीजें को नै देव वरदान की तरह ही दीक्षित करते हैं। इस आदि समाज में प्रकृति के बस्तुओं को ही धार्मिक निःशस्त्र माना गया है। उप, चन्द्रमा, तार, पहाड़, जंगल, नदियां, तालाब आदि की पूजा की जाती है। आदिवासियों का आर्थिक जीवन उनकी भौगोलिक परिस्थितियों से निर्भरित होता है। आस-पास के जंगल, नदी, पहाड़ और पक्षियों से जो मिला जाता है उससे काम चला लेते हैं। इससे स्पष्ट है कि आदिवासियों का बनों के अवूँ समक्ष होता है एवं वनों के द्वारा ही उनकी आर्थिक अवरक्तताओं कोटी, कपड़ा और मकन की पूर्ति हो जाती है। चार, खाद, साल, टिक, महा, लें-लेंटा, जी-बुरी, हर्ट, व्यावस, अवस्था आदि वनों के द्वारा ही उनका भरण-पोषण मिलाने से हो जाता है किन्तु वर्तमान में धीरे-धीरे नगरीय समस्या का प्रभाव उन तक पहुँचने लगा है और उसे उनके प्रभावित होकर शहरी क्षेत्र में कदम रख रहे हैं। भारत एवं महादेश सरकार भी उनके इस प्रयास में दीक्षा योगदान देने हेतु आदिवासियों का कल्याण योजना आरम्भ की है। इन कल्याणकारी योजनाओं के बहुत भी जनजातियों नियुक्त ग्रामीण बहुत आमदार वाहन क्षेत्र है। जहां येर आदिवासी क्षेत्र में शहरी प्रभाव योजा महत्ता रखते हैं। उनके कारण वनस्पति में समानता परिवर्तन की प्रकृति परिवर्तित होती है किन्तु आदिवासियों के शहरी प्रभाव नरम होने के कारण वहां बन भूमि में परिवर्तन की प्रृति में सहलिलक परिवर्तन देखने को नहीं मिलते हैं।

सारणी ३-३.२ में जनजातियों नियुक्त के येर आदिवासी क्षेत्र एवं आदिवासी क्षेत्र में बन क्षेत्र की प्रृति को दर्शाया गया है। सारणी में आदिवासी क्षेत्र के अन्तर्गत अन्य चीजें, मोहला, मनपुर परिवहन एवं परिवर्तन परिवर्तन के शहर बन क्षेत्र को प्राधिकृत किया गया है एवं जनजातियों नियुक्त के अन्तर्गत बन क्षेत्र को निर्माण किया गया है एवं राजनीतिक अन्य वन परिवहन की जैसे- गाँव, खेती, खेती, राजनय, घाट, तराई, सहस्रपुर लोकवर एवं रेलवे विभाग के येर आदिवासी वन क्षेत्र में सहमिलक है।
### सारणी क्रमांक भ-3.2

भिले के गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में वन क्षेत्र एवं उनकी प्रसृति वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक की अवधि में (हज़ार हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>गैर आदिवासी क्षेत्र में वनक्षेत्र</th>
<th>प्रसृति मूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र में वन क्षेत्र</th>
<th>प्रसृति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1973-74</td>
<td>279.161</td>
<td>270.819</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1974-75</td>
<td>279.161</td>
<td>274.637</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1975-76</td>
<td>279.161</td>
<td>278.455</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1976-77</td>
<td>279.161</td>
<td>282.273</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1977-78</td>
<td>279.161</td>
<td>286.091</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1978-79</td>
<td>279.161</td>
<td>289.909</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1979-80</td>
<td>279.161</td>
<td>293.729</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1980-81</td>
<td>309.161</td>
<td>297.545</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>309.161</td>
<td>301.363</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>309.161</td>
<td>305.181</td>
<td>117.839</td>
<td>118.000</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्पेशल - सामान्य वन मण्डल राजनीतिस्थ, क्षेत्रों एवं पानबारस
प्रतियोजना मण्डल के प्रतियोजनों पर आधारित.

प्रसृतितमाण समीकरण - \( Y = a + bx \)

सारणी क्रमांक भ-3.2 में वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के वनक्षेत्र (मूल्य) एवं उसकी प्रसृति को दर्शाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि इस दर्शक में गैर आदिवासी क्षेत्र में वृद्धि की प्रसृति रही है। वर्ष 1973-74 में गैर आदिवासी क्षेत्र में वन भूमि का प्रतिशत 25.16 रहा है जो वर्ष 1982-83 में बढ़कर 27.92 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार वर्ष 1973-74 से 1982-83 तक के दर्शक में गैर आदिवासी क्षेत्र में 10.75 प्रतिशत की वृद्धि वन भूमि उपयोग में हुई। दूसरी ओर वर्ष 1973-74 में आदिवासी क्षेत्र में वनभूमि का क्षेत्र
10.61 प्रतिसत या जिसमें वर्ष 1982-83 तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ अर्थात् इस दशक में आदिवासी क्षेत्र में वनभूमि में परिवर्तन की प्रमुखता पूरा अर्थात् रियार खी. गैर आदिवासी क्षेत्र में वनभूमि उपयोग में बढ़ता का भूमिका कारण राजनीतिक समाजक वन मण्डल का उद्धृत हो।

पिछले पल्सर दृष्टि वन मण्डल का कुछ क्षेत्र राजनीतिक समाजक वन मण्डल के अनुगति सम्मिलित कर लिया गया।

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>गैर आदिवासी क्षेत्र में वनक्षेत्र</th>
<th>प्रवृति मूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र में वनक्षेत्र</th>
<th>प्रवृति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1983-84</td>
<td>310.861</td>
<td>312.410</td>
<td>117.839</td>
<td>117.210</td>
</tr>
<tr>
<td>1984-85</td>
<td>310.861</td>
<td>311.430</td>
<td>117.839</td>
<td>117.830</td>
</tr>
<tr>
<td>1985-86</td>
<td>310.861</td>
<td>310.450</td>
<td>117.839</td>
<td>118.450</td>
</tr>
<tr>
<td>1986-87</td>
<td>308.864</td>
<td>309.470</td>
<td>120.016</td>
<td>119.070</td>
</tr>
<tr>
<td>1987-88</td>
<td>308.864</td>
<td>308.490</td>
<td>120.016</td>
<td>119.690</td>
</tr>
<tr>
<td>1988-89</td>
<td>307.214</td>
<td>307.510</td>
<td>121.486</td>
<td>120.310</td>
</tr>
<tr>
<td>1989-90</td>
<td>307.214</td>
<td>306.530</td>
<td>121.486</td>
<td>120.930</td>
</tr>
<tr>
<td>1990-91</td>
<td>306.264</td>
<td>305.550</td>
<td>122.436</td>
<td>121.550</td>
</tr>
<tr>
<td>1991-92</td>
<td>302.564</td>
<td>304.570</td>
<td>122.436</td>
<td>122.170</td>
</tr>
<tr>
<td>1992-93</td>
<td>302.564</td>
<td>303.590</td>
<td>122.436</td>
<td>122.790</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थोल - सामाजिक वन मण्डल राजनीतिक, कार्यालय एवं प्रजासत्ताक परिपक्वता मण्डल के प्रतिवेदनों पर आधारित.

प्रवृतिमान समीकरण - \[ Y = a + bx \]

1- राजनीतिक समाजय वन मण्डल द्वारा विषयांशान्ता को भेजी गयी वार्षिक रिपोर्ट, वर्ष 1993.
सारणी क्रमांक व-3.3 में 1983-84 से 1992-93 तक गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में वनभूमि (क्षेत्र) एवं उसकी प्रृथिति को दिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि इस दरार में गैर आदिवासी क्षेत्र के वनरक्षक में कमी आयी। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1983-84 में गैर आदिवासी क्षेत्र में वन क्षेत्र कुल भूमि का 28.01 प्रतिशत रहा है जो वर्ष 1992-93 में पटकर 27.26 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार गैर आदिवासी क्षेत्र में 2.67 प्रतिशत की कमी वनरक्षक में आयी जबकि आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1983-84 में वनरक्षक का प्रतिशत कुल भूमि से 10.61 था जो वर्ष 1992-93 में बढ़कर 11.03 हो गया अर्थात् वर्ष 1983-84 की तुलना में वर्ष 1992-93 में 3.90 प्रतिशत की वृद्धि आदिवासी वन क्षेत्र में हुई।

संशोधन में गैर आदिवासी क्षेत्र में वन भूमि की कमी का मुख्य कारण अतिक्रमणों को स्पष्टीकरण दिया जाता है जिसका प्रभाव वर्तमान में मुख्य रूप से कृषि कार्य के साथ किया जा रहा है तथा दूसरी ओर आदिवासी क्षेत्र में वृद्धि का मुख्य कारण पानामरल फ्रेमेकट के अन्तर्गत अन्य क्षेत्रों से प्राप्त वन भूमि का समन्वय होना है।

गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में ग्रामीण वन

ग्रामीण वनों के तादर्थ उन वन या प्रमाणों से हैं जिनके अन्तर्गत बड़े खाड़ एवं छोटे-छोटे आड़ियों के शहर को शामिल किया जाता है और जिनका सर्वश्रेष्ठ पत्तलार सर्व द्वारा किया जाता है। इन ग्रामीण वनों का गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में प्रृथित होना जाने के लिये इसे गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में विभाजित कर अध्ययन किया गया है।

सारणी क्रमांक व-3.4 में वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक के 12 वर्षों के गैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में ग्रामीण वनों की प्रृथिति दिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि गैर आदिवासी एवं आदिवासी दोनों ही क्षेत्रों में ग्रामीण वनों की प्रृथिति क्रमालग्न रही है। वर्ष 1981-82 में गैर आदिवासी क्षेत्र में ग्रामीण वन का प्रतिशत 32.94 था जो वर्ष 1992-93 में पटकर 34.27 हो गया। इस प्रकार विनुले 12 वर्षों में 3.47 प्रतिशत की कमी हुई ग्रामीण वनों में आयी। दूसरी ओर वर्ष 1981-82 में आदिवासी क्षेत्र में ग्रामीण वन का प्रतिशत कुल वन का प्रतिशत कुल वन से 67.06 था जो घटकर वर्ष 1992-93 में 66.24 प्रतिशत रह गया। इस प्रकार आदिवासी क्षेत्र में भी ग्रामीण वन क्षेत्र में 0.82 प्रतिशत की कमी आयी।
सारणी क्रमांक च-3.4

पैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में ग्रामीण वनक्षेत्र एवं उसकी प्रवृत्ति

वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक की अवधि में

(हजार हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>पैर आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रवृत्ति मूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रवृत्ति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>37.531</td>
<td>37.506</td>
<td>76.896</td>
<td>75.551</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>37.217</td>
<td>37.414</td>
<td>75.364</td>
<td>75.269</td>
</tr>
<tr>
<td>1983-84</td>
<td>37.280</td>
<td>37.322</td>
<td>75.257</td>
<td>74.987</td>
</tr>
<tr>
<td>1984-85</td>
<td>37.209</td>
<td>37.230</td>
<td>75.127</td>
<td>74.705</td>
</tr>
<tr>
<td>1985-86</td>
<td>37.400</td>
<td>37.138</td>
<td>74.896</td>
<td>74.423</td>
</tr>
<tr>
<td>1986-87</td>
<td>37.170</td>
<td>37.046</td>
<td>74.713</td>
<td>74.141</td>
</tr>
<tr>
<td>1987-88</td>
<td>37.137</td>
<td>36.954</td>
<td>71.777</td>
<td>73.859</td>
</tr>
<tr>
<td>1988-89</td>
<td>37.015</td>
<td>36.862</td>
<td>69.770</td>
<td>73.577</td>
</tr>
<tr>
<td>1989-90</td>
<td>36.914</td>
<td>36.770</td>
<td>67.684</td>
<td>73.295</td>
</tr>
<tr>
<td>1990-91</td>
<td>36.670</td>
<td>36.678</td>
<td>74.804</td>
<td>73.013</td>
</tr>
<tr>
<td>1991-92</td>
<td>36.585</td>
<td>36.586</td>
<td>74.674</td>
<td>72.731</td>
</tr>
<tr>
<td>1992-93</td>
<td>36.277</td>
<td>36.494</td>
<td>75.463</td>
<td>72.449</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्नेत - अधीनक, पू-अमिलेख, राजनांदगांव।

निदाल साहित्यकोष पुस्तिका, निदाल साहित्यकोष कार्यलय राजनांदगांव
पर आधारित वर्ष 1980 से 1994 तक।

पैर आदिवासी क्षेत्र एवं आदिवासी क्षेत्र में ग्रामीण वनों की कमी में प्रतीतियों की हुल्ला
करने पर स्पष्ट होता है कि आदिवासी क्षेत्र में 0.35 प्रतिशत ग्रामीण वन में अधिक कमी आयी.
इसका कारण यह है कि प्रारम्भ में आदिवासी वनों पर अधिक निर्भर रहते थे, किन्तु धीरे-धीरे
वनों पर निर्भरता कम होते गयी और ये कुछ पर अधिक ध्यान देने लगे विषय इन क्षेत्रों में
ग्रामीण वन में जो कमी आयी उसका कारण ग्रामीण वन क्षेत्रों का उपयोग कृषि कार्य के लिये
किया जाता है।
अन्यन्त कृषि क्षेत्र (पैर आदिवासी व आदिवासी क्षेत्र के संदर्भ में)

अन्यन्त कृषि क्षेत्र से अभिनंदन उस भूमि से है जो कृषि के लिए उपलब्ध नहीं है, जिनका प्रयोग गैर कृषि कार्य के लिये किया जाता है। जिस पर भवन, सड़क, रेलवे लाइन, उद्योग, नदी नाले आदि हैं तथा इसके अतिरिक्त इसमें बंगर भूमि, टीले, रेंगस्तान आदि भी शामिल किये जाते हैं। अन्यन्त कृषि क्षेत्र की प्रमुखता का अभावन निम्न स्तरीय द्वारा पैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र के संदर्भ में किया गया है।

सारणी क्रमांक 3.5

पैर आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में अन्यन्त कृषि क्षेत्र एवं उनकी प्रमुखता वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक की अवधि में (हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>पैर आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रमुखता मूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रमुखता मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>55.373</td>
<td>58.218</td>
<td>17.675</td>
<td>18.495</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>58.991</td>
<td>58.542</td>
<td>18.371</td>
<td>18.405</td>
</tr>
<tr>
<td>1983-84</td>
<td>60.396</td>
<td>58.866</td>
<td>18.422</td>
<td>18.315</td>
</tr>
<tr>
<td>1984-85</td>
<td>60.458</td>
<td>59.190</td>
<td>18.540</td>
<td>18.225</td>
</tr>
<tr>
<td>1985-86</td>
<td>60.838</td>
<td>59.514</td>
<td>18.577</td>
<td>18.135</td>
</tr>
<tr>
<td>1986-87</td>
<td>61.414</td>
<td>59.838</td>
<td>18.568</td>
<td>18.045</td>
</tr>
<tr>
<td>1987-88</td>
<td>59.485</td>
<td>60.162</td>
<td>16.980</td>
<td>17.955</td>
</tr>
<tr>
<td>1988-89</td>
<td>58.375</td>
<td>60.486</td>
<td>15.387</td>
<td>17.865</td>
</tr>
<tr>
<td>1989-90</td>
<td>57.296</td>
<td>60.810</td>
<td>13.794</td>
<td>17.775</td>
</tr>
<tr>
<td>1990-91</td>
<td>60.957</td>
<td>61.134</td>
<td>18.534</td>
<td>17.685</td>
</tr>
<tr>
<td>1991-92</td>
<td>61.669</td>
<td>61.458</td>
<td>18.517</td>
<td>17.595</td>
</tr>
<tr>
<td>1992-93</td>
<td>63.523</td>
<td>61.782</td>
<td>18.338</td>
<td>17.505</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थल - अधिकृतक, भू-अधिलेख, राजनोदांव.

पिला राज्यस्वकीय पुरस्कार, पिला राज्यस्वकीय कार्यालय राजनोदांव पर अभावित वर्ष 1980 से 1994 तक.
सारणी म-3.5 से स्पष्ट है कि वर्ष 1981-82 में कुल अग्रांत कृषि क्षेत्र का 75 प्रतिशत गैर आंदोलनी क्षेत्र में था जो वर्ष 1992-93 में बढ़कर 78 प्रतिशत हो गया जबकि आंदोलनी क्षेत्र कुल अग्रांत कृषि क्षेत्र का 25 प्रतिशत गैर वर्ष 1981-82 में था जो घटकर वर्ष 1992-93 में 22 प्रतिशत हो गया. इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्ष 1981-82 की तुलना में वर्ष 1992-93 के 12 वर्षों में गैर आंदोलनी क्षेत्र के अग्रांत कृषि क्षेत्र में 3.00 प्रतिशत की वृद्धि हुई एवं आंदोलनी क्षेत्र में 3.00 प्रतिशत की कमी आयी.

सारणी में वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक की स्थिति का अध्ययन करते हुए स्पष्ट होता है कि इन वर्षों में जिले के गैर आंदोलनी क्षेत्र में अग्रांत कृषि की प्रमुखता धारण कर रही है. यह धनालयक प्रमुखता इन वर्षों में 14.72 प्रतिशत रही है. दूसरी ओर आंदोलनी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक के 12 वर्षों में कणालयक प्रमुखता स्पष्ट होती है. जिसका प्रतिशत 0.45 रहा है. इस प्रकार स्पष्ट है कि गैर आंदोलनी क्षेत्र के अग्रांत कृषि क्षेत्र में तेजी से वृद्धि हुई. इस वृद्धि का मुख्य कारण वर्ष 1981 के बाद नगरीय क्षेत्र में वृद्धि जिसके कारण जिले में तेज़ नये नगर गढ़े, घोररोक एवं अन्य नए स्थानों का निर्माण हुआ. नगरीय जनसंख्या में वृद्धि शादी-दुःखियाँ एवं अपरिवर्तनीय होकर गांवों की जनसंख्या नगरों में विस्तार करते लंगी. आवश्यकीय करण- जिसके फलस्वरूप नये-नवे उद्योगों की स्थापना हुई, यातायात के साधनों का विस्तार रहा है. दूसरी ओर आंदोलनी क्षेत्र में अग्रांत कृषि क्षेत्र में कणालयक प्रमुखता रही. इस कमी की प्रमुखता का कारण आंदोलनी क्षेत्रों में नगरीकरण, आवश्यकीय करण का अभाव, शैक्षणिक विकास का निश्चय, यातायात के साधनों का अभाव है. साथ ही आंदोलनी क्षेत्र मुख्य रूप से जंगली व कृषि क्षेत्र होने के कारण यहां गैर कृषि क्षेत्र कम हुआ है. इसके अतिरिक्त इन शैलियों में बड़ी मात्रा में अन्य फ्लाइप नगरों को और हुआ है. इसलिये भी यहां गैर कृषि क्षेत्र में कमी आयी.

अन्य अकृषि क्षेत्र (गैर आंदोलनी व आंदोलनी क्षेत्र के संदर्भ में)

अन्य अकृषि क्षेत्र के अन्तर्गत चारागाह एवं दीनग खाद-शुष्क (जो निराकरण क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आते) शामिल हैं, का अध्ययन गैर आंदोलनी एवं आंदोलनी क्षेत्र के संदर्भ में किया गया है. सारणी म-3.6 के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1981-82 में कुल अन्य अकृषि क्षेत्र का 79.78 प्रतिशत गैर आंदोलनी क्षेत्र में था जो 1992-93 में घटकर
72.71 प्रतिवाद हो गया इस प्रकार वर्ष 1981-82 की सूचना में वर्ष 1992-93 में 7.07 प्रतिवाद की कमी अन्य अकृति क्षेत्र में आयी. दूसरी ओर आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 में अन्य अकृति क्षेत्र का प्रतिवाद कुल अन्य अकृति क्षेत्र से 20.22 था जो 1992-93 में 27.29 हो गया. इस प्रकार 12 वर्षों में अन्य अकृति क्षेत्र 7.07 प्रतिवाद की वृद्धि आदिवासी क्षेत्र में हुई जिसे सारणी म-3.6 में दिखाया गया है.

## सारणी आधार

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>गैरआदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रृथ्वी मूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रृथ्वी मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>51.106</td>
<td>52.945</td>
<td>12.951</td>
<td>13.019</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>53.644</td>
<td>52.955</td>
<td>15.070</td>
<td>13.561</td>
</tr>
<tr>
<td>1983-84</td>
<td>52.953</td>
<td>52.965</td>
<td>15.364</td>
<td>14.103</td>
</tr>
<tr>
<td>1984-85</td>
<td>53.395</td>
<td>52.975</td>
<td>14.608</td>
<td>14.645</td>
</tr>
<tr>
<td>1985-86</td>
<td>53.081</td>
<td>52.985</td>
<td>14.591</td>
<td>15.187</td>
</tr>
<tr>
<td>1986-87</td>
<td>53.459</td>
<td>52.995</td>
<td>14.742</td>
<td>15.729</td>
</tr>
<tr>
<td>1987-88</td>
<td>51.912</td>
<td>53.005</td>
<td>15.023</td>
<td>16.271</td>
</tr>
<tr>
<td>1988-89</td>
<td>51.309</td>
<td>53.015</td>
<td>15.456</td>
<td>16.813</td>
</tr>
<tr>
<td>1989-90</td>
<td>50.665</td>
<td>53.025</td>
<td>15.888</td>
<td>17.355</td>
</tr>
<tr>
<td>1990-91</td>
<td>52.749</td>
<td>53.035</td>
<td>18.895</td>
<td>17.897</td>
</tr>
<tr>
<td>1992-93</td>
<td>52.836</td>
<td>53.055</td>
<td>19.830</td>
<td>18.981</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थल : अधीक्षक, भू-आधार

गितेल शाहिदिकी पुस्तक, जिला शाहिदिकी कार्यकाल राजनांदगंगा पर अध्यापित वर्ष 1980 से 1994 तक.
सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1981-82 तक के वर्षों में गरीबाविदारी क्षेत्र में अन्य अकृष्टि क्षेत्र की प्रतिशत ऊँचाई रही जिसका प्रतिशत 3.38 रहा, जबकि आदिवासी क्षेत्र में अन्य अकृष्टि क्षेत्र में वृद्धि हुई। यह वृद्धि की प्रतिशत 53.11 प्रतिशत रही। इस प्रकार स्पष्ट है कि आदिवासी क्षेत्र में चारागाह एवं दीवार शाह-शुण्ड के क्षेत्र में उत्तर से वृद्धि हुई।

स्पष्ट है कि गरीबाविदारी क्षेत्र में नगरीकरण एवं अधिग्रहण के फलस्वरूप आवासीय परिसर, व्यापारिक परिसर एवं उद्योगों के लिए भूमि उपयोग में वृद्धि के कारण अन्य अकृष्टि क्षेत्र (चारागाह व शाह-शुण्ड) में वृद्धि नहीं हो पाई, जबकि इनके अभाव में एवं सार्कलिक भूमि, बागानों व अमाराइंडों में वृद्धि के कारण अन्य अकृष्टि क्षेत्र (बिक्रेतार चारागाह) में वृद्धि आदिवासी क्षेत्र में उत्तर से स्वास्थ्य (नग) की जमी भी चारागाह क्षेत्र में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण रही है।

कृषि योग्य परत भूमि (गरी, आदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र के सन्दर्भ में)

गरी आदिवासी क्षेत्र एवं आदिवासी क्षेत्र में कृषि योग्य परत (बेकार या व्याख्याता भूमि) का अन्वयन इस उद्देश्य से किया गया है कि इससे यह स्पष्ट हो सके कि गरीआदिवासी क्षेत्र की सुलभता में आदिवासी क्षेत्र में कृषि योग्य बेकार भूमि का उपयोग किया गया है। अन्य तथा अन्य जाने में विस्तार करके ही किया गया है जो अन्य जाने से स्पष्ट हो सकेगा कि आदिवासी क्षेत्र व गरी आदिवासी क्षेत्र में भूमि सुधार कार्यक्रमों का क्रियान्वयन संबंधित के सम्बन्ध में किया गया है।

सारणी क्रमांक ब-3.7 से स्पष्ट है कि वर्ष 1981-82 में गरी आदिवासी क्षेत्र में कृषि योग्य बेकार भूमि का प्रतिशत जिले के कुल कृषि योग्य परत भूमि का 57.54 प्रतिशत था जो वर्ष 1992-93 में बढ़कर 78.25 प्रतिशत हो गयी, जबकि आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 में कृषि योग्य बेकार भूमि का प्रतिशत कुल कृषि योग्य बेकार भूमि से 42.46 था जो वर्ष 1992-93 में 21.75 प्रतिशत हो गयी। जहां तक कृषि योग्य बेकार भूमि की प्रतिशत का प्रति है जो गरीआदिवासी एवं आदिवासी दोनों ही क्षेत्रों में घटी हुई है, जिसे सारणी ब-3.7 में देखा जा सकता है।
प्रति वर्ष ग्रामीण महत्व प्रदान केन्द्रों में कृषि योग्य प्रक्रिया पूर्ण करने वाले अवधि वाले योग्य व्यक्ति की संख्या वर्ष 1981-82 से 1992-93 के बीच अवधि के अनुसार (लाख व्यक्ति में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>ग्रामीण महत्व प्रदान केन्द्रों में कृषि योग्य प्रक्रिया पूर्ण करने वाले अवधि वाले योग्य व्यक्ति की संख्या</th>
<th>प्रमाणी भूमि के मुख्य आदेश</th>
<th>प्रमाणी भूमि के मुख्य आदेश</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1985-86</td>
<td>13.251</td>
<td>13.099</td>
<td>8.705</td>
</tr>
<tr>
<td>1987-88</td>
<td>13.268</td>
<td>12.967</td>
<td>7.537</td>
</tr>
<tr>
<td>1989-90</td>
<td>12.484</td>
<td>12.835</td>
<td>5.161</td>
</tr>
<tr>
<td>1990-91</td>
<td>13.892</td>
<td>12.769</td>
<td>4.856</td>
</tr>
</tbody>
</table>

सारणी क्षमा के बाद

(स्वतंत्र संक्षेप)

लाख राजस्थानी पूर्व, लाख सांस्कृतिक कार्यक्रम राजस्थान के भारत में आयोजित वर्ष 1980 से 1994 तक.

सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक के लाख वर्ष में ग्रामीण महत्व प्रदान केन्द्रों में कृषि योग्य नेविक भूमि की प्रमाणी भूमि की महत्वपूर्ण रही है. वर्ष 1981-82 से 1991-92 तक के वर्षों में कृषि योग्य नेविक भूमि में 12.67 प्रतिशत की कमी आयी किन्तु वर्ष 1992-93 में उस में वृद्धि हुई. दूसरी ओर आदेश विभाग के आदेश में 60.67 प्रतिशत
फ़र्ती भूमि (गैरआदिवासी व आदिवासी क्षेत्र के सन्दर्भ में)

राजनांशवर जिले में गैरआदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में फर्ती भूमि का क्रमांक क्रमांक क्रमांक अध्ययन करने के लिए फर्ती भूमि क्षेत्र को गैरआदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में बाँटा गया है। वर्ष 1981-82 में गैरआदिवासी क्षेत्र में परती भूमि का प्रतिशत कुल परती भूमि से 69.65 था जो वर्ष 1992-93 में बढ़कर 70.95 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि परती भूमि में वर्ष 1981-82 की तुलना में वर्ष 1992-93 में 1.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि वर्ष 1981-82 में आदिवासी क्षेत्र में परती भूमि का प्रतिशत कुल परती भूमि से 30.35 था जो वर्ष 1992-93 में पटकर 29.05 हो गया। इस प्रकार आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 की तुलना में वर्ष 1992-93 में परती भूमि क्षेत्र में 1.3 प्रतिशत की कमी हुई है।

सारणी क्रमांक म-3.8 में वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक परती भूमि का प्रतिशत को जिले के गैरआदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र के सन्दर्भ में दर्शाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक 12 वर्ष में गैरआदिवासी, क्षेत्र की परती भूमि में वृद्धि की प्रमुखता रही। इस प्रमुखता में इन 12 वर्षों में 0.72 प्रतिशत की वृद्धि हुई दूसरी ओर आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक के क्रम में परती भूमि में वृद्धि की प्रमुखता स्पष्ट होती है जो 5.70 प्रतिशत रही।
वर्ग 1981-82 से 1992-93 तक की अवधि में (हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>गैर आदिवासी</th>
<th>प्रूढ़ित मूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रूढ़ित मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>33.268</td>
<td>32.065</td>
<td>16.964</td>
<td>16.783</td>
</tr>
<tr>
<td>1984-85</td>
<td>29.645</td>
<td>32.925</td>
<td>16.103</td>
<td>16.435</td>
</tr>
<tr>
<td>1986-87</td>
<td>33.988</td>
<td>33.785</td>
<td>17.498</td>
<td>16.087</td>
</tr>
<tr>
<td>1987-88</td>
<td>31.923</td>
<td>34.215</td>
<td>15.250</td>
<td>15.913</td>
</tr>
<tr>
<td>1988-89</td>
<td>32.592</td>
<td>34.645</td>
<td>14.177</td>
<td>15.739</td>
</tr>
<tr>
<td>1989-90</td>
<td>38.246</td>
<td>35.075</td>
<td>13.103</td>
<td>15.565</td>
</tr>
<tr>
<td>1990-91</td>
<td>38.850</td>
<td>35.505</td>
<td>15.381</td>
<td>15.391</td>
</tr>
<tr>
<td>1991-92</td>
<td>37.956</td>
<td>35.935</td>
<td>15.418</td>
<td>15.217</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: अधीक्षक, भू-अभिलेख

जिला साइडेन्स कार्यालय, जिला साइडेन्स कार्यालय राजस्थान

पर आधारित. वर्ष 1980 से 1994 तक.

इस प्रकार सारणी से स्पष्ट है कि गैरआदिवासी क्षेत्र के परती भूमि में वृद्धि हुई इस वृद्धि का मुख्य कारण नये-नये उपयोगों की स्थापना, व्यापारी परिसर में वृद्धि, आवासीय परिसर में वृद्धि, भू-खगिण उत्खनन, फस्टर उत्खनन हैं, जिसके कारण इनके आस-पास की भूमि का कोई उपयोग नहीं हो पाता और भूमि परती के रूप में रहती है.
जंगलों की कटाई व भूमि कटाव के कारण भी परती भूमि में वृद्धि हुई साथ ही गैरआदिवासी क्षेत्र के कृषिकर्मों की कमजोर आर्थिक स्थिति एवं भूमि की अस्तर उर्जा-शक्ति के कारण भी परती भूमि का निर्माण हुआ है, दूसरी ओर आदिवासी क्षेत्र में परती भूमि की प्रृथ्वी में कमी हुई, इस कमी का कारण यह है कि इन क्षेत्रों के विकास की ओर शासन का ध्यान अधिक है. अतः शासन ने अपनी आदेश जाति कल्याण योजना के अंतर्गत वर्तमान योजना, जल-जीवन योजना, ग्रामीण योजना1 जैसी योजनाओं के अन्तर्गत लघु सिंचाई सम्बन्धों में विस्तार किया, गरीब व छोटे किसानों को क्रांति उपलब्ध कराये हैं, राजस्वायंक उद्योग एवं चीन तथा ग्रीषमचार व नौवताक दवाईयों उपलब्ध कराये हैं तथा आदिवासी क्षेत्रों में बुरानेवादन भी अधिक मात्रा में हुआ है. वनना योजना के अंतर्गत वननापन के विक्रय की व्यवस्था भी की है. साथ ही नमताकुन क औद्योगिक कर के अभाव में इन खेतों में परती भूमि का विकास नहीं हो पाया. अतः आदिवासी क्षेत्रों में परती भूमि की प्रृथ्वी क्रमशः वर्तमान करी).

निरर्फस्त क्षेत्र (गैरआदिवासी व आदिवासी क्षेत्र के सन्दर्भ में)

राजनांदनांक निरंत एक कृषि प्रवाह निरंत है जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्र का 64.5 प्रतिशत क्षेत्र निरंत है. गंगा के गैर आदिवासी और आदिवासी क्षेत्र में भी कृषि की प्रवाह है. इसके गैर-आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 में जिले के कुल निरर्फस्त क्षेत्र का लगभग 83.91 प्रतिशत क्षेत्र था जो वर्ष 1992-93 में पटकर 83.58 प्रतिशत हो गया. दूसरी ओर आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 में निरर्फस्त का क्षेत्र 16.09 प्रतिशत था जो वर्ष 1992-93 में बढ़कर 16.42 प्रतिशत हो गया. इस प्रकार आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक की अवधि में 3.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि गैरआदिवासी क्षेत्र में 3.3 प्रतिशत की कमी. निम्न सूत्री क्रमांक ब-3.9 में दिखाया गया है.
<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>गैर आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रभृति मूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रभृति मूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1981–82</td>
<td>415.40</td>
<td>421.38</td>
<td>79.67</td>
<td>80.607</td>
</tr>
<tr>
<td>1982–83</td>
<td>419.76</td>
<td>419.86</td>
<td>81.169</td>
<td>80.133</td>
</tr>
<tr>
<td>1983–84</td>
<td>421.45</td>
<td>418.33</td>
<td>81.529</td>
<td>79.659</td>
</tr>
<tr>
<td>1984–85</td>
<td>423.58</td>
<td>416.81</td>
<td>81.680</td>
<td>79.185</td>
</tr>
<tr>
<td>1985–86</td>
<td>424.67</td>
<td>415.286</td>
<td>82.609</td>
<td>78.711</td>
</tr>
<tr>
<td>1986–87</td>
<td>418.265</td>
<td>413.762</td>
<td>80.262</td>
<td>78.237</td>
</tr>
<tr>
<td>1987–88</td>
<td>407.118</td>
<td>412.238</td>
<td>77.787</td>
<td>77.763</td>
</tr>
<tr>
<td>1988–89</td>
<td>397.338</td>
<td>410.714</td>
<td>65.238</td>
<td>77.289</td>
</tr>
<tr>
<td>1989–90</td>
<td>387.570</td>
<td>409.190</td>
<td>58.689</td>
<td>76.815</td>
</tr>
<tr>
<td>1990–91</td>
<td>413.194</td>
<td>407.666</td>
<td>82.059</td>
<td>76.341</td>
</tr>
<tr>
<td>1991–92</td>
<td>411.552</td>
<td>406.142</td>
<td>81.840</td>
<td>75.867</td>
</tr>
<tr>
<td>1992–93</td>
<td>412.608</td>
<td>404.618</td>
<td>81.067</td>
<td>75.393</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: अधीक्षक, भू-अभिलेख
जिला साहित्यिकी पुरस्कार, जिला साहित्यिकी कार्यालय राजनांदगंगाव.
वर्ष 1980 से 1994 तक.

दो फसली क्षेत्र (गैरआदिवासी व आदिवासी क्षेत्र के संदर्भ में)

जब एक ही फसल क्षेत्र (भूमि) में एक से अधिक वर्ष फसल चौकी जाती है तो वह क्षेत्र दो फसलीय या बहुफसली क्षेत्र कहलाता है। गैरआदिवासी क्षेत्र में कमी का मुख्य कारण पत्तें भूमि में बुद्धिव व शहरीकरण की प्रभावित है जिसका कारण आदिवासी क्षेत्र में, जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि है, में निर्प्रभावित क्षेत्र की कुलात्मक प्रभावित का मुख्य कारण विर्यूनता व विभिन्नी का प्रभाव है।

राजनांगांव निलेसे वर्ष 1981-82 में कुल दो फसली क्षेत्र का 89.49 प्रतिशत क्षेत्र गैरआदिवासी क्षेत्र में था जो वर्ष 1992-93 में घटकर 87.12 प्रतिशत हो गया जबकि आदिवासी क्षेत्र में वर्ष 1981-82 में कुल दो फसलीय क्षेत्र का 10.51 प्रतिशत था जो वर्ष 1992-93 में बढ़कर 12.88 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार 1981-82 की तुलना में 1992-93 में गैरआदिवासी क्षेत्र में 2.37 प्रतिशत क्रमशः हुई जबकि आदिवासी क्षेत्र में 2.37 प्रतिशत की बुद्धि हुई। लेकिन निलेसे के अन्तर्गत 1981-82 से 1992-93 तक के वर्षों में दो फसलीय क्षेत्र में किस प्रकार की प्रभावित रही इसे सरणी में दिखाया गया है।

1- देशी सत्यदेव व नक्दुमका लघुनीयाप्रय-भारतीय अर्थव्यवस्था प्रकाशन लघुनीयाप्रय अस्पताल अर्थव्यवस्था मार्ग अनुसार 1969, पृष्ठ 158
### सारणी क्रमांक न-3.10

जिले के गैरआदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र में दो फसलीय क्षेत्र एवं उसकी प्रृतित.

वर्ष 1981-82 से 1992-93 की अवधि में (हेक्टर में)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>गैरआदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रृतितमूल्य</th>
<th>आदिवासी क्षेत्र</th>
<th>प्रृतितमूल्य</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1981-82</td>
<td>104.772</td>
<td>113.497</td>
<td>12.308</td>
<td>12.935</td>
</tr>
<tr>
<td>1982-83</td>
<td>110.025</td>
<td>111.043</td>
<td>12.507</td>
<td>12.765</td>
</tr>
<tr>
<td>1983-84</td>
<td>123.735</td>
<td>108.589</td>
<td>13.659</td>
<td>12.595</td>
</tr>
<tr>
<td>1984-85</td>
<td>111.441</td>
<td>106.135</td>
<td>13.268</td>
<td>12.425</td>
</tr>
<tr>
<td>1985-86</td>
<td>124.782</td>
<td>103.681</td>
<td>16.284</td>
<td>12.255</td>
</tr>
<tr>
<td>1986-87</td>
<td>76.535</td>
<td>101.227</td>
<td>8.834</td>
<td>12.085</td>
</tr>
<tr>
<td>1987-88</td>
<td>95.59</td>
<td>98.773</td>
<td>10.439</td>
<td>11.915</td>
</tr>
<tr>
<td>1988-89</td>
<td>90.91</td>
<td>96.319</td>
<td>8.319</td>
<td>11.745</td>
</tr>
<tr>
<td>1989-90</td>
<td>86.212</td>
<td>93.865</td>
<td>8.199</td>
<td>11.575</td>
</tr>
<tr>
<td>1990-91</td>
<td>98.474</td>
<td>91.411</td>
<td>12.069</td>
<td>11.405</td>
</tr>
<tr>
<td>1991-92</td>
<td>89.857</td>
<td>88.957</td>
<td>13.038</td>
<td>11.235</td>
</tr>
<tr>
<td>1992-93</td>
<td>92.539</td>
<td>86.503</td>
<td>13.683</td>
<td>11.065</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थान- अधीक्षक, भू-अध्यालेख

गिल्ला साधियकी पुलिसको, गिल्ला साधियकी कार्यस्थल राजनांदगंगांव

वर्ष 1980 से 1994 तक

सारणी क्र-3.10 में वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक के 12 वर्षों में राजनांदगंगा जिले के गैरआदिवासी एवं आदिवासी क्षेत्र दो फसलीय क्षेत्र की प्रृतित को दिखाया गया है। सारणी में स्पष्ट है कि वर्ष 1981-82 से 1992-93 तक गैरआदिवासी क्षेत्र के दो फसलीय क्षेत्र में कठानोक प्रृतित रही, इस कठानोक प्रृतित 11.67 प्रतिशत रहा है दूसरी ओर आदिवासी क्षेत्र के दो फसलीय क्षेत्र में चूँक चूँक प्रृतित 11.17 प्रतिशत रही।
दो फसलीय क्षेत्र मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर करता है, जिस वर्ष वर्षा अच्छी होती है उस वर्ष दो फसलीय क्षेत्र अधिक रहता है और निस वर्ष वर्षा कम होते हैं उस वर्ष दो फसलीय क्षेत्र कम हो जाता है। गैर आदिवासी क्षेत्र में दो फसलीय क्षेत्र के ब्रह्मान्यक क्षेत्र का कारण वर्षा की कमी के साथ-साथ गर्भी कुदकों के पास पर्याप्त सिंचाई कुदिया का अभाव है। यहां सिंचाई क्षेत्र का प्रतीतित भी अन्यत कम है जिसके कारण छात्र की प्रृथ्वि रही है। दूसरी ओर आदिवासी क्षेत्र में भी सिंचाई क्षेत्र का प्रतीतित कम है किन्तु आदिवासी क्षेत्र जंगली क्षेत्र होने के कारण यदां गैर आदिवासी क्षेत्र की तुलना में वर्षा थोड़ी अच्छी होती है जिसके कारण दो फसलीय क्षेत्र बढ़ी हैं, साथ ही आदिवासी क्षेत्र के कृषि विकास के लिए जलाशय बनाने के लिए जल निलगी के लिए दो फसलीय क्षेत्र बढ़ा है। यूजिस्ट्रेशन बोलने के अन्तर्गत लघु सिंचाई, नियंत्रित, कृषि उपकरण के लिए उत्पादन एवं बोल जल जलाशयों के अन्तर्गत छोटे किसानों को सामान्य सिंचाई बोलने का लाभ। इन बोलनों के कारण आदिवासी क्षेत्र में दो फसलीय क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

संशोधन में कह सकते हैं कि गैरआदिवासी क्षेत्र में शाहीकरण, आदिवासी क्षेत्र में शाहीकरण, शैक्षणिक विकास एवं बोलस्तान के साथों के विकास के कारण जहां गैर कृषि क्षेत्र में वृद्धि की प्रतीति दिखाया देती है वहीं आदिवासी क्षेत्र में शाहीकरण एवं आदिवासी क्षेत्र के अभाव के कारण कृषि उपयोग में वृद्धि की प्रतीति अभी भी जाती है।

1- उपसंचालक, कृषि विभाग अधिकारी, राजनांदगंग.
(७) शहरी, औद्योगिक एवं आवासीय मुहिम उपयोग की प्रत्यवेदन

नगर अपने उद्भवकाल से ही सांस्कृतिक आर्थिक उन्नति एवं विकास के केन्द्र रहे हैं और इसीलिए इनका स्थान विस्तृत ओर विस्तृत अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रतिकूल में कुछ विशिष्ट और वर्तमान समय में सांस्कृतिक, आर्थिक, प्रौद्योगिक उन्नति का परिवर्तन है। आधुनिक नगरीकरण सांस्कृतिक, सामाजिक प्रगति का सहारिया अवशा अनुभवी होते हैं, दूसरे शब्दों में आर्थिक सामाजिक प्रगति के साथ-साथ अवशा उसके फलस्वरूप नगरीकरण में प्रगति एक स्वाभाविक तथ्य बना जाना लगा है।

नगरीकरण शहर विधि अर्थ एवं स्थानों में व्यापक रूप से समानार्थियों, अर्थव्यवस्थाओं, पूर्वी अंदाजों एवं नगर नियोजकों द्वारा पालन की गई होती रही है, किन्तु नगरीकरण के संदर्भ में इसका अन्य अर्थ सम्बन्ध "गांव समूह (जनसंख्याओं) तथा नगर क्षेत्र दोनों से है, इसलिए इसी गांव से नगर की ओर जनसंख्या के ग्रीष्म-शीतल होने के साथ ही ग्रामीण जीवन के बीच जीवन में परिवर्तन होने की प्रक्रिया और सामाजिक नरीमण केंद्रों अवशा बनने के प्रस्ताव से है।" ¹

किन्तु नगरीकरण के विवेचन और विपरीत के कारकों में कुल जनसंख्या से नगरीम जनसंख्या का अनुपात का परिवर्तन सबसे विशुद्ध अवशा है, इस संदर्भ में किंगसले डेविस का मत उल्लेखनीय है—"सामूहिक जनसंख्या की तुलना में नगरीम केंद्रों की जनसंख्या में आमान्यतिक वृद्धि अवशा राष्ट्र की ओरत जनसंख्या वृद्धि की अपेक्षा तीर्थगत से नगरीम जनसंख्या में वृद्धि को नगरीकरण का सूचक नामा जाना चाहिए।" ²

भारत की विभिन्न जनगणनाओं में नगरीकरण की परिभाषा को समय-समय पर परिवर्तित किया गया है। वर्ष 1901 से 1951 की तुलना में वर्ष 1961 से 1991 तक की जनगणनाओं में दी गयी परिभाषाओं विस्तृत एवं व्यापक हैं। इन जनगणनाओं में उसे नगर कहा जाएगा जहाँ :—

1- बाबू एम. नाथ-कर्म- नगरीम भूगोल, फलक पर, कानपुर - ३, पृष्ठ २६५।
2- किंग्सले डेविस- आर्मेनियन इन इंडियन पाउंड पूर्व (१९६२), पृष्ठ १-२।
1- म्युनिसिपल बोर्ड है,
2- जहां कि जनसंख्या 5000 से अधिक है,
3- जहां कार्यरत पुलिस का 75% कृषि के अन्वेषित अन्य घरों में लगा हो,
4- जहां घनत्व 500 मनुष्य प्रति वर्ग मील किलो (1000 प्रति वर्ग मील) है,

नगर माने गए।

1981 की जनगणना में नगर समूह शब्द का प्रयोग किया गया जो ग्राम नगर को ठहर नहीं रहने वाला क्षेत्र को भी मान्यता देता है, भारत में नगरीय स्थलों को 6 वर्ग में बांटा गया हैः

सारणी क्रमांक स-3.1
नगर का वर्गीकरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ग</th>
<th>जनसंख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>1,00,000 और ऊपर</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>50,000 से 99,999</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>20,000 से 49,999</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>10,000 से 19,999</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>5,000 से 9,999</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>5,000 से कम</td>
</tr>
</tbody>
</table>

भारत में 1881 से 1941 तक शहरीकरण में वृद्धि की दर काफी कम रही, किन्तु स्वतंत्रता के बंद योजनाकाल में इसमें वृद्धि दर बढ़ती रही जबकि औद्योगिकरण पर अधिक बल दिया गया। निम्न तालिका में भारत, मध्यप्रदेश एवं उज्जैनादंगें में नगरीकरण की प्रवृत्ति को स्पष्ट किया गया हैः

1- जिला जनगणना पुस्तिका क्र0 10, मध्यप्रदेश ग्रंथ नगर निर्देशिका, पृष्ठ 70-71
सारणी क्रमांक स-3.2
भारत, म090 एवं राजनांदगांव जिले की कुल जनसंख्या में वर्षीय जनसंख्या का प्रतिशत

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>भारत</th>
<th>दशक वृद्धि दर</th>
<th>म090</th>
<th>दशक वृद्धि दर</th>
<th>राजनांदगांव</th>
<th>दशक वृद्धि दर</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1971</td>
<td>19.9</td>
<td>38.21</td>
<td>16.29</td>
<td>46.63</td>
<td>9.82</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>1981</td>
<td>23.3</td>
<td>46.38</td>
<td>20.29</td>
<td>56.03</td>
<td>12.36</td>
<td>47.97</td>
</tr>
<tr>
<td>1991</td>
<td>25.72</td>
<td>31.38</td>
<td>23.21</td>
<td>44.98</td>
<td>15.75</td>
<td>57.22</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्त्रोत : जनगणना वर्ष 1991, सीरीज-13
जनगणना वर्ष 1981 व 1991 नियंत्रण में राज्य की महत्वपूर्ण पुरस्कार, राजनांदगांव (म.प.)

सारणी क्रमांक स-3.2 से स्पष्ट है कि भारत में नागरिकता की प्रतिशत तीव्र रही है विन्यास भारत की तुलना में इस अवधि में म090 में यह प्रतिशत अधिक तेज़ रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत में नागरिकता में काफी विस्तार मिला रहा है, जबकि एक और महाराष्ट्र जैसे प्रांत में नागरिकता का अनुपात अधिक है वहां उपर्युक्त जैसे प्रांत में कम, नागरिकता की प्रतिशत सबसे अधिक सामर्थ्य नहीं रही।

इसी प्रकार सारणी से स्पष्ट है कि म090 की तुलना में राजनांदगांव जिले में नागरिकता की प्रतिशत अधिक तेज़ रही है। इसका कारण यह है कि वर्ष 1973 में राजनांदगांव जिले बाबा जिला बनने के बाद इसके विकास कार्यक्रमों में तेजी आई, उद्योगों का विकास हुआ, नये शासनीय कार्यक्रमों में वृद्धि हुई, परिशुद्ध स्वरूप इस अवधि में राजनांदगांव जिले के अन्तर्गत नागरिकता में वृद्धि हुई।

राजनांदगांव जिला एक नवगठित जिला है, जिले में नागरिकता की वृद्धि की प्रतिशत को देखते हुए इस ब्रांच का अभ्यास अवश्यक हो जाता है कि जिले के भूमि

1- सिंह- खोरू आर.एन., भारत में नागरिकता की प्रतिशत-समस्याओं व सम्भावनाओं, (प्रलोकाल के विशेष संदर्भ में), पृष्ठ 4, अक्षरसाधित शोध पत्र.
2- वही
उपयोग की प्रृथिति पर नगरीकरण का क्या प्रभाव पड़ा?
क्योंकि राजनांदगंगा जिला मूलतः एक ग्रामीण जिला है जहाँ पर 84.25% प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है।
फिरस्त के सन 1971 के दशक के बाद यहां नगरीकरण में वृद्धि हुई। वर्तमान में छत्तीसगढ़ के प्रवास क्षेत्र के 5 नगरों में से एक नगर हली जिले के अन्तर्गत आता है। इसके अतिरिक्त इस जिले में खत अन्य क्षेत्रों के नगर हैं जिनके नगरीय जनसंख्याओं का हिस्सा सारणी में दिखाया गया है।

सारणी क्रमांक स-3.3

विभिन्न नगरों में जनसंख्या

<table>
<thead>
<tr>
<th></th>
<th></th>
<th></th>
<th></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>राजनांदगंगा</td>
<td>55828</td>
<td>86343</td>
<td>125371</td>
</tr>
<tr>
<td>डोंगराड़</td>
<td>18226</td>
<td>25776</td>
<td>31459</td>
</tr>
<tr>
<td>कन्वार</td>
<td>11226</td>
<td>17037</td>
<td>23916</td>
</tr>
<tr>
<td>खैरगढ़</td>
<td>8116</td>
<td>9812</td>
<td>13569</td>
</tr>
<tr>
<td>चुंबखंडान</td>
<td>4035</td>
<td>5264</td>
<td>10276</td>
</tr>
<tr>
<td>गृऽड़</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>6189</td>
</tr>
<tr>
<td>डोंगराड़</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>9317</td>
</tr>
<tr>
<td>अन्य स्थान</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>6672</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्मृतित — जनगणना वर्ष 1971, 1981 व 1991।

सारणी क्रमांक स-3.3 से स्पष्ट है कि राजनांदगंगा जिले में आठ नगर हैं। जिनमें से तीन, नगरों (गृऽड़, डोंगराड़ व अन्य स्थान) का निर्माण जनगणना वर्ष 1991 में हुआ। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि राजनांदगंगा जिले में राजनांदगंगा प्रथम श्रेणी का नगर है जिसकी नगरीय जनसंख्या 125731 है। जो जिले की कुल जनसंख्या का 55.29% प्रतिशत है। जिले में डोंगराड़ और कन्वार ये दो नगर तीतीय श्रेणी के नगर हैं।
राजनांदगांव नगर

राजनांदगांव नगर जिले का मुख्यालय है. पूर्व में राजनांदगांव नगर की एक छोटी सी रियासत थी, जो कि राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक-6 पर स्थित है. इस नगर को 26 जनवरी 1973 से जिला मुख्यालय का दर्जा दिया गया, इसके पूर्व यह नगर तहसील के रूप में दूरी जिले के अन्तर्गत शामिल था. यह नगर बड़ी रेल्वे लाइन से जुड़ा होने के कारण आगमन की दूरी से कलक्त्ता, बम्बई, नागपुर, बिहारीपतन, जमशेदपुर एवं देश के अन्य मुख्य नगरों एवं राजधानियों से जुड़ा हुआ है तथा जिले के दक्षिण दिशा में 4 फिक्स से परिवहन-नगर प्रवाहित होती है.

राजनांदगांव जिले के कुल 8 नगरों में से राजनांदगांव नगर सबसे प्राचीन एवं सुविधा सम्पन्न नगर रहा है. सहारीकरण का स्वीकृत प्रभाव इस नगर में हुआ है. यथापि केवल वर्ष 1951 के पश्चात नगरीकरण की प्रकृति देखने का संकेत है, जिसके परिवर्तन रहे हैं, जिला मुख्यालय रहने के कारण इस नगर में बड़ी मात्रा में जनसंख्या का आगमन हुआ है, जिसके रूप में जनसंख्या का लाभ होने से लायक नगरों का इस नगर पर व्यापार-व्यावसाय रूप में आकर्षित होता है. जिला मुख्यालय होने के कारण इस नगर में बड़ी मात्रा में जनसंख्या का आगमन हुआ है, जिसके रूप में जनसंख्या का लाभ होने से लायक नगरों का इस नगर पर व्यापार-व्यावसाय रूप में आकर्षित होता है. यथापि केवल वर्ष 1951 के पश्चात नगरीकरण की प्रकृति देखने का संकेत है, जिसके रूप में जनसंख्या का आगमन हुआ है, इसलिए अपमान की दूरी से इस नगर का मुख्य उपयोग को अलग से विश्लेषित किया गया है.

1- जिला ताजिकी पुस्तिका- ताजिकी कार्यक्रम, राजनांदगांव, पृष्ठ 18.
भूमि उपयोगः

सामान्य विकास क्रम में सीमावर्ती ग्राम भी नगर के अंग बनते जा रहे हैं। नगर के विकास के साथ-साथ आस-पास के अव्यवस्थित विकास पर नियंत्रण हेतु नियोजित विकास की आवश्यकता पड़ती है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए राजनांदगंगा नगर के आस-पास के कुछ ग्रामों को समीक्षित कर राजनांदगंगा निवेश क्षेत्र का गठन मार्गदर्शक नगर तथा ग्राम निवेश अभियान 1973 (क्रमांक 23 सन् 1973) को धारा 13 की उपयोग (1) के अन्तर्गत अधिसूचना क्रमांक 1938/एए-1/46/3311/74, दिनांक 25 मई 1974 से सुरक्षित किया गया है।

राजनांदगंगा निवेश क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 5113.4 हेक्टर है। जिसमें नगर पालिका निगम का क्षेत्रफल 2566.0 हेक्टर समाविष्ट है। नगर पालिका सीमा के अन्तर्गत कुल विकसित भूमि 700 हेक्टर है जो कि सम्पूर्ण निवेश क्षेत्र का 13.7 प्रतिशत है तथा नगरपालिका निगम सीमा के बाहर किन्तु निवेश क्षेत्र के अन्तर्गत समीक्षित ग्रामों का विकसित आबादी का क्षेत्र 38.7 हेक्टर है जो कि सम्पूर्ण निवेश क्षेत्र का 0.8 प्रतिशत है। निवेश क्षेत्र के अन्तर्गत अनुप्रयोगी भूमि 95.50 हेक्टर है, जो कि 1.8 प्रतिशत है तथा विकास योजना के अन्तर्गत कुल उपयोगी भूमि 4282.20 हेक्टर है, जो कि सम्पूर्ण निवेश क्षेत्र का 83.7 प्रतिशत है।

सारणी क्रमांक स-3.4 में निवेश समीक्षित भूमि के स्थान को दिखाया गया है।

1- राजनांदगंगा - विकास योजना प्रारंभ 2001, नगर तथा ग्राम निवेश (मार्गदर्शक पृष्ठ 1.
रक्नांदगांव भूमि स्त्रोत (प्रतिशत में)

$A+B$ — विकसित भूमि
$c$ — अनुपयोगी भूमि (जलमग्न)
$d$ — उपयोगी भूमि
## स्थल – नगर तथा ग्राम निगम विभाग के भौतिक सर्वेक्षण एवं नगर पालिका निगम के सौजन्य से.

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>भूमि का स्थल</th>
<th>क्षेत्रफल हेक्टर में</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>विकसित भूमि</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>(i)</td>
<td>नगर पालिका निगम सीमा के अन्तर्गत</td>
<td>700.0</td>
<td>13.7</td>
</tr>
<tr>
<td>(ii)</td>
<td>नगर पालिका निगम के बाहर किन्नू नियंत्रण क्षेत्र के अन्तर्गत</td>
<td>38.70</td>
<td>0.8</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>अनुपयोगी भूमि (वनस्पति)</td>
<td>92.50</td>
<td>1.8</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>उपयोगी भूमि</td>
<td>4284.20</td>
<td>83.7</td>
</tr>
<tr>
<td>मध्यम भूमि का वर्गीकरण:</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

नगरीय जीवन स्तर एवं उसकी कार्यक्षमता तथा ग्रामीणों जो भूमि उपयोग द्वारा परिलक्षित होती है, के उभित रूप से रिपोर्ट होने पर निर्माण रहती है. भूमि के विभिन्न उपयोगों के अन्तर्गत अन्तर्गत विकास मानक जीवन के क्षेत्रों को प्रभावित करता है. इसलिए भूमि का वर्गीकरण विभिन्न उपयोगों में नियोजित रूप से किया जाना आवश्यक है. इन विभिन्न उपयोगों को निर्माण तालिका द्वारा वर्गीकृत किया गया है.

1. रिस्ट्र भूमि 
2. असारीय 
3. वाणिज्यिक 
4. ओयोगिक
5. यात्रायत एवं संचार
7. सर्वजनिक एवं अर्धशासकीय उपयोग
9. कृषि भूमि
6. सर्वजनिक लेखायत एवं युवियायत
8. खुली भूमि
10. जल निकाय (जलाशय)

वर्तमान भूमि उपयोग का स्वरूप:

राजनांदगंगा नगर का वर्तमान में कुल विकसित क्षेत्र नगर चारित्रिक सीमा के अन्तर्गत 700 हेक्टर है जिसमें आवासीय घनता 13.7 व्यक्ति प्रति हेक्टर है। निर्मित क्षेत्र का प्रमुख भाग आवासीय क्षेत्र है जिसका क्षेत्रफल 335.90 हेक्टर है जो कि विकसित भाग 48.0 प्रतिशत है।

निम्नलिखित सारणी द्वारा वर्तमान भूमि उपयोग के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है:

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.</th>
<th>भूमि उपयोग</th>
<th>नगर निगम सीमा</th>
<th>भूमि उपयोग का प्रतिशत</th>
<th>विकसित भूमि</th>
<th>विकसित भूमि का प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>आवासीय</td>
<td>335.90</td>
<td>13.10</td>
<td>335.90</td>
<td>48.0</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>वाणिज्यिक</td>
<td>45.34</td>
<td>1.08</td>
<td>45.34</td>
<td>6.5</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>औद्योगिक</td>
<td>40.94</td>
<td>1.06</td>
<td>40.94</td>
<td>5.8</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>सर्वजनिक एवं अर्धशासकीय</td>
<td>61.58</td>
<td>2.04</td>
<td>61.58</td>
<td>8.8</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>मनोरंजन</td>
<td>16.00</td>
<td>0.06</td>
<td>16.00</td>
<td>2.3</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>परिवहन एवं संचार रेलवे सीमा सहित</td>
<td>200.24</td>
<td>7.09</td>
<td>200.24</td>
<td>28.6</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>खुली भूमि</td>
<td>60.00</td>
<td>2.03</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>कृषि भूमि</td>
<td>1703.17</td>
<td>66.07</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>जलाशय</td>
<td>92.83</td>
<td>3.6</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

योग :- 2556.00 100.00 700.00 100.00

स्थल - स्थल सूचकांक नगर तथा ग्राम निवेश विभाग.
सारणि क्रमांक स-3.5 में राजस्थानी राजनांदगंज में वर्तमान में भूमि उपयोग की स्थिति को दर्शाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि सबसे अधिक भूमि का उपयोग कृषि भूमि के रूप में किया जा रहा है जो नगर सीमा की कुल भूमि का 66.07 प्रतिशत है। अवासीय क्षेत्र में विकसित भूमि का 48.0 प्रतिशत, औद्योगिक क्षेत्र में 5.8 प्रतिशत, वाणिज्यिक क्षेत्र में 6.5 प्रतिशत, सार्वजनिक एवं अर्थशास्त्रीय क्षेत्र में 8.8 प्रतिशत एवं परिवहन एवं संचार क्षेत्र में 28.6 प्रतिशत भूमि का उपयोग हो रहा है।

भूमि उपयोगिता दर:

भूमि उपयोगिता दर शहर की संरचना एवं भूमि के विशिष्ट प्रयोग से निर्भर की जाती है। सन् 1986 के प्रारंभिक आंकों के आधार पर शहर की कुल जनसंख्या 102711 है। जिसको वृद्धितात्मक रूप से हुए भूमि उपयोगिता दर निर्धारित की गई है। इस प्रकार नगर की भूमि उपयोगिता दर 6.8 हेक्टर प्रति 1000 व्यक्ति है। विभिन्न उपयोगों के अन्तर्गत भूमि उपयोगिता दर निम्न रेखाचित्र-सारणी में दर्शाया गया है।

रेखाचित्र क्रमांक स-3.1
राजस्थानी राजनांदगंज - भूमि उपयोगिता दर

![Image of a diagram showing the distribution of land use in Rajnandgaon in Rajasthan](Image)
| सारणी क्रमांक स-3.6 | राजनीतिक वर्गाधिकार | भूमि सूची दर

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>भूमि उपयोग</th>
<th>क्षेत्रफल हेक्टर में</th>
<th>प्रति 100 व्यक्ति प्रति हेक्टर में</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>आयामीय</td>
<td>335.90</td>
<td>48.00</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>वाणिज्यिक</td>
<td>45.34</td>
<td>6.50</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>आयोगीय</td>
<td>40.94</td>
<td>5.80</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>सार्वजनिक एवं अर्थशास्त्रीय</td>
<td>61.58</td>
<td>8.80</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>मनोरंजन</td>
<td>16.00</td>
<td>2.30</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>परिसंह रेलवे सीमा रेखा (105 हेक्टर)</td>
<td>200.24</td>
<td>28.60</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td></td>
<td>700.00</td>
<td>100.00</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थिति – नगर तथा ग्राम नियमित विभाग भौतिक सर्वेक्षण द्वारा।

भूमि उपयोग समस्ताओं

नगर में उपलब्ध भूमि का विभिन्न उपयोगों में उचित समन्वय नहीं है। नगर के निरन्तर विकास की प्रक्रिया में पूर्व शासकों द्वारा विभिन्न उपयोग के अन्तर्गत भूमि के उपयोग पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप खत्म होकर की प्रभाव समस्त समस्या उत्पन्न हुई। नगर के प्रमुख भागों पर वाणिज्यिक गतिविधियाँ अधिक विकसित हुई है। जिसका सीमा प्रभाव यातायात पर पड़ रहा है और शहरी जीवन वापन प्रभावित हो रहा है।

अनुपायक्त एवं वर्तमान भूमि उपयोग

नगर के वर्तमान भूमि उपयोग का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि नगर के वर्तमान स्थान पर आसपास में विकसित क्षेत्र के साथ उचित समन्वय नहीं रखते जिसके कारण आसपास...
के निर्देशियों को विभिन्न समस्याओं का समाधान करना पड़ता है. ऐसे में भूमि उपयोग को उपयुक्त स्थान पर हल्काहलित किया जाना आता आवश्यक है. निम्नलिखित तालिका में दर्शाये गये उपयोग असंगत भूमि उपयोग की श्रेणी में आते हैं:—

**सारणी क्रमांक स-3.7**

**रजनादिपुर — असंगत भूमि उपयोग**

| क्रम | विवरण | निष्पादन
<table>
<thead>
<tr>
<th></th>
<th></th>
<th></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>दुस्यलय</td>
<td>जिला अस्पताल के पास, गोलकंडागर के अन्तर्गत, मोदीसागर तालाब के पास, बस स्टेंड के पास</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>पोत्तूर पृथ्वी</td>
<td>जी.डी.एस गांव राजपुर नाका के पास.</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>परिसंहन अभिक्रिया</td>
<td>रेल्वे स्टेशन के पास, बस स्टेंड के पास, गंगा मण्डी के पास, भरतपुर रोड, नगर पालिका निगम कार्यालय के सामने, जी.डी.एस रोड पर.</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>चर्कशॉप</td>
<td>जी.डी.एस रोड, सस्टेंड गांव.</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>लेल मिल, चाँदन मिल</td>
<td>गंगा मण्डी के पास, रामधीन गांव, डोगरा गांव गांव, बलौद गांव, लकोट गांव</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>खेती स्थल</td>
<td>दोघोलगर (खेती)</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>कीमेशन ग्राउंड</td>
<td>लकोट ली रोड</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>रमण पाट</td>
<td>पावर हाउस गांव</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>चाय पार</td>
<td>मोदी सागर के पास</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>चौंक टाल एवं कोल हिप्पो</td>
<td>रेल्वे स्टेशन के पास</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>भवन निर्माण सामग्री</td>
<td>नंदई गांव</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>कुष्ठ चिकित्सालय</td>
<td>भरसंपुर.</td>
</tr>
</tbody>
</table>
उपरोक्त वर्णित भूमि उपयोग अपने वर्तमान स्थल पर पूरी तरह से कार्य नहीं कर रहा है। इस प्रकार के भूमि उपयोग को असंभव भूमि उपयोग कहा गया है। अतः आर्थिक एवं सामाजिक वृद्धि के लिए, सूचना अथवा सूचना वृद्धि के आधार पर इनका अधिक समय तक वर्तमान स्थल पर रहना न हो उचित है और न ही आवास के क्षेत्र से किसी प्रकार की सहायता है। अतः इनका प्रस्तावित विकास प्रवृत्ति में उचित स्थान पर व्यवालित करने का प्रस्ताव किया है।
इनके स्थानांतरित करने से जो भूमि रिक्त होगी उसका अन्य उपयुक्त उपयोग हेतु अन्य उपयोग किया जाना चाहिए।

वर्तमान गृह निर्माणों का गुणधर्मविशेष

नगर के निवासियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण मुख्यतः जीवन स्तर पर आपूर्ति होता है, जिससे वहां का वातावरण प्रभावित होता है। जिसे शहरीकरण का विस्तुट भूमि उपयोग कहा जाता है। भवनों की शैरित, उनका वातावरण (स्तर) वहां पर प्राप्त हुआ है और भवनों में जिसके अधार पर निवासी रहने का आवश्यक होता है। उस आवास क्षेत्र की मुख्य समस्या है समस्त महत्वपूर्ण तथ्य अवास की कंपनी, आवासीय घनत्व, शैक्षणिक दर, किराये रेटिक के आधार पर वहां के रहने वाले व्यक्ति का अपमान किया गया है ताकि याता की आवास समस्या का सही अंकला किया गया।

आवासीय घनत्व

नगर के आवासीय घनत्व को वहां की कुल जनसंख्या प्रति हेक्टेयर के हिसाब से आवासीय क्षेत्र दर्शाता है रिसायम जो आवासीय क्षेत्र नहीं है जैसे मुख्यतः सड़क, खुला क्षेत्र, बिजली और जलविद्युत के शीरे की भूमि इत्यादि। यह शहरी भूमि के उपयोग एवं समस्या को प्रभावित करता है जिससे कि उच्च आवासीय दर के कारण अधिक भीड़-भाड़ हाल है।

राजनीतिक शहर में आवासीय घनत्व के आधार पर शंकरपुर बाई, तिलक बाई एवं आजाद बाई, नेताजी बाई, दादाजी बाई एवं प्राचीन निंदू बाई उच्च घनत्व वहां क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में आवासीय घनत्व दर 700 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर है। रविवार पटेल बाई, नई शिवेश लाइन, व्योंदे देवी बाई, लखोंदी बाई, झुंडाला बाई कम आवासीय घनत्व वहां क्षेत्र है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>स्तर</th>
<th>बार्द नम्बर</th>
<th>महत्त्वपूर्ण बार्दों का विवरण</th>
<th>जनसंख्या</th>
<th>अवासीय क्षेत्र</th>
<th>जनसंख्या</th>
<th>अंकमाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>उच्च</td>
<td>17, 18, 22, 23, 24, 25, 29.</td>
<td>700 के ऊपर &lt;br&gt; नेपाली दुकान वार्ड, रागी सूर्यमुखी वार्ड, अब्बी पारेलाल वार्ड, &lt;br&gt;आजाद वार्ड, दीनदयन वार्ड, तितक वार्ड, दादाबाई वार्ड.</td>
<td>16,814</td>
<td>21.70</td>
<td>17.50</td>
<td>6.50</td>
</tr>
<tr>
<td>उच्च-मध्य</td>
<td>2, 3, 7, 16, 19.</td>
<td>450 से 700 &lt;br&gt; मोटेरुपुर वार्ड, शंकरपुर वार्ड, आम्बेडकर वार्ड, जनप्रकाश वार्ड, जर्मद्वादिस वार्ड.</td>
<td>14,095</td>
<td>26.00</td>
<td>14.70</td>
<td>7.70</td>
</tr>
<tr>
<td>मध्य</td>
<td>1, 4, 8, 9, 15, 20, 21, 26, 30, 31, 35.</td>
<td>250 से 450 &lt;br&gt; महात्मा मुद्र वार्ड, राम मनोहर लेिहिया वार्ड, रामकुश्त्र नगर, &lt;br&gt;केलासा नगर वार्ड, गुड भोजनदास वार्ड, दिविजय वार्ड, &lt;br&gt;अयोक वार्ड, हृदयोत्थान वार्ड, तुम्मेदेवी वार्ड, &lt;br&gt;गुड पासीदास वार्ड.</td>
<td>30,306</td>
<td>97.32</td>
<td>31.50</td>
<td>29.00</td>
</tr>
<tr>
<td>निम्न</td>
<td>5, 6, 10, 11, 12, 13, 14, 27, 28, 32, 33, 35.</td>
<td>250 के नीचे &lt;br&gt; चिक्कोली वार्ड, सतपा पेटेल वार्ड, महात्मा गंगा वार्ड, &lt;br&gt;हुंडकर वार्ड, सिमिक लाइन, ज्योतिरेकल वार्ड, &lt;br&gt;बलराम दास वार्ड, लक्ष्मी वार्ड, महागीर वार्ड, &lt;br&gt;बसलतापुर वार्ड, शेलेलाल वार्ड, नंदेदर वार्ड...</td>
<td>34,887</td>
<td>190.88</td>
<td>36.30</td>
<td>56.80</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td>96,102</td>
<td>335.90</td>
<td>100.00</td>
<td>100.00</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**मनोल - स्थिर संरक्षण नगर तथा भ्राम निवेश विभाग एवं नगर पालिका निगम के भौगोलिक स्थान.**
इन खेत्रों में आवासीय पन्तव 133 से 836 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर के अनुपात से निवास करते हैं। पूरे शहर के औसत से 286 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर आवासीय पन्तव है जो कि आंशिक रूप से काफी ऊँची दर है। कुछ खेतों में जो अधिक पन्तव है उसका कारण बहुमूल्य भौगोलिक मकानों की वजह से नहीं है जबकि उच्च आवासीय दर से कम भौगोलिक प्रभाव है, जो कि अदिकल्पनीय द्वारा किया गया।

रजनांवगंव शहर का आवासीय पन्तव उच्च, उच्च-मध्यम, मध्यम एवं निम्न पन्तव सारणी क्रमांक स–3.8 प्रदर्शित करता है।

सारणी क्रमांक स–3.8 में दर्शित आवासीय पन्तव के अनुसार रजनांवगंव के विभिन्न खेतों का अनुवां रूप से प्रदर्शित करते हैं कि नगर का आवासीय पन्तव काफी कम है, जो ऊपर व्याख्यात के कारण सम्पन्न नहीं है। नगर की कुल जनसंख्या 32.20 प्रतिशत उच्च एवं उच्च-मध्यम पन्तव में आता है जबकि 67.8 प्रतिशत निम्न तथा मध्यम पन्तव में सम्मिलित रूप से है।

अवास दर

मकानदर वर्षिक मूल्य के परिचालक के अधार पर नगर की जनसंख्या की, जो कि एक कमरे से 3 कमरे में आवासीय व्यक्ति निवास करते हैं। उसी के अनुसार रजनांवगंव का अनुवां रूप से प्रदर्शित किया गया है। सन् 1981 की जनगणना के अनुसार 88 प्रतिशत गृहवाही एक से दो कमरों में निवास करते हैं, जो कि नगर की जनसंख्या का 77 प्रतिशत होता है, इससे अधिक पन्तव प्रतिशत होता है। केवल 15 प्रतिशत नगर की जनसंख्या गृहवाहिनक अवास घरों में निवास करते हैं।

रजनांवगंव नगर की अवास दर को सारणी क्रमांक स–3.9 में दर्शाया गया है।
भारतीय जनगणना 1981 के आधार पर,

गन्धी बस्ती एवं दुर्गापूरी कोच्ची रिपोर्ट

गन्धी बहिष्कारियों का क्षेत्र, खुले क्षेत्रों की क्षमी, अन्य सूचियों की क्षमी के कारण दप्तरीय रिपोर्ट में हैं। इसी कारण गन्धी बहिष्कारियों का अधिक हजार वाले कच्चे निर्माण से युक्त है, जिसमें काफी हद तक मूलभूत आधार स्थापना, मनकानें की भवन एवं आश्रम-आश्रम के हिस्से खोते की करनी है। इस विभाग द्वारा अधिक गन्धी बहिष्कारियों एवं अन्य बहिष्कारियों का जो सर्वेक्षण किया गया है, उसको सराही क्रमांक स-3.10 में दर्शाया गया है।

सराही क्रमांक स-3.10 में राजनांदगंगा नगर में गन्धी बहिष्कारियों का विवरण दिया गया है. सराही से स्पष्ट है कि सबसे अधिक खोज खोजी 639, वार्ड नंबर 3 शंकरपुर की है, जहां 6.07 हेक्टेयर भूमि पर 3163 जनसंख्या निवास करती है। दूसरी ओर वार्ड नंबर 5 विविधता एक ऐसी गन्धी भूमि है जहाँ केवल 2.03 हेक्टेयर भूमि पर 508 खोज खोजी है जिसमें 2581 जनसंख्या निवास करती है। इस प्रकार गन्धी बहिष्कारियों में जनसंख्या घनत्व भी अधिक है।

इस तरह राजनांदगंगा नगर भी दूसरे नगरों की तरह ही गन्धी भस्मी समस्या से प्रभावित है, जो कि निजी रिहाय्षी रिपोर्ट, अधिक भीड़-भाड़ एवं लोक आवागमन एवं सूचियों की क्षमी तथा असामान्यताओं द्वारा चालकीप भूमि पर दुर्गापूरी खोजें निर्माण करने के कारण उत्पन्न
खरणी क्रमांक स-3.10
रजनाधन - गर्दी बस्तियाँ

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र</th>
<th>गर्दी बस्तियों के नाम</th>
<th>वाई नं</th>
<th>क्षेत्रफल (हेक्टॉर में)</th>
<th>जनसंख्या (000)</th>
<th>घोषितण्डियों की संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>सतनामी पाय</td>
<td>28</td>
<td>2.43</td>
<td>2000</td>
<td>376</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>बंदई</td>
<td>35</td>
<td>2.65</td>
<td>2658</td>
<td>551</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>महलपुर</td>
<td>32</td>
<td>2.43</td>
<td>2500</td>
<td>539</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>फिखली</td>
<td>5</td>
<td>2.03</td>
<td>2581</td>
<td>508</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>सूबोली</td>
<td>27</td>
<td>6.07</td>
<td>2670</td>
<td>577</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>शंकरपुर</td>
<td>3</td>
<td>6.07</td>
<td>3163</td>
<td>639</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>ग्वातपरा</td>
<td>19</td>
<td>3.24</td>
<td>2800</td>
<td>427</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>भोलेपुर</td>
<td>2</td>
<td>5.16</td>
<td>2063</td>
<td>504</td>
</tr>
<tr>
<td>योग :-</td>
<td></td>
<td>30.08</td>
<td>20443</td>
<td></td>
<td>4121</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वीकृत - स्वातंत्र्य ग्राम एवं नगर निर्माण विभाग.

होती हैं। इन क्षेत्रों का अध्ययन करने से पता चलता है कि यहाँ पर आठ बस्तियाँ हैं, जिनमें समग्र लगभग 20000 व्यक्ति निवास करते हैं। इसके अतिरिक्त 22वें क्षेत्रों में झुंगी क्षेत्रों हैं जिनमें लगभग 4000 व्यक्ति रहते हैं। यह अनुमान किया गया है कि इन बस्तियों के स्वार्थ के लिये बहुत से प्रशासनिक, वित्तीय, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में ग्रोथ दर है। साथ ही साथ उनके विकास एवं पुन: बनावट के लिये यह आवश्यक है कि निर्माणमय चार तरीकों से इसे नियोजित किया जाये.

1- भवन निर्मयों में परिवर्तन किया जाये तथा इसके क्रियान्वयन के लिए कड़ी कार्यवाही हो, जिससे भवन निर्मय पर अंकुश स्थापित न जाए।

2- उचित मूल्य पर अवैध क्षेत्रों का विकास एवं उसमें रेखा छाँदियों विशेषकर समान के आर्थिक एवं कमानों का समाप्त हो। इससे अवैध क्षेत्रों तथा अवैध तत्वों को द्वारा किये जाने वाले अधिक प्रतिवेदनों के संकट से बच्चा जा सके।
3- पर्यावरण सुधार एवं तेजस्वी एवं मुक्ति का प्रादर्शण हो, जिससे कि गर्दी बर्तनकोश का जीवन स्तर में सुधार हो सके।

4- गर्दी बर्तनकोश का उन्मूलन एवं उनके नये जगहें पर स्थानांतरान।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए तत्काल क्रियान्वयन किया जाना चाहिए, जिसके अनुसार शून्य शोधनों को उठाने और आर्थिक एवं सामाजिक जीवन कहलाने से कम प्रभावित कर सके, ताकि उनके आर्थिक एवं सामाजिक जीवन कहलाने से कम प्रभावित कर सके। खण्डानत: पर्यावरण सुधार योजना लागू करते समय केवल ऐसे क्षेत्रों का चयन किया जाये, जिससे कि स्वस्थ जातीय एक रूप गतिविधियों का स्तर एवं सुन्दर भूमि, बगीचे, खेत के भेदभाव एवं सामाजिक भवनों का प्रादर्शण हो सके।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए केवल वहीं गर्दी बर्तनकोश, शून्य शोधनों में लिया जाना चाहिए जिससे सुधार के लिये प्रयास करना महत्वपूर्ण और ऐसी भूमि भी नहीं होना चाहिए जो कि केन्द्रीय भूमि में अधिक कीमत वाली हों एवं नगर के कार्यों के लिये फिरों अन्य उपयोग के लिये आवश्यक हो।

आयुर्वेद की कहानी

यह आयुर्वेद होता है कि शास्त्र के सहयोग से एवं गृह निर्माण सहितियों द्वारा भवन निर्माण करने के उपरंत भी नगर आयुर्वेद समस्या से ग्रसित है। गृह निर्माण क्रियाकलाप, उनके जनसंख्या बृद्धि के हिसाब से कई संसाधन नहीं रखता, जो कि प्रारंभिक के कारण यह भवन ग्रसित होता है। खण्डानत: आयुर्वेद भवन समस्या भविष्य में बृद्धि होने वाली जनसंख्या, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन तथा संयुक्त परिवार के विषयों से मतलब की जीवन स्थिति के आयुर्वेद पर निर्भर होता है।

बुद्धि रूप से 1981 की जनगणना के अनुसार गृहों की संख्या एवं परिवारों की जीवन अवस्था, जिनके स्थान पर नया मकान महत्व के आयुर्वेद ग्रसित है, को आयुर्वेद बनकर आयुर्वेद समस्या का अनुमान लगाया गया है। आयुर्वेद गृहों की पूर्ति समय पर अनुमान इस पर आयुर्वेद है, जो कि कम से कम पंच व्यक्तियों के सीमित परिवार के लिये एक गृह होना चाहिये। 1981 की जनगणना के आयुर्वेद पर 787 रिकायती इकाई माना गया है। इसके अंतर्गत नगर में भूमि से
मकन ऐसे हैं जो कि मानव निवास के अनुकूल नहीं हैं। ऐसे मकन लुप्ति जो कसा तथा कच्चे सामग्री से निर्मित होते हैं। भौतिक सर्वोत्तम से यह पता चलता है कि करीब 20 प्रतिशत मकन निम्न स्तर के हैं, 50 प्रतिशत मकन गल्दी अवशेषों में स्थित है तथा 80 प्रतिशत लुप्ति गल्दी अवशेषों हैं, जो कि मानव निवास के लिए अनुकूल नहीं हैं।

अध्यात्मिक ऊर्जा उपयोग

क्षेत्रीयम क्षेत्र में रायपुर, बिलासपुर एवं दुर्ग-भिखाई क्षेत्र के पश्चात उज्जैनवाण्य व्यावसायिक उड़ान से क्षेत्र का गहनपूर्ण नगर है। मुख्यतः कृषि उत्पादन एवं संयुक्त वनों पर आधारित उद्योग एवं व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र है। अतः नगर में मुख्यतः कृषि आधारित उद्योग एवं वनों की आधारित उद्योग कार्यक्रम सम्बन्ध में स्थित है। नगर से केवल 35 किमी की दूरी पर स्थित भिखाई इमारत संख्या एवं उसके प्रवेश द्वार भोग में वृहद एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना के कारण नगर के अध्यात्मिक क्षेत्र पर काफी प्रभाव पड़ा है। नगर में वृहद उद्योग के नगर के अंतर केन्द्र रायपुर कपड़ा मिल स्थित है जिसकी स्थापना 1896 में हुई थी। बदलता में इसमें 4500 श्रमिक कार्यरत हैं।

नगर में लघु उद्योगों की स्थापना हेतु नगर के परिचालन में जी10५० मर्ग पर एक अध्यात्मिक क्षेत्र, जो5० अध्यात्मिक क्षेत्र विकास निगम के द्वारा विकसित किया गया जिसमें विभिन्न लघु उद्योग वैश्वन में कार्यरत हैं। सर्व में द्वारा चलन है कि इंस्टीट्यूट वोके अध्यात्मिक क्षेत्र जी10५० रोड पर स्थापित दो रोड हैं तथा वहाँ पर आधारित उद्योग विभाजित हैं दुर्ग-भिखाई की ओर जाने वाले मार्ग पर कार्यरत हैं। कृषि पर आधारित उद्योग विशेष तौर पर गंगा रोड, लखानी रोड एवं नगर के दक्षिण भाग में बालौ रोड पर स्थित है। केन्द्र सड़क कपड़ा मिल जी10५० मॉडल के बालौ भाग में स्थित है तथा अन्य उत्पादक उद्योग जी10५० रोड के उत्तर में तथा अन्य नगर में यहाँ-वहाँ फैले हैं।

अध्यात्मिक कार्यक्रमों आयोजित पर जरूर बिशुद्ध पूर्ण आधारण के स्थापना तथा वेतन पुष्करण में प्रस्तुत होती है वहाँ पर स्थापित हो जाती है। करीब 40 हेक्टेयर भूमि जो वैश्वनाम अध्यात्मिक क्षेत्र में जी10५० मॉडल के नगर हेतु उपलब्ध है। यह क्षेत्र नगर के सभी केन्द्रों से समन्वित है। फिर भी अन्य कार्यक्रमों का नगर के दक्षिण भाग में वृद्धि के कारण महत्त्वपूर्ण
की चुविया देना जनता हो गया है। राजनांतरांग नागर पहले से ही पानी की कमी से प्रस्त है इसलिए पानी की खपत करने वाले उद्योग, पानी पूरी के संगठन होने तक हल्का सार है।

जहां तक असंगठ एवं लघु उद्योग का प्रश्न है, जो खाद्य सागरांग का उत्पादन करते हैं, अधिकतर नागर के अधिकार में स्थित है। सामाजिक तौर पर अधीनस्त इकाइयों का नागर के अधिकार में स्थापित होना यथायित में भाष्य होता है। अध्ययन की पता चलता है कि इस प्रकार के कुछ स्थापित उद्योग उनके वर्तमान स्थान पर भी रहना उचित नहीं है। अतः इन्हें असंगठ इकाई गणना गया है।

राजनांतरांग जिले में भूमि उपयोग की प्रकृति

राजनांतरांग जिले में वर्तमान में 8 नगर विधानसभा हैं, जिनमें झीलें, खोंगरांग एवं अभाषाङ्ग चौँकी तीन ऐसे नगर हैं जिनका निर्माण (विनोभाषा) वर्ष 1991 की जनगणना के माध्यम से हुआ।1 इन नागरों में भी भी नगरीकरण फ़ैक्ट्री के खबरों ग्रामीण प्रभाव अधिक माना में देखने को मिलता है। जनसंख्या निर्माण के अन्तर्गत इन तीनों इकाइयों को नगर का ठाँगा किया गया किन्तु इन क्षेत्रों में और बाहा, व्यापारीय भूमि का स्थापितकरण देखने को नहीं मिलता किन्तु अध्ययन के दौरान तत्त्वों को स्पष्ट करने के लिए इन क्षेत्रों को भी अध्ययन के ठीक में शामिल किया गया है।

शेष 5 नागर राजनांतरांग, खोंगरांग, कवर्क, खोंगाऱ्ग एवं कुछ इकाई जिनका निर्माण क्रमशः रन 1983, 1900, 1936, 1966 एवं 1953 में किया गया।2 तब से इन नागरों की आबादी (जनसंख्या) मरत्र बढ़ती रही है। यथापि सबसे अधिक आबादी वृद्धि का प्रभाव राजनांतरांग नागर में देखने को मिलती है। इसके बाद कवर्क, खोंगरांग एवं कुछ इकाई में निकलती है। नगर की इसी प्रौद्योगिकी के कारण प्रदेश में आबादी निर्धारित होने वाले 16 जिलों में क्रमरों को भी सम्बन्धित कर दर्जा दिया जाने की सम्भावना भना गयी है।3

1- झील साहित्यको पुरस्तता, साहित्यको पारंपारिक राजनांतरांग 1993, पृष्ठ 18.
3- झील (शहीद एन.- स्वागति में नगरीकरण की प्रौद्योगिकी (कुछ इकाई के विशेष संदर्भ में) समस्ताखें एवं सम्बन्धित, पृष्ठ 15.
नागरिकता की इस तीव्रता के बावजूद भी नगरियां भूमि का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग,
राजनीतिक नगर में परिवारण के साथ उपस्थित रहा किन्तु अन्य भागों में सर्वाधिक भूमि का
उपयोग आबादी के कारणों के लिए किया गया। यही कारण है कि नगर के द्वारा राजनीतिक
नगर में अधिक रहे, अन्य क्षेत्रों में नहीं। राजनीतिक जिले के नगरियों क्षेत्रों में भूमि उपयोग
की प्रभृति को निम्न भिन्नताओं में स्पष्ट किया जा सकता है।

आबादी भूमि उपयोग की प्रभृति :-

राजनीतिक जिले 1973 में स्वतंत्र जिले के रूप में अस्तित्व में आया।
इसके पूर्व यह दुर्ग जिले का एक अंग था। नवरंगित जिला बनने के साथ ही अनेक
शासकीय एवं अभासकीय कार्यालयों की स्थापना ने जिले में आबादी के क्षेत्रों की गाँवों
में बुद्धि के साथ ही बड़ी मात्रा में व्यापारिक केंद्रों के खुल जाने के कारण व्यापारिक परिसरों की स्थापना भी हुई। राजनीतिक जिले में बाहर से आने वालों
की संख्या भी बढ़ती रही। शुरू में लोग अक्सर आये, बाद में अपने परिवार
को भी साथ ले आये। परिवारयात्रा बड़ी मात्रा में आबादी के परिसरों के बंद ने
भी वृद्धि हुई।

राजनीतिक जिले में विभेदकर राजनीतिक नगर में यह स्थायित्व अधिक
समस्याग्रस्त रही है। परिवारयात्रा शुरुआती क्षेत्रों का अभ्यर्थ हुआ। यह तब एवं
बाहर खरी स्पष्ट होता है कि राजनीतिक नगर में गद्दी बसती समस्या उदारता
शहरी विकास अभिक्रिया (2048 मिलियन) कार्यक्रम का शुभारंभ पूरे छत्तीसगढ़
में पहली बार राजनीतिक नगर में प्रारंभ किया गया। तब स्पष्ट करते हैं कि
राजनीतिक नगर में आबादी अभिक्रिया की गहनता ने उपस्थित समस्या को जाना
यियां। राजनीतिक हाईलिम सेंटर (ESCAP) भारत शासन 1984 के एक सर्वेक्षण
के अनुसार राजनीतिक में कुल जनसंख्या का 18 प्रतिशत गद्दी बसती हैं।

1- गणेशर ओफ़ इंडिया माद्रास दुर्ग जिले, 1972, पृष्ठ 75, 76, 77.
2- प्रोफेसर रिपोट्ट आ० U.B.S.P. प्रोग्राम राजनीतिक 1995, संवेदन साइन्स एंड
रिसर्च सेंटर, सेंटर 2 मिलाई, पृष्ठ 14.
3- राजनीतिक हाईलिम सेंटर (ESCAP) भारत माद्रास 1984.
प्रति 100 रिहायशी मजबूतों की पालिकाएं की संख्या 111.06 है: यह 88 प्रतिशत गृहस्थानीय एक या दो कमरे में निवास करते हैं जो नगरीय जनसंख्या का 77 प्रतिशत है। यहां शहरी क्षेत्रों में प्रति आवास 6.33 व्यक्ति निवास करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि यहां आवासीय समस्या काफी जटिल है। सर्वश्रेष्ठ से यह तत्व स्पष्ट हुआ है कि सभी पक्ष मजबूतों की संख्या अधिक है जिसमें से 20 प्रतिशत मजबूत निम्न रंग के हैं, 50 प्रतिशत गृही बंसियों में रिश्ता है जो निवास के योग्य नहीं हैं। इस जिले में पात्री से राज्यों के बढ़ते प्रशासियों ने यहां शहरी क्षेत्रों में बढ़ती अन्यक्षेत्रीय अवक्षेत्रीय अवस्थाओं की स्थिति बढ़ाई है। जिसे जाना जाता था वहीं घर बना लिया, अवक्षेत्रीय अवस्थाओं की स्थिति बढ़ाई है।

राजनावाद जिलों में भूमि उपयोग में अधारीत भूमि उपयोग का प्रतिशत निम्न: स्वरूप में दर्शाया गया है।

**सारणी क्रमांक स-3.11**

नगरीय क्षेत्रों में आवासीय उपयोग भूमि का प्रतिशत

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र0</th>
<th>नगरीय क्षेत्र</th>
<th>भूमि का आवासीय उपयोग प्रतिशत में</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>राजनावाद</td>
<td>48</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>इंगरामंड</td>
<td>68</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>कवरां</td>
<td>76</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>खेरां</td>
<td>74</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>लुईखावन</td>
<td>76</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>गण्डल</td>
<td>80</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>डोंगरांत</td>
<td>79</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>अम्राणद चोकी</td>
<td>82</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्तरॉट – नगर पालिका निगम एवं नगर पालिकाओं के प्रतिवेदन पर आपातित.

1- मोफो विभाग सर्वेक्षण आवेदक साँडियकी संचालकाय गोपाल, पृष्ठ 24.
2- सिंह, धीरा आर.एन. - "भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति (छत्रपुर के निको विशेष विषय सम्बन्धी) समस्याओं एवं सम्भावनाओं, पृष्ठ 13-14."
सारणी स-3.11 से स्पष्ट है कि राजनांदगंगा नगर में 25.56 कर्घीं किमी जन्म का 48 प्रतिशत भाग आवासीय क्षेत्रों में उपयोग किया जा रहा है जबकि ढोंगड़ में 68 प्रतिशत, कयराम में 76 प्रतिशत, खेराब में 74 प्रतिशत, चूहखान में 76 प्रतिशत, गण्डरा में 80 प्रतिशत, ढोंगड़ में 79 प्रतिशत एवं अन्य शहरों में 82 प्रतिशत क्षेत्र आवासीय क्षेत्र में उपयोग किया जा रहा है। इसलिए स्पष्ट है कि नगर के विकास के साथ-साथ आवासीय क्षेत्र का प्रतिशत वर्गीकृत कम हुआ है। जबकि सर्वाधिक एवं क्षेत्र अन्य उपयोग में लेगी भूमि का प्रतिशत बढ़ा है। राजनांदगंगा नगर में आवासीय में व्यापक रूप से वृद्धि हुई है किन्तु अन्य क्षेत्रों में भी भूमि का उपयोग कम है। आवासीय क्षेत्र के कम होने के कारण ही भूमि जोपड़ी समस्या ने जन्म दिया है। जबकि अन्य में नागाकरण बढ़ने के साथ-साथ आवासीय क्षेत्रों में वृद्धि हुई जो नगर बढ़े निरर्थ हुए हैं वहां आवासीय क्षेत्र पटा है। उदाहरण के लिये राजनांदगंगा नगर के अतिरिक्त ढोंगड़, खेराब का अपरेश्चुए विकास अधिक हुआ है। परिपात: आवासीय क्षेत्र का प्रतिशत कम हुआ है जो पतरक 68 प्रतिशत 74 प्रतिशत बढ़ गया है। वर्तमान, चूहखान, ढोंगड़ ऐसे स्थल में नागर हैं जहां व्यापारी एवं अन्य क्षेत्रों में वृद्धि के कारण आवासीय क्षेत्र कम तो हुआ है किन्तु कोई उल्लेखनीय स्थिति देखने को नहीं मिली। नवरंगी नगर गण्डरा, अन्य शहर जैसे क्षेत्र हैं जहां ग्रामीण प्रभाव अधिक है। किन्तु जनसंख्या वृद्धि के कारण ऐसे नगरों को नगर ते प्रोत्साहित कर दिया गया किन्तु नगरीय विशेषताओं अपरेश्चुए कम रही है और आवासीय भूमि उपयोग अधिक रहा जो क्रमशः 80 प्रतिशत 82 प्रतिशत के आसपास है।

वाष्पिकक भूमि उपयोग की प्रवृत्तियां:

राजनांदगंगा किला मूलय रूप से ग्रामीण बहुत निकट है। यहाँ का सुलभ आधार कृषि एवं वाष्पिक है। यहाँ शहरों का विकास मुख्यतः वाष्पिक व्यापार पर आधारित है। राजनांदगंगा, खेराब, ढोंगड़ मध्यम व्यापारी नगर हैं और नगरों पर यहाँ की सूचना आवश्यकताओं की पृष्ठीय निर्देश करती है। लन्दन द्वारा पूर्व यहाँ खाद्य प्रदर्शन में अदला-बदली पृष्ठा मूलतः प्रचलित थी।

1- गोयेटयर ऑफ इंडिया मोंटेल निक्टर कॉलिंस वर्ष 1972, पृष्ठ 229.
पिलाई स्टील जल्द की स्थापना और वाहनों में बुद्धि के कारण यहाँ व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ी और नियमित रूप से वर्षों में 50 प्रतिशत से 100 प्रतिशत बुद्धि देखने को मिला।

राजनांदगंगा जिले में राजनांदगंगा नगर मुख्य परिवहन रेल एवं सड़क से जुड़े होने के कारण इसका व्यावसायिक विकास अधिक हुआ और शेष अन्य नगर राजनांदगंगा नगर पर आक्षित होते चले गये। क्षेत्री, चुपंड़ा, अन्यागढ़ चौकी, कोंगरागढ़, गण्डे, खैरगढ़, ओंगरगढ़ ऐसे क्षेत्र हैं जिनका व्यापार-व्यवसाय मुख्य राजनांदगंगा नगर पर आक्षित है। खैरगढ़ एवं ओंगरगढ़ पुराने रजनांदगंगा होने के कारण यहाँ व्यापारिक गतिविधियाँ प्ररूप से ही विकसित रही। शेष क्षेत्रों में 1951 के बाद वैसे-वैसे नागरिकता बढ़ा गया व्यापारिक और नागर लेख-देन में बुद्धि हुई।

### सारणी 3.12

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र</th>
<th>नगरीय क्षेत्र</th>
<th>व्यवसायिक भूमि उपयोग का प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>राजनांदगंगा</td>
<td>6.5</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>ओंगरगढ़</td>
<td>4.2</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>क्षेत्री</td>
<td>4.5</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>खैरगढ़</td>
<td>3.0</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>चुपंड़ा</td>
<td>2.7</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>गण्डे</td>
<td>2.0</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>ओंगरगढ़</td>
<td>3.0</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>अन्यागढ़ चौकी</td>
<td>1.5</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्पष्ट - नगर पालिका निम्न/नगर पालिकाओं के प्रतिबंधन पर आधारित।

1- गनेशपर ऑफ इंडिया मार्च 1972, पृष्ठ 230.
2- - यही - , पृष्ठ 229 से 230.
सारणी क्रमांक स-3.12 से स्पष्ट है कि राजनांदगांव नगर प्रमुख व्यापारी केन्द्र होने के कारण यहाँ वाणिज्यिक भूमि का प्रतिष्ठान स्वागतिक 6.5 प्रतिशत है। जबकि दोहरांग और खैरांग पुरूर्वी रिसावत होने के कारण अपेक्षाकृत व्यवसायी भूमि का प्रतिष्ठान क्रमशः 4.2 प्रतिशत और 3.0 प्रतिशत है जबकि कवर्गों गुडवाल आदिवासी क्षेत्र होने के कारण यहाँ के आवास के क्षेत्र मुख्यतः कृषि पर आधारित है और राजनांदगांव-जलंदर सड़क मार्ग का प्रमुख यात्रा होने के कारण यहाँ व्यवसायिक गतिविधियाँ 1971 के बदले तेजी से बढ़ी है और भाजपा सरकार द्वारा प्रदेश के 16 नवनिर्मित होने वाले जिलों में से कभी को भी नवनिर्मित जिला मनाने की घोषणा के बदले यहाँ व्यापारिक गतिविधियाँ तेजी से बढ़ी। नये अवसरों एवं व्यापारी परिवर्तन भड़ी। परिणाम: व्यवसायिक उपयोग की दृष्टि से इसका स्थान दूसरे क्रम पर हो गया क्योंकि शून्यांकन, गणना, गोतरण, अन्य चीजें जैसे मुख्यतः ग्रामिण रूप से कम है। यहाँ व्यवसायिक गतिविधियाँ की हरमन निर्मित हुई हैं किन्तु ये ऐसे नगर हैं जो मुख्यतः पिछड़ी हुई अस्थायी हैं। इसका सम्पूर्ण व्यवसायिक क्रियाकलाप राजनांदगांव नगर पर आभित है। इस क्षेत्र में व्यवसायिक भूमि उपयोग में लगभग स्वर्ण शीतल की प्रभुति निविदान रही है जो परिवर्तन हुए हैं वे उल्लेखनीय नहीं हैं।

औद्योगिक भूमि उपयोग की प्रभुति :-

राजनांदगांव जिला औद्योगिक रूप से उत्तराखंड का सबसे पिछड़ा जिला है। औद्योगिक इकाई के रूप में एक मात्र बीजेएनसी० मिल जिलकी स्थापना 1896 में की गयी थी, आज औद्योगिक रूप में हो जाती है। ताकि औद्योगिक विकास की अध्याय संरचना के बिना हो जिले में औद्योगिक विकास हम सा गया है। इसका क्रियाकलाप एक और दुर्ग जिले का बड़ा औद्योगिक करण और दूसरी और महाराष्ट्र के भौतिक जिले के व्यापार औद्योगिक करण है। राजनांदगांव जिले की भौगोलिक स्थिति कुछ इस प्रकार निर्मित है कि इस जिले का मम संसाधन पताका कर पदार्थ के जिलों में रोजगार प्राप्त कर रहा है। यह जिला सीमावर्ती जिलों दुरार, रामपुर दूसरी और महाराष्ट्र के गोपाल, भण्डार, नागपुर के तंत्र औद्योगिक विकास के चलते यह जिला "विकास छापा" के रूप में अविचारित रहा गया। औद्योगिक प्रक्रिया के स्थान

1- भोजवानी, मुरली - राजनांदगांव जिला (विकास की दौड़ में पिछड़ा चला गया), नवभारत रामपुर, 30 सितंबर 1995, पृष्ठ 4.
राजनांदगंगा जिले की प्रत्येक तहसील में ऐसी कंट्रो और अनुपयोगी भूमि उपलब्ध है जहाँ पर आवश्यकतानुसार उद्योगों के लिए ओरियोडिक क्षेत्र विकसित कर अन्य शीट बनाकर नये उद्योगों को आयोजित किया जा सकता है। मौजम जिले में 6 ओरियोडिक क्षेत्र विकसित किए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं:

### सारणी क्रमांक स-3.13

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.</th>
<th>ओरियोडिक संस्थान/ क्षेत्र का नाम</th>
<th>कुल भूमि एकड में</th>
<th>इकाइयों की संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>राजनांदगंगा</td>
<td>19.20</td>
<td>46</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>मोहरा</td>
<td>6.00</td>
<td>04</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>गढ़ला</td>
<td>4.00</td>
<td>01</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>सोमनी</td>
<td>10.00</td>
<td>05</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>पेप्पड़ी</td>
<td>87.18</td>
<td>निरंक</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>अछोटी</td>
<td>80.19</td>
<td>निरंक</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थान - जिला उद्योग केन्द्र, राजनांदगंगा (5090)

1- भोजपुरी, गुर्जर - राजनांदगंगा जिला (विन्यास की बौद्ध में पिछला चल गया),
नवम्बर यहाँ, 30 सितंबर 1995, पृष्ठ 4.
2- - वही -
राजनांदगांव निलें में ऋषिकेशीय क्षेत्र के अतिरिक्त कई ऐसे क्षेत्र हैं जिसे ऋषिकेशीय क्षेत्र के रूप में प्रस्तावित किया गया है, जो नियमित नहीं है।

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>प्रस्तावित ऋषिकेशीय क्षेत्र का नाम</th>
<th>ऋषिकेशीय क्षेत्र के रूप में (केजी)</th>
<th>ऋषिकेशीय क्षेत्र के रूप में (केजी)</th>
<th>कुल भूमि (केजी)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>पूलसर मलवलदा</td>
<td>20.83</td>
<td>500.00</td>
<td>520.83</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>चौथी महलम खुई</td>
<td>60.288</td>
<td>116.417</td>
<td>176.705</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>बनरंपुर नवगंगा कोरेनमाता एकड़</td>
<td>28.81</td>
<td>140.56</td>
<td>169.37</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>देलकांडीह</td>
<td>61.84</td>
<td>34.39</td>
<td>96.23</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>अछोली</td>
<td>80.19</td>
<td></td>
<td>80.19</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्वीकार - निला उद्योग केंद्र, राजनांदगांव (M090)

1 - निला उद्योग केंद्र, राजनांदगांव के प्रतिवेदन पर आधारित।
2 - नहीं
सारणी क्रमांक स-3.14 से स्पष्ट है कि राजनांदगांव जिले में आधुनिक क्षेत्र में बढ़ते होने की समस्या है क्योंकि उक्त क्षेत्र को प्रस्तावित आधुनिक क्षेत्र पोषित किया गया है। जिसके चलते सन्दर्भ में 520.83 एकड़ भूमि आधुनिक क्षेत्र के लिए धूपर के मात्र की फ्रेमःकार शहर की प्राथमिकता में इस केन्द्र को काफी गीते रखा गया। जिसके रूप में इसके अन्वेषक के केन्द्र हेतु भूमि का अभिव्यक्त है न ही विवाहारी धर्म हेतु कोई राष्ट्रीय अभिव्यक्ति की गयी।

1- बजरांगपुर नववंश, भूमि भंडार व पेषा बिकास के लिए भूमि का प्राथमिक क्षेत्र जो राजनांदगांव जिले राष्ट्रीय प्रभावी विस्तार के अनुसार है उसमें बिजली व शासकीय भूमि को मिलकर कुल भूमि वर्ग 69.37 एकड़ है किन्तु यह स्थल राजनांदगांव शहर के बस्टर प्लान में आधुनिक प्रयोजन हेतु सज्जाए नहीं गयी रहने के कारण आर्थिक आधुनिक क्षेत्र की लाभता हेतु सम्पत्ति नहीं हो चाही। इसी प्रकार यह जन अकोलों में 80.19 एकड़ की भूमि का सम्पत्ति एवं मृदुला के स्थान में स्थापित करने के लिए बृहत्ता सार्वजनिक लिगिन्टेड नई विस्तार को अभिव्यक्त करने हेतु विवाहारी द्वारा दिनांक 20-6-89 एवं 23-6-89 के दो विवाहारी चरणों में आपूर्ति में लंबे गयी थी। परन्तु इसकी विस्तार कार्यक्रम में परीक्षण नहीं किया। अतः यह स्पष्ट है कि राजनांदगांव जिले में तीन आधुनिक बिकास की समस्या है।

इसके अन्वेषक राजनांदगांव जिले के विवाहारी नववंश में आधुनिक क्षेत्र के उपयोग में लाके गयी भूमि के प्रतिवेश को सारणी क्रमांक स-3.15 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक स-3.15 से स्पष्ट है कि राजनांदगांव नगर जिले का प्रमुख नगर है। यहाँ आधुनिक वृद्धि विकास अधिक होने के कारण भूमि उपयोग का प्रतिवेश भी अधिक है राजनांदगांव में यह प्रतिवेश 5.8 है। सारणी से स्पष्ट होता है कि आधुनिक विकास और आधुनिकीकरण में सीमाओं समाप्त स्थान नहीं है। यही कारण है कि जहाँ एक और समस्ती अधिक विकास कार्यक्रम नगर राजनांदगांव नगर है वहीं सबसे थोड़ी पिछड़ा नगर अभिक्रिया नही। अतः आधुनिक क्षेत्र का प्रतिवेश स्थानीय 5.8 प्रतिवेश राजनांदगांव नगर में एवं सबसे कम

1- फिला उपयोग केन्द्र, राजनांदगांव के प्रतिवेश पर अभिव्यक्ति।
2- यही
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.</th>
<th>नगरीय क्षेत्र</th>
<th>अध्योपनिषत भूमि उपयोग प्रतिशत में</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>राजनांदगांव</td>
<td>5.8</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>बोमराड़</td>
<td>2.3</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>कवची</td>
<td>1.8</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>खेंगड़</td>
<td>1.3</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>छुईवदन</td>
<td>1.1</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>गणडई</td>
<td>1.0</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>बोमराड़गांव</td>
<td>1.8</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>अम्रागढ़ चौकी</td>
<td>0.9</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्त्रोत - नगर पालिका नियम/नगर पालिकाओं के प्रतिलेखन पर आधारित।

अम्रागढ़ चौकी में 0.9 प्रतिशत अध्योपनिषत भूमि क्षेत्र है। जबकि बोमराड़ में 2.3 प्रतिशत, कवची में 1.8 प्रतिशत, खेंगड़ में 1.3 प्रतिशत, छुईवदन में 1.1 प्रतिशत, गणडई में 1.0 प्रतिशत एवं बोमराड़गांव में 1.8 प्रतिशत अध्योपनिषत भूमि क्षेत्र है। जो स्पष्ट करता है कि राजनांदगांव के बाद बोमराड़, कवची, बोमराड़गांव एवं खेंगड़ अपेक्षाकृत क्रमांकुर स्थिति औषधीय क्रम में हैं। यही कारण है कि यहां अध्योपनिषत भूमि उपयोग का प्रतिरूप भी अपरोही क्रम में विविध माना है। नवोदित नगर गणडई व अम्रागढ़ चौकी में अध्योपनिषत क्षेत्र नागण्य सा है।

सार्वजनिक व अर्थशास्त्रीय भूमि उपयोग :-

सार्वजनिक एवं अर्थशास्त्रीय भूमि उपयोग के अन्तर्गत शासकीय व अर्थशास्त्रीय भवन जैसे स्वाम्य, विद्यूत, जल आपूर्ति नाली, मल प्रवाह, शैक्षणिक सुविधाएं, सार्वजनिक व सांस्कृतिक भवन आदि सम्बन्धित होते हैं। राजनांदगांव जिला प्रशासन से ही स्वाम्यक, सार्वजनिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में अग्रणी रहा है। अतः यहां ऐसे भवनों की संख्या अधिक है।
बर्ष 1973 में नव. जिले के निर्माण के परिचालन या ना सार्वजनिक भवन, कार्यालयों के निर्माण की प्रक्रिया तीन हैं और वरिष्ठ में जिले के प्रायः सभी नगरों में इस क्षेत्र में भूमि उपयोग का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक है, जो निम्न सार्वजनिक में दर्शाया गया है।

सार्वजनिक क्रमांक स-3.16
राजनांदगंज जिले के नगरीय क्षेत्र में
सार्वजनिक एवं अर्थशास्त्रीय भूमि उपयोग का प्रतिशत

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र0</th>
<th>नागरिक क्षेत्र</th>
<th>सार्वजनिक एवं अर्थशास्त्रीय भूमि उपयोग प्रतिशत %</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>राजनांदगंज</td>
<td>8.8</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>डोमराग</td>
<td>5.0</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>कव्यां</td>
<td>4.5</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>खेऱगंज</td>
<td>7.0</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>चुहेलायाम</td>
<td>6.5</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>गाटैड</td>
<td>6.0</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>डोमरागंज</td>
<td>5.0</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>अम्बांगढचौकी</td>
<td>7.0</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत — नगर पालिका निवास/नगर पालिकाओं के प्रतिवेदन पर आधारित।

सार्वजनिक क्रमांक स-3.16 से रूपन्त है कि राजनांदगंज नगर जिले मुख्य सुविधाओं के कारण यहाँ सार्वजनिक एवं अर्थशास्त्रीय क्षेत्र में भूमि उपयोग का प्रतिशत 8.8 सांविधायिक है। यद्यपि दूसरे स्थान खेऱगंज एवं अम्बांगढचौकी का स्थान अक्षर है, प्रशासन से ही खेऱगंज एवं अम्बांगढचौकी राजवाड़ा क्षेत्र रहे हैं। प्रदेश का एकमात्र ही विदेशी संगीत विद्वान खेऱगंज में ही स्थित है याथार्थ अनेक प्रासादिनी व शैक्षिक कार्यालयों की स्थापना अपेक्षाकृत अन्य नगरों से अधिक हुआ है। वाहिनी अम्बांगढचौकी आदिवासी क्षेत्र होने के कारण आदिवासी उपयोग के अन्तर्गत यहाँ में सार्वजनिक भवनों, शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना की गयी। यही कारण है कि राजनांदगंज नगर के बज़ इन नगरों में सार्वजनिक एवं अर्थशास्त्रीय भूमि
उपयोग की दर अपेक्षाकृत अधिक 7.0 प्रतिशत रही। इसके अतिरिक्त अन्य नगर में जैसे- छुड़खान, गण्डे, झंगरांग मध्यम रेखाएं के नागर रेखा जहां इस क्षेत्र में क्रमशः 6.5, 6.0 एवं 5.0 प्रतिशत भूमि का उपयोग किया गया। सार्वजनिक क्षेत्र में सबसे कम भूमि का उपयोग किया गया। इसका मुख्य कारण क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्र का अन्तर रहा है। सन् 1992 में गिजला बनने की घोषणा के कारण सार्वजनिक एवं अन्दरसाइटी निर्माण की प्रवृत्ति बढ़ी। क्षेत्रों में इस क्षेत्र में भूमि उपयोग का प्रतिशत 4.5 है जिसके भीतर में बढ़ने की सभी निर्देश।

मनोरंजन एवं सांस्कृतिक उपयोग में भूमि उपयोग:

राजनांदगांव हिरास मनोरंजन एवं सांस्कृतिक संस्थानों जैसे- रायन गार्ड, विश्वविद्यालय स्टैडियम, विभिन्न विशाल संस्थानों के खेत में खेती, उद्यान, कर्मनीय महिला गण्डे, सारस्वती कला मिलन, निजी पुलिसकार, खेलघर के उद्यान व हिस्टरी गुड़ आदि के रूप में गिजले में बड़ी मात्रा में भूमि का उपयोग किया गया है। इस उपयोग में राजनांदगांव गिजले में विभिन्न नगरों के विकास की प्रवृत्ति के आधार एवं मनोरंजन के उपयोग भूमि के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया है। विद्या शहर का विकास जितना अधिक हुआ है वहाँ पर मनोरंजन व उससे सम्बन्धित कार्यों के लिए भूमि का उपयोग उल्लंघन ही अधिक हुआ है। राजनांदगांव गिजले में मनोरंजन तथा उससे सम्बन्धित कार्यों हेतु भूमि उपयोग स्थापन के निम्न स्तरों में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक स-3.17

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र00</th>
<th>ग्रामीण क्षेत्र</th>
<th>मनोरंजन/सांस्कृतिक भूमि उपयोग प्रतिशत में</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>राजनांदगांव</td>
<td>2.3</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>धोंगरांग</td>
<td>1.5</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>क्षेत्रध</td>
<td>1.7</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>छेंड़खान</td>
<td>1.3</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>धुंडक्कूल</td>
<td>1.0</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>गण्डे</td>
<td>0.9</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>झंगरांग</td>
<td>1.0</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>अम्रायांड चौकी</td>
<td>0.5</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्थल: नगर पालिका निगम/नगर पालिकाओं के प्रतिवेदनों पर अध्यापन।
सर्वप्रथम क्रमांक स-3.17 से स्पष्ट है कि लोगोंके भूमि का उपयोग राजनांदगां नगर में मनोरंजन के लिये किया गया है जो कुल भूमि का 2.3 प्रतिशत है। इसी सबसे कम भूमि का उपयोग अन्य शहर की चौकी में किया गया जहां कुल भूमि का 0.5 प्रतिशत उपयोग इस कार्य में किया गया है। धोमरागुँ, कवशी, धोमरागुँ, छुंखियान, गणघर में इस कार्य के लिये न्यूनतम 1.5, 1.7, 1.3, 1.0, 0.9 तथा धोमरागुँ में 1.0 प्रतिशत भूमि का उपयोग किया गया है। नवोदित नगर गणघर, अन्य चौकी में इस कार्य में भूमि उपयोग का प्रतिशत सबसे न्यूनतम है जो क्रमशः 0.9 एवं 0.5 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि विकास के साथ-साथ मनोरंजन गतिविधियों की बढ़त होती है तथा ऐसी कार्य के लिये भूमि उपयोग का प्रतिशत बढ़ता है।

परिवहन एवं संचार क्षेत्र में भूमि उपयोग :–

किसी भी नगर के आवश्यक एवं सामाजिक विकास में यातायात एवं परिवहन का महत्त्व होता है। यातायात व्यवस्था प्रवास एवं माल की सुरक्षित एवं गतिशीलता प्रदान करता है। इसी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सड़कों एवं मार्गों को उचित चौड़े रखी जाती है ताकि विभिन्न तरह के मट के रूप में तथा गति के वाहनों को सुबंधित एवं सुरक्षित तरीके से समाहित कर सके। वाणिज्यिक दृष्टिकोण से यातायात एवं परिवहन का नियोजन करने की समस्या का अखंडता करने के लिये क्षेत्रीय परिवहन व्यवस्था, प्रभावित नगरीय परिसर में संचरण, वाणिज्य रोड व्यवस्था, बस क्षेत्र, यातायात पहुँच भर्ता इत्यादि की आवश्यकता होती है ताकि जल्द एवं संयम समय के लिये भाग देने का काम कर सके। ऐसे विषयों के अध्ययन से हेतु उचित यातायात संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है।

राजनांदगां निर्माण महत्त्वपूर्ण नगरों में यातायात के माध्यम से जुड़ा हुआ है। जहां एक ओर राजनांदगां नगर के मध्य से 310 रोड राष्ट्रीय मार्ग क्रमांक-6 गुमरी है वहां जिले का मुख्य शहरी क्षेत्र बालो, बालवली, चौकी, छुंखियान, कवशी, धोमरा, गुमरी, जिले में अन्य मार्गों से जुड़ा है। साथ ही जिले का राजनांदगां एवं धोमरा नगर महानगरीय विपणन-पूर्वों रेलवे लाइन पर रिसेप्ट है जिससे राजस्थान चम्पा-कलकत्ता से समय में स्थापित होता है।

1- राजनांदगां विकास पोलिस प्रकाश 2001, नगर विकास नियोजन मोड 1973, पृष्ठ 53.
वज्रके अम्बागढ़ चौकी, ढोंगरगढ़, छुँखवान, खेरगढ़, कवचो एवं गण्डें सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है। इसके अतिरिक्त स्थानीय आवश्यकता हेतु गली, कच्ची रेड की बड़ी मात्रा में निर्माण किया गया है। इसके माध्यम से बड़ी मात्रा में यातायात भूमि का उपयोग किया गया है, जिसे निन्ना सारणी में दिखाया गया है।

सारणी क्रमांक स-3.18

नगरीय क्षेत्र में उपरिवहन एवं संचार भूमि उपयोग का प्रतिशत

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>नगरीय क्षेत्र</th>
<th>परिवहन व संचार भूमि उपयोग प्रतिशत में</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>राजनादरगढ़ (रेलवे सहित)</td>
<td>28.6</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>ढोंगरगढ़ (रेलवे सहित)</td>
<td>19.0</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>कवचो</td>
<td>11.5</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>खेरगढ़</td>
<td>13.4</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>छुँखवान</td>
<td>12.7</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>गण्डें</td>
<td>10.1</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>ढोंगरगढ़</td>
<td>10.2</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>अम्बागढ़ चौकी</td>
<td>8.1</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्त्रोत - नगर पालिका निगम/नगर पालिकाओं के प्रतिवेदनों पर आधारित।

सारणी क्रमांक स-3.18 से स्पष्ट है कि जिन नगरों का व्यवसायिक व औद्योगिक विकास अधिक है उन नगरों में परिवहन एवं संचार भूमि का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक है। राजनादरगढ़ नगर जिसे के सभी नगरों से अपेक्षाकृत अधिक विकसित है। अत: यहां परिवहन के क्षेत्र में भूमि उपयोग का प्रतिशत 28.6 समान्यक है। यहीं अम्बागढ़ चौकी, गण्डें ऐसे क्षेत्र हैं जिनका व्यवसायिक विकास समस्त कम है। अत: यहां परिवहन के क्षेत्र में भूमि का उपयोग क्रमशः 8.5 एवं 10.1 है जबके ढोंगरगढ़ 19.0 (रेलवे सहित), कवचो 11.5, खेरगढ़ 13.4, छुँखवान 12.7 एवं ढोंगरगढ़ में 10.2 प्रतिशत है।
रुजनांदगंगा जिले के नगरों में भूमि उपयोग का तुलनात्मक विश्लेषण :-

जिला रुजनांदगंगा के विभिन्न नगरीय क्षेत्रों में भूमि उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि विकास के साब-साब आवश्यक कार्यों के लिये भूमि उपयोग का प्रतिष्ठान पद्धत जाता है। परंतु साब-साब, सुविधा श्रेणी के निर्माण अधिक होता है। जिन क्षेत्रों का नगरीय विकास कम होता है वहां आवश्यक भूमि का उपयोग अधिक होता है। जबकि विकास के साब-साब ऑयोगिक, वाणिज्यिक, सार्वजनिक एवं अन्यसार्वजनिक, मनोरंजन एवं परीक्षण, यातायात और संचार में भूमि उपयोग का प्रतिष्ठान अपेक्षाकृत बढ़ा जाता है, जिसे इस नाम सारणी में स्पष्ट किया गया है।

शाखावत क्रमांक स-3.19

बिले के विभिन्न नगरीय क्षेत्रों में भूमि उपयोग का प्रतिष्ठान

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.</th>
<th>भूमि उपयोग</th>
<th>विभिन्न नगरीय क्षेत्रों में भूमि उपयोग का प्रतिष्ठान</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>कोंक.</td>
<td>छोग- गाँव</td>
<td>रान- नांदगंगा</td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>आवश्यक</td>
<td>48.0</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>वाणिज्यिक</td>
<td>6.5</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>ऑयोगिक</td>
<td>5.8</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>सार्वजनिक एवं अन्यसार्वजनिक</td>
<td>8.8</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>मनोरंजन</td>
<td>2.3</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>परीक्षण</td>
<td>28.6</td>
</tr>
<tr>
<td>योग :-</td>
<td>100</td>
<td>100</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्तर - नगर पालिका निगम/नगर पालिकाओं के प्रतिवेदनों पर अधिक।
शारणी क्रमांक स-3.19 से स्पष्ट है कि रजनांदगांव व भंगरगढ़ में जहां विकास की प्रक्रिया तेज है उसको अपेक्षाकृत आवासीय उपयोग का प्रतिस्थापन 48 प्रतिशत एवं 68 प्रतिशत पर आ गया है, जबकि अन्य उपयोगों में जैसे वाणिज्यिक, आयोगिक, सर्वेक्षणिक एवं अम्बाबूर्जनिक, मनोरंजन तथा परिसर्वन के क्षेत्र में भूमि उपयोग का प्रतिस्थापन बढ़ा है।

लेकिन स्थायी विकास वाले नगर जैसे- हरिगढ़, कन्यापूर, हुड़बाड़ी इत्यादि के क्षेत्र है जहां आवासीय उपयोग का प्रतिस्थापन बढ़ा है किन्तु अधिक उल्लेखनीय नहीं है। जबकि शेष क्षेत्र निर्दिष्ट नगर गणनां, शंगरांव व अन्यराज घाटकी इत्यादि के क्षेत्र है जहां ग्रामीण प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक रहता है।

यहां कारण है कि यहां आवासीय उपयोग का प्रतिस्थापन लगभग $\frac{4}{5}$ है जो अन्य उपयोगों में भूमि उपयोग का $\frac{1}{5}$ प्रतिशत भाग। उपयोग में बढ़ा जा रहा है, जो यहाँ के आर्थिक विकास के इंडिकेटर को सुधारित करता है।

अतः स्पष्ट है कि विकास की प्रक्रिया के स्थायी-सामयिक अन्य क्षेत्रों जैसे- वाणिज्यिक, आयोगिक, सर्वेक्षणिक व अम्बाबूर्जनिक, मनोरंजन तथा परिसर्वन आदि क्षेत्रों में भूमि उपयोग का प्रतिस्थापन प्रभावित नहीं है। अर्थात् आर्थिक विकास द्वारा आवासीय क्षेत्र में भूमि उपयोग का प्रतिस्थापन का अथात्तक सहस्रमात्र होता है। वहीं अन्य क्षेत्र में भूमि उपयोग का विकास के स्थायी सामाजिक सहस्रमात्र देखा को मिलता है। आवासीय भूमि उपयोग एवं आर्थिक विकास के मध्य अथात्तक सहस्रमात्र अनेक नयी आर्थिक समस्याओं को जन्म देता है। जैसे- गर्मी मध्य, धूल, जोड़ी जोड़ी की समस्या।

रजनांदगांव नगर में यह तथ्य स्पष्ट है जो देखा को जन्म देता है। भौगोलिक सहस्रमात्र अंश पर यह पता चलता है कि करीब 20 प्रतिशत सकार निम्न स्तर के है जिनमें 50 प्रतिशत सकार गन्तव्य बांटने में रिस्लेट है तथा 80 प्रतिशत धूलियों जोड़ी है जो सामाजिक क्षेत्र के लिए नहीं है।

जिसकी वजह से अनेक समाज एवं प्रशासनिक कठिनाइयों उत्पन्न हो जाती है। अतः आर्थिक विकास के स्थायी सामयिक नगर निवेश का निर्माण आज के पुरा की अवस्था है बन गया है।